वर्ष : 34, अंक : 133, जनवरी–मार्च, 2012

राजभाषा भारती

राजभाषा विभाग,
गृह मंत्रालय, भारत सरकार,
नई दिल्ली

हिंदी लिखें, हिंदी पढ़ें, आम आदमी से जुड़ें

राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय स्वाभिमान, हिंदी का करें सम्मान

दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों का क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह एवं विचार मंथन का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथिगण ।

दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों का क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह एवं विचार मंथन में अध्यक्षीय भाषण देते हुए श्री ए. एन. पी. सिन्हा, सचिव, भारत सरकार ।

राजभाषा भारती

राजभाषा विभाग की त्रैमासिकी

वर्ष : 34

अंक : 133

जनवरी—मार्च, 2012

❑ संरक्षक :
शरद गुप्ता, भा.प्र.से.
सचिव, राजभाषा विभाग

❑ परामर्शदाता :
डी.के. पाण्डेय
संयुक्त सचिव (रा.भा.-I)

आर.के. कालिया
संयुक्त सचिव (रा.भा.-II)

❑ संपादक :
डॉ. जय प्रकाश कर्दम
निदेशक (अनुसंधान)
दूरभाष : 011-24643622

❑ सहायक संपादक :
शांति कुमार स्याल
दूरभाष : 011-24698054

❑ निःशुल्क वितरण के लिए :

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं । सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

❑ अपना लेख एवं सुझाव भेजें :
संपादक, राजभाषा भारती,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
लोकनायक भवन (द्वितीय तल),
खान मार्किट, नई दिल्ली-110003
ईमेल—patrika--ol@.nic.in
पोर्टल—www.rajbhasha.gov.in.

विषय-सूची

			पृष्ठ
❑	संपादकीय		(iii)
❑	चिंतन		
1.	राजभाषा का विकास	–डॉ. बैजनाथ प्रसाद	1
2.	राजभाषा और भारतीयता	–प्रो. जौहरा अफज़ल	4
3.	प्रयोजनमूलक हिंदी : मीडिया और विज्ञापन	–ईश्वर चंद्र मिश्र	6
4.	भारत का वर्तमान सामाजिकार्थिक परिदृश्य और हिंदी	–अजयेंद्रनाथ त्रिवेदी	10
5.	भूमण्डलीकरण के दौर में हिंदी के बढ़ते कदम	–कृष्ण कुमार यादव	13
6.	शब्द विकास की प्रक्रिया	–टेक चंद	18
❑	साहित्यिकी		
7.	हिंदी के अनन्य सेवक, फादर कामिल बुल्के	–डॉ. परमानंद पांचाल	21
8.	हिंदी एवं तमिल भाषा की समानता एवं असमानता	–डॉ. बी. एन. पाण्डेय	24
❑	पुरानी यादें—नए परिप्रेक्ष्य में		
9.	असम के तुलसी : शंकरदेव	–चितरंजन लाल 'भारती'	28
❑	संस्कृति		
10.	भारतीय संस्कृति एवं कला को बौद्ध धर्म की देन	–डॉ. माया दुबे	30
❑	पर्यावरण		
11.	भविष्य के लिए जल की बचत	–राज बहादुर गुप्ता	33
❑	राजभाषा संबंधी गतिविधियां :		
(क)	विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें		35

'ग' क्षेत्र: पूर्व रेलवे, कोलकाता;

'ख' क्षेत्र : आयकर आयुक्त, लुधियाना;

'क' क्षेत्र : केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क, भोपाल; पूर्व मध्य रेल, हाजीपुर; मुख्य आयकर आयुक्त, पंचकुला; नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन, नई दिल्ली;

381 HA/12—1A

विषय-सूची	पृष्ठ

(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें 37

'ग' क्षेत्र : कोलकाता (बैंक);

'ख' क्षेत्र : दाहोद, मुंबई;

'क' क्षेत्र : छत्तरपुर, बुलंदशहर; शिवपुरी; कानपुर;

(ग) कार्यशालाएं 41

'ग' क्षेत्र : भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन; सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान;

'ख' क्षेत्र : आकाशवाणी, अहमदाबाद; भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नाशिक रोड;

'क' क्षेत्र : भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण, नई दिल्ली; आकाशवाणी, इन्दौर; केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रांची; पोस्टमास्टर जनरल, इन्दौर; केंद्रीय रेशम बोर्ड, भंडारा; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, मुख्यालय; नई दिल्ली; राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान, नई दिल्ली;

(घ) हिंदी दिवस 45

'ग' क्षेत्र : प्रधान महालेखाकार, गुवाहाटी; पूर्वी आधार कर्मशाला (ग्रेफ); खादी और ग्रामोद्योग आयुक्त, हैदराबाद; दक्षिण मध्य रेलवे, सिंकदराबाद; उप रेशमकीट प्रजनन केंद्र, कुन्नूर; वैमानिक गणता आश्वासन महानिदेशालय, हैदराबाद; भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन; अंतरिक्ष विभाग, बैंगलूर; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, हैदराबाद; कर्मचारी चयन आयोग, गुवाहाटी; ज्वार अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद; केंद्रीय विद्यालय, तेजपुर; भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, चैन्नई; एन एच पी सी लिमिटेड, कोलकाता; आकाशवाणी, हैदराबाद; आकाशवाणी और दूरदर्शन केंद्र, कोलकाता; आकाशवाणी आलप्पुषा केंद्र; आकाशवाणी, अगरतला; आकाशवाणी, अनंतपुर; आकाशवाणी, कड़पा; दूरदर्शन केंद्र, ईटानगर; आकाशवाणी, चैन्नई; दूरर्दशन केंद्र, कोलकाता; आकाशवाणी, गान्तोक;

'ख' क्षेत्र : मंडल रेल प्रबंधक, पुणे; एस टी क्यू सी निदेशालय, मोहाली; भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण, गोवा; भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नाशिक रोड; ग्रेफ केंद्र, पुणे; गोला बारूद फैक्टरी, पुणे; रेलवे स्टाफ कालेज, बडोदरा; खान सुरक्षा महानिदेशालय,अहमदाबाद; पश्चिम रेलवे, राजकोट; केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधानशाला, पुणे; राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, एस. ए. नगर; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नागपुर; राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान, अहमदाबाद; राष्ट्रीय विषाणु विज्ञान संस्थान, पुणे; राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान, नागपुर; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चण्डीगढ़; जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट, नवीं मुंबई; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, गोवा; दूरदर्शन, नागपुर; आकाशवाणी नागपुर; आकाशवाणी, भुज; आकाशवाणी एवं दूरदर्शन, मुंबई; आकाशवाणी, अहमदाबाद;

'क' क्षेत्र : क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, रांची; आकाशवाणी, रांची; भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, रांची; केंद्रीय रेशम बोर्ड, नई दिल्ली; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नई दिल्ली; दूरदर्शन केंद्र, देहरादून; मुख्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नई दिल्ली; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नई दिल्ली; दूरदर्शन केंद्र, देहरादून; मुख्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नई दिल्ली; दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कं. लि., क्षेत्रीय कार्यालय-1, नई दिल्ली; केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रांची; नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण, इन्दौर; लोक कार्यक्रम और ग्रामीण प्रौद्योगिकी विकास परिषद, नई दिल्ली; नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन, नई दिल्ली; कोयला खान भविष्य निधि,छिन्दवाड़ा; सीमा सुरक्षा बल, महानिदेशालय, नई दिल्ली; खान सुरक्षा महानिदेशालय, ग्वालियर; नवीन और नवीनीकरण ऊर्जा मंत्रालय, नई दिल्ली; सूचना और प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली; भारत-तिब्बत सीमा पुलिस बल महानिदेशालय, नई दिल्ली; औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग, नई दिल्ली; वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग, नई दिल्ली; कोयला खान भविष्य निधि, कार्यालय, रांची; मुख्य पोस्ट मास्टर जनरल, अम्बाला; क्षेत्रीय खान नियंत्रक, रांची; पोस्टमास्टर जनरल, इन्दौर; कर्मचारी चयन आयोग, नई दिल्ली; आकाशवाणी, इन्दौर; आकाशवाणी, जबलपुर; आकाशवाणी, लखनऊ; भारतीय स्टेट बैंक, रांची;

❑ **संगोष्ठी/सम्मेलन** 70

राजभाषा विभाग द्वारा मैसूर में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन व पुरस्कार समारोह; बैंक आफ इंडिया, नई दिल्ली; पश्चिम रेलवे, राजकोट;

❑ **प्रतियोगिता/पुरस्कार** 73

पंजाब नेशनल बैंक; पश्चिम रेलवे, राजकोट; दक्षिण मध्य रेलवे;

❑ **प्रशिक्षण** 74

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली;

❑ **पाठकों के पत्र** 90

संपादकीय

राजभाषा हिंदी को लेकर कई तरह का विमर्श चलता रहा है । किंतु इस बात के प्रति सब सकारात्मक और उत्साह से भरे हैं कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में सारा कामकाज राजभाषा हिंदी में होना चाहिए । 1963 में राजभाषा अधिनियम और 1976 में राजभाषा नियमों के साथ केंद्रीय सरकारी तंत्र में ऐसी व्यवस्था का निर्माण हुआ, जो कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग की दृष्टि से अत्यंत कारगर थी । स्वतंत्रता की ताजगी के साथ स्वराज और स्वदेशी की भावना ने इसे और अधिक सकारात्मक और प्रभावी बनाया था । हिंदीतर भाषी प्रदेशों में भी राष्ट्रभाषा, हिंदुस्तानी या हिंदी प्रचार समिति या सभाओं की स्थापना ने भी इसे बल दिया था । राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन की भाषा के रूप में उभरी और समस्त देश में स्वीकृत और समाद्दत हुई हिंदी, राजभाषा के रूप में भी उसी तरह स्वीकृत और समाद्दत होगी ऐसी कामना भी थी और आशा भी । बेशक कुछ लोगों को इसमें संदेह रहा हो, किंतु जिस गति से सूचना तकनीक के साथ मिलकर हिंदी आगे बढ़ रही है उससे आशाओं के फलीभूत होने की संभावनाएं भी निरंतर बढ़ रही हैं ।

राजभाषा भारती का 133वां अंक आपके हाथों में है । अभी तक के सभी अंकों की पाठकों द्वारा, उपयोगी सामग्री के लिए सराहना की गई है । हमारी निरंतर यह कोशिश है कि पत्रिका में उपयोगी सामग्री का समावेश किया जाए ताकि सभी पाठकों को इसका अधिक से अधिक लाभ पहुंच सके । इस अंक की सामग्री भी इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर की गई है । चिंतन खंड के अंतर्गत डॉ. बैजनाथ प्रसाद, प्रो. जौहरा अफज़ल, ईश्वर चंद्र मिश्र, अजयेंद्रनाथ त्रिवेदी, कृष्ण कुमार यादव और टेकचंद के लेखों से यह अंक समृद्ध है । डॉ. बैजनाथ प्रसाद ने राजभाषा के विकास पर ऐतिहासिक दृष्टि से चर्चा की है तो प्रो. जौहरा अफज़ल द्वारा राजभाषा को भारतीयता से जोड़ते हुए राजभाषा की भारतीयता विषय पर प्रकाश डाला है । ईश्वर चंद्र ने प्रयोजनमूलक हिंदी: मीडिया और विज्ञापन शीर्षक से अपने लेख में मीडिया और विज्ञापन जगत में किस प्रकार की हिंदी का प्रयोग हो रहा है, इस पर रौशनी डाली है तथा राजभाषा के रूप में प्रयोग करते हुए भी हिंदी को विकृत होने से बचाया जाए इस ओर भी संकेत किया है । अजयेंद्रनाथ त्रिवेदी ने भारत के वर्तमान सामाजिकार्थिक परिदृश्य में हिंदी की स्थिति और उसकी संभावनाओं पर विमर्श किया है । कृष्ण कुमार यादव ने अपने लेख में भूमण्डलीकरण के दौर में हिंदी की स्थिति पर चर्चा करते हुए यह रेखांकित करने का प्रयास

किया है कि भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया जैसे-जैसे आगे बढ़ी है, उसमें हिंदी सिमटने की बजाए एक सशक्त अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में उभरी है । आज यह अवधारणा गलत सिद्ध हो रही है कि भूमण्डलीकरण में केवल अंग्रेजी टिकेगी तथा हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएं सिमट जाएंगी या अस्तित्वहीन हो जाएंगी । टेकचंद ने अपने लेख में शब्द का विकाश कैसे होता है, उसकी क्या प्रक्रिया होती है इस पर प्रकाश डाला है ।

साहित्यिकी के अंतर्गत डॉ. परमानंद पांचाल द्वारा लिखित हिंदी के अनन्य सेवक, फादर कामिल बुल्के के हिंदी के प्रति अनुराग और सेवा पर उल्लेखनीय चर्चा की है । डॉ. बी. एन. पाण्डेय ने हिंदी और तमिल भाषा का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए दोनों भाषाओं की समानता और असमानता पर चर्चा की है । इस प्रकार पुरानी यादें—नए परिप्रेक्ष्य में के अंतर्गत चितरंजन लाल 'भारती' ने असम के तुलसी कहे जाने वाले असमी भाषा के प्रसिद्ध कवि शंकरदेव को याद किया है । संस्कृति के अंतर्गत डॉ. माया दुबे ने भारतीय संस्कृति एवं कला को बौद्ध धर्म की क्या देन है इस पर महत्वपूर्ण प्रकाश डाला है । हमारी निरन्तर यह कोशिश रहती है कि राजभाषा भारती के प्रत्येक अंक में विज्ञान, तकनीकी आदि विषयों पर भी लेख अवश्य प्रकाशित किए जाएं । इस अंक में पर्यावरण के अंतर्गत राज बहादुर गुप्ता ने जल का महत्व और हमारे जीवन में जल की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए भविष्य के लिए जल की बचत कैसे की जाए इस संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी दी है ।

अन्य स्थायी स्तम्भों में भारत सरकार के अधीन विभिन्न कार्यालयों द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर किए गए विभिन्न की किए गए राजभाषा संबंधी क्रियाकलाप, कार्यक्रम, कार्यशाला, संगोष्ठी/सम्मेलन, प्रतियोगिता/पुरस्कार, प्रशिक्षण आदि के बारे में तथा विभिन्न नगरों में कार्यरत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों की रिपोर्ट/विवरण दिया गया है । आशा है पूर्व अंकों की भांति यह अंक भी पाठकों को पसंद आएगा ।

—डॉ. जयप्रकाश कर्दम

चिंतन

राजभाषा का विकास

–डॉ. बैजनाथ प्रसाद*

संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को मुंशी अय्यंगर फार्मूले के आधार पर हिंदी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में समादृत किया । संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार भारत संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी स्वीकार की गई । 26 जनवरी, 1950 से विधानपालिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका से जुड़े कामकाज को हिंदी में पूरा करना निश्चित हो गया । लेकिन आज अठावन वर्ष बीत जाने के बाद भी राजभाषा हिंदी का प्रयोग बहुतायत में अंग्रेजी के अनुवाद के लिए किया जाता है । विधानपालिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका का कामकाज अंग्रेजी में होता है और संविधान का हवाला देते हुए अंग्रेजी का हिंदी अनुवाद कर अपने दायित्व की इतिश्री मान ली जाती है । इन तीनों अंगों से जुड़े अन्यान्य कार्यालयों में भी बहुतायत में यही होता है । ''सैद्धांतिक रूप में हिंदी भले ही राजभाषा स्वीकृत हो गई, किंतु व्यावहारिक रूप में वह कार्यान्वित न हो सके इसके लिए प्रयत्न आज भी जारी है । हिंदी का विरोध ऊपर से देखने में बहुत सीधा-सादा लगता है, किंतु वस्तुत: यह एक गंभीर और उलझन से भरा प्रश्न है, जिसका निराकरण तभी संभव हो सकता है जब इसका सम्यक् विश्लेषण हो जाए ।''[1] यहां इसी प्रश्न पर विचार किया जा रहा है कि क्या कारण है कि राजभाषा हिंदी भारत संघ के तीनों अंगों के कामकाज की भाषा बनने के बदले अनुवाद की भाषा बनकर रह गई है?

राजभाषा हिंदी के संविधान प्रदत्त अधिकार से वंचित होने के निम्नलिखित कारण हैं--

1. बहुभाषिकता-संबंधी, 2. राजनीति-संबंधी, 3. तकनीकी शब्दावली-संबंधी, 4. भाषा-शिक्षण-संबंधी और शासनतंत्र-संबंधी ।

1. बहुभाषिकता-संबंधी

भारत संघ में अनेक प्रांत हैं और कई प्रांतों की अपनी प्रांतीय भाषा भी है और उन प्रांतों के लोग प्रांतीय भाषा में राजकीय कामकाज को निपटाते भी हैं । संविधान के द्वारा हिंदीतर प्रांतों को अपनी प्रांतीय भाषा में राज्य-संबंधी कामकाज को पूरा करने का अधिकार भी प्राप्त है । यदि संविधान के द्वारा ऐसी व्यवस्था नहीं की जाती और प्रांतीय भाषा के बदले हिंदी में प्रांतीय कामकाज को निपटाने का आदेश दिया गया होता तो हिंदीतर प्रांतों की न केवल भाषा की उपेक्षा होती, बल्कि उस भाषा को व्यवहृत करनेवाले लोगों को राजकीय कामकाज से तत्काल कुछ समय तक अलग हो जाना पड़ता । इसलिए हिंदीतर प्रांतों में संबद्ध प्रांत की प्रांतीय भाषा प्रथम स्थान पर है और हिंदी को द्वितीय भाषा के रूप में व्यवहृत होने का प्रावधान है और ऐसा होता भी है । केवल दो प्रांतों (बंगाल और तमिलनाडु) में मैट्रिक तक हिंदी पढ़ने की अनिवार्यता नहीं है और इसके पीछे प्रांतीय वर्चस्व को आगे कर हिंदी को नकारने वाली मानसिकता काम कर रही है । लेकिन कभी-कभी अन्य हिंदीतर प्रांतों में भी प्रांतीय भाषा को भावात्मक मुद्दों से जोड़कर हिंदी के प्रति द्वेष भी प्रकट किया जाता रहा है । इस स्थिति में राजभाषा हिंदी का हिंदीतर प्रांतों में राजकीय कामकाज के लिए कम व्यवहृत होना स्वाभाविक है । यहां तक कि केंद्र सरकार के संस्थानों में भी हिंदी के प्रयोग पर मौन अस्वीकृत बनी रहती है और हिंदी के बदले अंग्रेजी का व्यवहार किया जाता है । अत: बहुभाषिकता को आधार बनाकर राजभाषा की उपेक्षा बंद होनी चाहिए और हिंदी के प्रति भी भावात्मक संबंध विकसित होना चाहिए । प्रांत के प्रति अपनत्व के साथ उसी रूप में देश के प्रति भी अपनत्व होना चाहिए और ऐसा होने से हिंदी के अध्ययन एवं व्यवहार में गति आएगी । कुछ

* टी एफ-15, पंजाब विश्वविद्यालय परिसर, सैक्टर-14, चण्डीगढ़-160014

381 HA/12—2A

प्रांतों में इसके लिए वातावरण निर्मित हो रहा है और इस दृष्टि से गुजरात, कर्नाटक, केरल आदि प्रांतों के नाम लिए जा सकते हैं। केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली के द्वारा हिंदीतर प्रांतों में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक योजनाएं चलाई जा रही हैं।[2]

2. राजनीति-संबंधी

हमारे देश में राजनीति से जुड़े लोगों के पास अनेक ऐसे अधिकार प्राप्त हैं जो न्यायसम्मत नहीं हैं, पर वे लोग (नेता) उनके बल पर जनता को गुमराह कर अपने वोट बैंक को मजबूत करते हैं। इसलिए राजनेताओं को जो भी मुद्दा जानदार लगता है, वे उसे पकड़ लेते हैं। चूंकि भारत में बहुभाषिकता है, इसलिए भाषा को मुद्दा बनाना बड़ा सरल काम है। राजनेता जानते हैं कि जनता का अपनी भाषा के साथ भावात्मक संबंध होता है और यदि जनता को उसकी भाषा की उपेक्षा की झलक दिखा दी जाए तो वह बौखला जाएगी और इसके बाद राजनेता स्वयं को जनता की भाषा का रक्षक सिद्धकर प्रत्यक्ष रूप से अपनी प्रांतीय भाषा का गुणगान करते हुए राजभाषा हिंदी के प्रति विषवमन करते हैं। यह काम विगत वर्षों में अनेक बार होता रहा है। "जो लोग कभी हिंदी के उग्र समर्थक रहे हैं। वे भी आज अपनी नेतागिरी कायम रखने के लिए हिंदी का विरोध कर रहे हैं। इस प्रसंग में चक्रवर्ती राजगोपालाचारी का नाम अनायास सामने आ जाता है। 1937 में जब पहली बार कांग्रेस के हाथ में शासन की बागडोर आई और राजाजी मद्रास के मुख्यमंत्री (तब उसे प्रधानमंत्री कहते थे) बने तो उन्होंने मद्रास में हिंदी की शिक्षा अनिवार्य कर दी और अनिवार्य ही नहीं की, जिन्होंने हिंदी का विरोध किया, उन्हें जेल भेजने में भी उन्होंने संकोच नहीं किया। आज वहीं व्यक्ति जब हिंदी का विरोध कर रहा है तो इसका कारण समझ लेना बहुत कठिन नहीं है। मनुष्य देश, धर्म, भाषा जाति सबको प्यार करता है, किंतु सबसे पहले और सबसे अधिक अपने को प्यार करता है और अपनी महत्ता में कमी आने की उसे जहां संभावना दीखती है वहां वह सारे आदर्शों को एक ओर रख छोड़ता है। हिंदी के विरोध का यह एक प्रमुख कारण है जिसे प्राय: लोग नहीं समझ पाते।[3] इसलिए आज आवश्यकता है देश को जागरूक होने की। जब तक देश जागरूक नहीं होगा तक तक देश को नेतागिरी की चाल समझ में नहीं आएगी। जब तक जनता राजनेताओं के द्वारा गुमराह होती रहेगी तब तक राजभाषा हिंदी के प्रति सम्मान उत्पन्न नहीं होगा।

3. तकनीकी शब्दावली-संबंधी

आधुनिक युग विज्ञान का युग है और पाश्चात्य देश इस क्षेत्र में नेतृत्व कर रहे हैं। भारत ने विकास प्राप्त करने के लिए ज्ञान के इस क्षेत्र को स्वीकार किया है। आरंभ में इस क्षेत्र का अध्ययन-अध्यापन अंग्रेजी में होता था, पर जब हिंदी को राजभाषा बनाया गया तब हिंदी को इस क्षेत्र से संबंधित अध्ययन-अध्यापन की माध्यम भाषा बनाने के प्रयत्न शुरू हुए और इस दिशा में इससे बड़ी बाधा थी तकनीकी शब्दावली का अभाव। इस क्षेत्र के साथ प्रशासन में भी हिंदी के प्रयोग का काम शुरू हुआ। भाषाविद् डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया का यह मत धयात्व्य है-- "प्रशासन में राजभाषा के प्रयोग की दृष्टि से दो मोटे विभाजन होंगे (क) सामान्य प्रशासन में काम आनेवाली नेमी कार्यालय टिप्पणियां तथा (ख) प्रत्येक विभाग, उपविभाग, शाखा से संबंधित शब्दावली तथा अभिव्यक्तियां, जैसे लेखा-विभाग में लेखा से संबंधित अभिव्यक्तियां होंगी।"[4] डॉ. रघुवीर ने विज्ञान की अनेक शाखाओं एवं प्रशासन के अनेक विभागों तथा उपविभागों से संबंधित तकनीकी शब्दावली के अभाव को दूर करने के लिए तकनीकी शब्दावली कोश का निर्माण किया। उनका काम बड़ा ही व्यापक और गंभीर है। लेकिन हिंदी के विरोधियों ने डॉ. रघुवीर को नकारने के लिए उन पर आरोप लगाया कि डॉ. रघुवीर के द्वारा बनाए गए तकनीकी शब्दों से अच्छे तो अंग्रेजी के शब्द ही हैं क्योंकि वे सहज हैं और लोग उन्हें आसानी से समझ लेते हैं। डॉ. रघुवीर पर क्लिष्टता का लेबल लगानेवालों में कुछ हिंदी के लोग भी थे जिन्हें संस्कृत से आए तत्सम शब्दों की व्युत्पत्ति का ज्ञान नहीं था और न वे उसे समझने की सामर्थ्य रखते थे। कई राजनेताओं ने भी आसान एवं सरल तकनीकी शब्दावली के लिए परामर्श दिए। लेकिन इस संबंध में यह स्मरण रखना आवश्यक है कि तकनीकी शब्द सामान्य भाषा में व्यवहृत होनेवाले शब्दों से बिल्कुल ही अलग (भिन्न) संकल्पना से संपृक्त होते हैं, इसलिए प्रत्येक भाषा में प्रयुक्त होनेवाली तकनीकी शब्दावली सामान्यभाषा की शब्दावली से भिन्न होती है। अत: विज्ञान एवं प्रशासन में प्रयुक्त होनेवाली हिंदी की तकनीकी शब्दावली को क्लिष्ट बताकर हिंदी की भूमिका को नकारना कहीं भी उचित नहीं है। सच तो यह है कि "राजभाषा हिंदी की प्रशासन के विभिन्न क्षेत्रों में जितनी भूमिकाएं संभव हो सकती हैं उतने ही क्षेत्रों की भिन्न होंगी। गृह मंत्रालय के अंतर्गत राजभाषा विभाग तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय के केंद्रीय हिंदी निदेशालय, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग और केंद्रीय हिंदी

381 HA/12—2B

संस्थान आगरा ने इस संदर्भ में कार्य किया है । हिंदीभाषी राज्यों में भाषा-विभाग भी सक्रिय है, फिर भी अभी पर्याप्त कार्य करना शेष है ।'[5] इसलिए आवश्यकता है उस 'शेष कार्य' को पूरा करते हुए हिंदी के प्रयोग को आगे बढ़ाने की ।

4. भाषा-शिक्षण-संबंधी

भारत के हिंदीभाषी प्रांतों में हिंदी के साथ अंग्रेजी पढ़ाई जाती है और हिंदीतर प्रांतों में त्रिभाषा फार्मूले के तहत प्रांतीय भाषा के साथ हिंदी और अंग्रेजी पढ़ाने की व्यवस्था है । भाषा-संबंधी पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण में साहित्य को विशेष स्थान प्राप्त है और इस संबंध में तर्क दिया जाता है कि साहित्य के अध्ययन के साथ भाषा का भी अध्ययन हो जाता है और यह बात गलत भी नहीं है । लेकिन इस संदर्भ में दो बातों पर ध्यान देना चाहिए । पहली यह कि साहित्य के अध्ययन-अध्यापन से जुड़े लोग साहित्य के कथ्य के बारे में एक-से-एक अनोखी बात कर लेते हैं, पर जब भाषा पर बोलना होता है तब दो-चार सतही टिप्पणीकर दायित्व की पूर्ति मान ली जाती है । दूसरी बात यह है कि यदि भाषा के अध्ययन-अध्यापन को साहित्य के अध्ययन-अध्यापन के समानांतर अनिवार्य कर दिया जाए तो विद्यार्थी हिंदी भाषा की संरचना से जुड़े अन्यान्य बिंदुओं का अध्ययन कर पाएगा और ऐसा होने से तकनीकी शब्दों की व्युत्पत्ति से लेकर भाषा-प्रयोग-संबंधी अनेक बातों का ज्ञान प्राप्त होगा । अत: राजभाषा हिंदी के विकास के लिए इन दोनों बातों पर ध्यान देना आवश्यक है ।

5. शासनतंत्र-संबंधी

भारत में राजकीय कामकाज के संपादन के लिए अंग्रेजी से पहले फारसी का प्रयोग होता था । मुगलों के शासनकाल में फारसी जाननेवालों का दबदबा था और अंग्रेजों के शासनकाल में अंग्रेजी जाननेवालों का और स्वतंत्रता के बाद भी अंग्रेजी का दबदबा कम नहीं हुआ है । इसलिए अंग्रेजी शासनतंत्र की पहली भाषा समझी जाती है और अंग्रेजी जाननेवाले उच्च सरकारी पदों पर आसीन होते हैं । ज्ञान-विज्ञान के आधुनिक क्षेत्रों के अध्ययन के लिए भी अंगेंजी उपयुक्त मान ली गई है । शासनतंत्र से जुड़े पदाधिकारी अंग्रेजी में कामकाज करने के अभ्यस्त होने के कारण हिंदी को क्लिष्ट कहकर आगे निकल जाते हैं उनके अधीनस्थ अधिकारियों एवं कर्मचारियों में से अधिकांश उनके रास्ते पर चलना पसंद करते हैं और जब राजभाषा आयोग की ओर से हिंदी में कामकाज करने की सलाह के साथ अनिवार्यता-संबंधी पत्र प्राप्त होते हैं तब वे कुछ कामकाज (पत्रादि) को हिंदी में निपटाकर अपने दायित्व को पूरा कर लेते हैं और उसमें भी अनुवाद का काम ही अधिक होता है । हिंदी में न तो मूल चिंतन होता है और न भाषा-प्रयोग के प्रयत्न । कई बार तो अनुवाद अत्यंत क्लिष्ट और असहज बन जाने के कारण शासनतंत्र से हिंदी को बाहर निकालने की मन:स्थिति निर्मित होने लगती है ।

निष्कर्ष

राजभाषा हिंदी के विकास के उपर्युक्त पांचों अवरोधक तत्वों को समाप्तकर हिंदी का विकास किया जा सकता है, पर इसके लिए दृढ़ इच्छाशक्ति, निरंतर भाषा-शिक्षण एवं सरकारी सहयोग की आवश्यकता है । यदि हिंदी के विकास के साथ इन तीनों बातों को जोड़ दिया जाए तो हिंदी के स्थान पर अधिकार जमाए अंग्रेजी नहीं टिक पाएगी और हिंदी को संविधान प्रदत्त निज स्थान प्राप्त हो जाएगा ।

संदर्भ

1. आचार्य देवेंद्रनाथ शर्मा, 'राष्ट्रभाषा हिंदी : समस्याएँ समाधान', लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1987, पृ. 158
2. 'केंद्रीय हिंदी निदेशालय : एक परिचय', केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली, 2004
3. 'राजभाषा हिंदी : समस्याएँ और समाधान', पृ. 160-161
4. 'गवेषणा' : 63-64/1994, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, पृ. 222
5. 'गवेषणा' : 63-64/ 1994, पृ. 225 ■

राष्ट्र के रूप में हिंदी हमारे देश की एकता में सबसे अधिक सहायक सिद्ध होगी ।

—पं. जवाहर लाल नेहरू

राजभाषा और भारतीयता

–प्रो. ज़ौहरा अफज़ल

संपूर्ण राष्ट्र को एक मंच पर लाने तथा स्वाधीनता का स्वर एक साथ मिलकर उठाने में हिंदी की अहम भूमिका रही है। स्वाधीनता आंदोलन में सारे देश के राष्ट्रीय स्तर के नेताओं ने आपसी संपर्क सूत्र के रूप में हिंदी को स्वीकार किया था। स्वाधीनता के इन बासठ वर्षों में हिंदी का बहुमुखी विकास हुआ है। यह न केवल हमारी राजभाषा है बल्कि राष्ट्रीय भाषा तथा संपर्क भाषा के रूप में भी अपनी सशक्त भूमिका निभा रही है। आज हिंदी इतनी सक्षम हो गई है कि साहित्य के अतिरिक्त चिकित्सा विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कृषि, कंप्यूटर, मानविकी, प्रबंधन आदि अनेक विधाओं को वाणी प्रदान कर रही है।

भारत एक बहुभाषी देश है यहां विभिन्न राज्यों में विभिन्न प्रकार की भाषाएं बोली जाती हैं। इस कारण अखिल भारतीय स्तर पर विचारों के आदान-प्रदान के लिए एक ऐसी भाषा की आवश्यकता महसूस की गई जिसे देश के सर्वाधिक लोग बोल तथा समझ सकते हों। इस तथ्य को दृष्टि में रखकर बहुत चिंतन-मनन के उपरांत ही हमारे देश के संतों, मनीषियों और महापुरूषों ने संपर्क भाषा के रूप में हिंदी को अपनाया। हिंदी ने भारतवासियों को एक सूत्र में पिरोने का काम किया है। इस कारण भारतीय संविधान ने इसे राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। विश्व की अन्य तमाम भाषाओं में हिंदी, अंग्रेजी के बाद सबसे अधिक बोली, समझी और लिखी-पढ़ी जाने वाली भाषा है।

यूनेस्को के विशेषज्ञों की राय में "उस भाषा को राजभाषा कहा जाता है, जो सरकारी कामकाज के रूप में स्वीकार की गई हो और शासन तथा जनता के बीच आपसी संपर्क के काम भी आती हो। आमतौर पर किसी देश की राष्ट्रभाषा ही वहां की राजभाषा होती है।"

हमारे नेताओं के सतत् प्रयत्नों के फलस्वरूप हमें आज़ादी प्राप्त हुई। 14 सितंबर सन् 1949 को हमारे संविधान ने हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकृति प्रदान की। स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाले हमारे सेनानियों, देश-भक्तों और नेताओं में भी ऐसे लोग हुए हैं, जिन्होंने अपनी मातृभाषा न होते हुए भी हिंदी की अर्चना की और उसे जन-जन की भाषा बनाने में सहायक हुए। हिंदी के लिए ऐसे समर्पित लोगों में स्वयं महात्मा गांधी अग्रणी थे जिन्होंने हिंदुस्तानी के प्रचार और प्रसार के माध्यम से जन-जन को आपस में जोड़ा। इस प्रकार का बल हिंदी को लोकमान्य तिलक, लाला लाजपतराय, राजगोपालाचारी, सुभाषचंद्र बोस तथा अनेक ऐसे सेनानियों से भी बल मिला जिनके विचारों और कार्यों ने हिंदी के प्रचार और प्रसार की दिशा में संजीवनी शक्ति का काम किया। इसका परिणाम यह हुआ कि लोगों के मन में अंग्रेजी शासन की मुक्ति की बात भी घर कर गई। यह वह समय था जब मातृभूमि के लिए और 'सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा' जैसे गीतों की पंक्तियां प्रेरणा देती थी। इन गीतों में न प्रांतीयता का भेद था, न भाषा की दीवार। सभी ने एक तान, एक लय में स्वतंत्रता के लिए और देश की अस्मिता के लिए इसे गाया। डॉ. राजेंद्र प्रसाद, राजर्षि पुरूषोत्तमदास टण्डन और पण्डित गोविंद वल्लभ पंत जैसे नेताओं ने राजभाषा के संदर्भ में हिंदी की महत्वपूर्ण सेवा की। भारत के संविधान में अनुच्छेद 343 के अनुसार राष्ट्रभाषा हिंदी को गौरवपूर्ण स्थान दिया गया, जिसके अनुसार हिंदी राजभाषा के रूप में सरकारी कामकाज की भाषा के पद पर स्थापित हुई। संविधान में भारत की सामाजिक संस्कृति के अनुरूप भाषायी तालमेल के लिए क्षेत्रीय भाषाओं को भी मान्यता दी गई और विभिन्न भाषाओं की शब्दावली, शैली और अलंकार आदि को हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा विकास के लिए आवश्यक माना गया इस प्रकार संपूर्ण भारत के भाषायी तत्वों का समावेश कर राजभाषा हिंदी में भारतीयता की भावना को अभिव्यक्ति दी गई। केंद्र सरकार द्वारा सन् 1976 में राजभाषा संबंधी कुछ कानून भी बनाए गए जिनके अनुसार राज्यों को (क), (ख) और (ग) भागों में रखा गया।

* विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, हजरतबल, श्रीनगर-190006 (कश्मीर)

(क) भाग में सभी हिंदी भाषी राज्य है जैसे--राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, हिंमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, दिल्ली आदि ।

(ख) भाग में महाराष्ट्र, गुजरात आदि ऐसे राज्य रखे गए हैं जो अद्र्ध रूप से हिंदी भाषी राज्य माने जा सकते हैं ।

(ग) भाग में अहिंदी भाषी क्षेत्र रखे गए हैं जैसे--तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, केरल आदि ।

राजभाषा को अधिक सक्षम बनाने की दिशा में सरकारी तथा गैर-सरकारी स्तर पर प्रयत्न किए गए; जिससे कि सरकारी कामकाजों में अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी का प्रयोग किया जा सके । कार्यालयों, न्यायालयों, विद्यालयों कार्यशालाओं, निजी उद्योगों तथा विभिन्न संस्थानों के प्रशासनिक कार्य में प्रयोग होने वाली हिंदी न तो भारतेन्दु महावीर प्रसाद द्विवेदी या रामचंद्र शुक्ल की निबंध वाली हिंदी है और न ही पंत, प्रसाद और निराला वाली साहित्यिक है । जहां तक राजभाषा के रूप में हिंदी के क्रियान्वयन का प्रश्न है; अनुकूल वातावरण की अनुपस्थिति में बाधाएं ही बाधाएं सामने दिखाई देती हैं । यही कारण है आज अभिव्यक्ति का संकट उत्पन्न हो गया है । अपनी भाषाओं से हमें लगाव नहीं है और अंग्रेजी में अभिव्यक्ति इस देश की मिट्टी की महक से मेल नहीं खाती । अत: हमें अपनी भाषायी सोच को नई दिशा देने की आवश्यकता है । हिंदी हमारी सभ्यता और संस्कृति की सहज वाहिका है । हमें अपनी मानसिकता को बदलकर आज इस विचार की पहचान करनी है । हमारी मानसिकता यह हो गई है कि जो व्यक्ति ज़ोरदार तरीके से अंग्रेजी बोल सकता है उसे ही हम सभ्य, प्रतिष्ठित और सुसंस्कृत मानते हैं । इस मनोवृत्ति के कारण हिंदी को पिछड़े हुए लोगों की या दोयम दर्जे की भाषा भी कहा जाता है । यह सब हमारी हीन भावना का प्रमाण है जिसके कारण हम ओ.के. बाई-बाई और टा-टा वाली संस्कृति को अपनाकर अपने बच्चों में भी इस प्रकार के संस्कार पैदा कर देते हैं । अपनी भाषा अपनी ही होती है । माँ के दूध के साथ मिले हुए अपनी भाषाओं के संस्कारों से हमारे विचारों, मूल्यों और आदर्शों में हमारी धरती की महक होती है । यह हमें हमारे मूल से जोड़ती है । यह हमारी परम्पराओं, संस्कृतियों, मान्यताओं और विश्वासों को पारस्परिक तौर पर समझने का माध्यम भी है ।

प्राचीनकाल से ही राजभाषा हिंदी इस देश में पारस्परिक स्नेह, भाइचारे की भाबन्त, सांस्कृतिक तथा भावनात्मक एकता और देश की अखण्डता को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है । प्राचीन काल से ही राजभाषा हिंदी के द्वारा भावनात्मक एकता के संदेश के साथ-साथ सांस्कृतिक गरिमा, यहां की दार्शनिक पृष्ठभूमि, सभ्यता आदर्श मान्यताओं जीवन के शाश्वत मूल्यों को समान रूप से वाणी मिली है ।

हिंदी के प्रबल समर्थक डॉ. राजेंद्र प्रसाद के अनुसार "अंग्रेजी का मुकाबला केवल हिंदी से नहीं बल्कि सभी प्रांतीय भाषाओं से है ।" भाषायी तालमेल, राष्ट्रीय एकता और पारस्परिक मेल-जोल बहुत ही महत्वपूर्ण है । हमें परंपराओं, संस्कृतियों, मान्यताओं, मूल्यों और विश्वासों की विभिन्नता के बीच पारस्परिक सद्भाव और एकता की सुनहरी रेखा पहचाननी है । इससे हमारी भारतीयता की भावना को भी पोषण मिलेगा वह और अधिक दृढ़ होगी ।

आज की तारीख में विश्व के लगभग एक अरब लोग हिंदी को बड़ी आसानी से बोल सकते हैं । हिंदी समझने वालों की संख्या इससे कहीं अधिक है । विश्व में आज जिस गति से बाज़ारवाद और उदारीकरण की हवा नहीं है, उसके अनुरूप भारत विश्व की एक बड़ी आर्थिक व सैन्य शक्ति बनकर उभरा है । जिसके पास शक्ति होती है, दुनिया उसकी दहलीज पर झुकती है । इस दृष्टिकोण से भी निकट भविष्य में हिंदी की व्यापकता का बढ़ना आवश्यक प्रतीत होता है । व्यापारिक और आर्थिक क्षेत्र में भी भारत एक खुली मंडी के रूप में उभर कर विश्व के सामने आया है और यहाँ के लोगों से व्यापारिक संबंध बनाने के इच्छुक देशों के लोगों को हिंदी सीखनी पड़ रही है जो विश्वभर में हिंदी के प्रचार एवं प्रसार में सहायक सिद्ध हो रही है । भारतीय मूल की विदेशों में भारतीय मूल के लोगों ने ऐसे संगठन बनाए है जो धार्मिक त्यौहारों तथा अन्य कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं और हिंदी का ऐसा माहौल पैदा करते हैं जिससे कि उनका हिंदी भाषा प्रेम तथा भारतीयता के प्रति सम्मान परिलक्षित होता है ।

संदर्भ ग्रंथ

(1) व्यावहारिक राज भाषा--डॉ. नारायण दत्त पालीवाल

(2) प्रवासी संसार --गीता कालोनी दिल्ली (अक्तूबर-दिसम्बर 2007)

381 HA/12—3A

प्रयोजनमूलक हिंदी : मीडिया और विज्ञापन

–ईश्वरचंद्र मिश्र

प्रयोजनमूलक हिंदी का भाषा की श्रीवृद्धि और समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान है । प्रयोजनमूलक हिंदी में मीडिया और विज्ञापन का संदर्भ अपनी तरह से उल्लेखनीय एवं विचारणीय है । प्रयोजनमूलक हिंदी अथवा भाषा की प्रयोजनमूलकता कई दृष्टियों से भाषा-विमर्श के विषय रहे हैं । इसका पहला कारण "प्रयोजनमूलक" नाम ही है, अर्थात् यदि कोई भाषा प्रयोजनमूलक होती है तो सहज ही प्रश्न बनता है कि क्या कोई भाषा निष्प्रयोजन भी होती है, या कि निष्प्रयोजनता भी किसी भाषा का गुण हो सकता है? भारतीय परिवेश में विद्वत समाज को यह बताने की जरूरत नहीं है कि "भाषा" शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत की क्रिया-धातु "भाष्" से हुई है जिसका अर्थ होता है "बोलना" । जो सुंदर बोले उसे "सुभाष" कहते हैं, जो कम बोले उसे "अल्पभाषी" कहते हैं । इसी तरह मृदुभाषी, कटुभाषी जैसे शब्दों में भाषा का मूल अर्थ ध्वनित है । भाषा का अर्थ "बोलना" मान लें और आगे बढ़ें तो कुछ बातें महत्व की लगती हैं : (1) भाषा किसके प्रति बोली जाएगी, (2) भाषा में क्या बोला जाएगा, और (3) भाषा कहाँ बोली जाएगी । स्पष्ट है कि भाषा के स्वरूप पर व्यक्ति, विषय और परिवेश तीनों का प्रभाव होता है जिसका इशारा कुल मिलाकर प्रयोजन की तरफ ही है । यहाँ स्मरणीय है कि 'सप्रयोजन भाषा' निष्प्रयोजन भाषा का उल्टा अर्थ देता है, किंतु प्रयोजनमूलक भाषा का संदर्भ पारिभाषिक है । यह फंक्शनल लैंग्वेज का हिंदी में प्रतिस्थापन है ।

विद्वानों और चिंतकों का एक बड़ा वर्ग आज यह मानकर चलता है कि सत्ता और धन के बाद भाषा सबसे समर्थ संसाधन है, बल्कि भाषा के सहारे सत्ता और धन के केंद्रों पर क़ाबिज होने वाले सभी समाज और देशों में मिलते हैं । सुकरात से लेकर अब्राहम लिंकन, नेपोलियन बोनापार्ट से लेकर हिटलर तथा स्वयं भारत में जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचंद्र बोस के उदाहरण साबित करते हैं कि उनके करिश्माई व्यक्तित्व में उनकी भाषा और वक्तृव कला का अभूतपूर्व योगदान था । आज भाषा का संबंध केवल बोलने तक सीमित नहीं है, यह श्रव्य और दृश्य माध्यमों और लेखन के व्यापक सरोकारों को ऊर्जा देने लगी है और उन तमाम गतिविधियों का केंद्र है । भाषा का यह पक्ष मीडिया और विज्ञापन में विशेष रूप में सामने आता है । मीडिया और विज्ञापन की एक बड़ी देन यह है कि इसके कारण हिंदी का एक अखिल भारतीय स्वरूप निर्मित हुआ है और दिनोंदिन हिंदी की लोकप्रियता आसमान होती जा रही है ।

प्रयोजनमूलक हिंदी के संदर्भ में मीडिया और विज्ञापन की भाषा की प्रवृत्तियाँ क्या हैं, या कि मीडिया और विज्ञापन में प्रचलित हिंदी की संभावानाएँ क्या हैं--इन विषयों पर आने से पहले मैं केंद्रीय विषय "प्रयोजनमूलक हिंदी" की संकल्पना और उसका निहितार्थ स्पष्ट करना उपयोगी मानता हूँ । अत: कहना है कि जिस तरह किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व में विविधता होती है और स्वयं भारतीय संस्कृति विविधतामूलक है, उसी तरह भारतीय भाषाओं की भाषा हिंदी भी विविधतामूलक है । यदि स्थान को लें तो बंबइया हिंदी, कलकतिया हिंदी, पूरबिया हिंदी अथवा दक्खिनी हिंदी जैसे नाम सुने जाते हैं । जिस कार्य के लिए भाषा का प्रयोग करते हैं, वह कार्य भाषा के स्वरूप को प्रभावित करता है । इस आधार पर भाषा का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है :

(1) सामान्य भाषा और (2) विशेष भाषा और पुन: विशेष भाषा को साहित्यिक भाषा, पत्रकारीय भाषा, कार्यालयी भाषा, व्यवसायी भाषा, समाजी भाषा जैसे अनेक वर्गों में बाँट सकते हैं । प्रयोजनमूलक हिंदी का आशय हिंदी भाषा की प्रयुक्ति के उस संदर्भ से है जो उसके स्वरूप के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । यदि भाषा की प्रयुक्ति पर विचार करें तो स्पष्ट होता है कि प्रयुक्ति का संबंध बोलने, सुनने, समझने और लिखने--चारों भाषा-प्रयोगों से है । हिंदी में प्रशासनिक भाषा, पत्रकारीय भाषा, शास्त्रीय भाषा अथवा साहित्य भाषा जैसे विभेद प्रयोजनमूलक भाषा की संकल्पना के कारण हैं । सर्वप्रथम यूरोप और अमेरिका में 1950 के

* प्रशिक्षण अधिकारी, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, पांचवां तल (डी विंग) केंद्रीय सदन, कोरमंगला, बेंगलूर-560034

पहले 'फक्शनल लैंग्वेज' (Functional Language) की अवधारणा बनी थी जिसके लिए आंध्रप्रदेश के प्रख्यात और स्वनामधन्य हिंदीसेवी मोटूरि सत्यनारायण जी ने प्रयोजनमूलक भाषा और तदुपरांत प्रयोजनमूलक हिंदी शब्द का प्रयोग किया । भाषा अध्ययन के क्षेत्र में प्रयोजनमूलक हिंदी की संकल्पना आधुनिक और बहुसंदर्भी है । उसका अपना विशेषार्थ है और उसके कई आयामे हैं । हिंदी भाषा का वह स्वरूप अथवा उसकी वह प्रयुक्ति प्रयोजनमूलक हिंदी कहलाती है जो विषय-संदर्भ और प्रयोग-प्रसंग से प्रभावित और अनुप्राणित हो । प्रयोजनमूलक भाषा से संबंधित चिंतन का श्रीगणेश विज्ञान और तकनीकी तथा विविध शैक्षिक विषयों के अध्ययन-अध्यापन के लिए उत्पन्न भाषा आवश्यकता के कारण हुआ । भारत में 1950 से लेकर 1980 के दशक में प्रयोजनमूलक हिंदी और पारिभाषिक शब्दों का कई दृष्टियों से काफी विकास हुआ । इसमें अनुवाद की भूमिका सर्वस्वीकार्य है जिसका अनुमोदन भारतीय संविधान की अनुच्छेद 351 द्‌वारा करता है । हिंदी का विकास इस भावना से किया जाए कि वह भारत की सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके । शब्दों का विकास कुछ इस तरह किया जाए कि हिंदी को सभी भारतीय भाषाओं से अभिव्यक्ति का कौशल प्राप्त हो और उसे अखिल भारतीय स्तर पर स्वीकार्य एवं ग्राह्य बनाया जा सके । समूचे भारत में ही नहीं, भारत की भौगोलिक सीमा के बाहर हिंदी की लोकप्रियता में सिनेमा और मीडिया की भूमिका बड़ी कारगर और स्मरणीय रही है । यह भाषा का सबसे उर्वर क्षेत्र है ।

भारतीय मीडिया पिछले दो-तीन दशकों में बड़े संक्रमण के दौर से गुजरा है और आज उसने अंग्रेज़ी से स्वतंत्र हिंदी का प्रचार-प्रसार और विस्तार किया है । सिनेमा और समाचारों की प्रस्तुति ने अखिल भारतीय स्तर हिंदी की स्वीकार्यता को विस्तार प्रदान किया है । तमाम अड़चनों और अवरोधों के बावजूद मीडिया ने जनभाषा हिंदी की भागीरथी को कुछ ऐसा बहाया है कि सरकार और जनता के बीच संवाद की कारगर और प्रभावी भाषा के रूप में उसकी धाक जमी है । पत्रकारिता, जनमाध्यम और जनसंचार जैसे कई पूर्व प्रचलित शब्दों के अर्थ को स्वयं में समाहित करके मीडिया अब सशक्त और प्रयोगपुष्ट शब्द बन गया है । आज मीडिया का अभिप्राय 'प्रिंट मीडिया' और 'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया' दोनों से है । वर्तमान समय में अखबार, पत्रिकाएँ, प्रचार प्रतियाँ जैसी प्रिंट सामग्री तथा टेलीविज़न और सिनेमा के दृश्य-शब्दात्मक संसार एक-दूसरे से प्रभावित, प्रेरित और अनुप्राणित हैं । मीडिया और मीडिया से जुड़े लोगों की अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा और पहचान बनी है । आज मीडिया-कर्मी का मतलब झोलाछाप पत्रकार नहीं रहा जो हवाई चप्पलें पहनकर सड़कों की धूल फाँके अथवा किसी बंद कमरे में अपने चश्मे का नंबर बढ़ाए । आज त्याग और संघर्ष का स्थान व्यावसायिकता और बौद्धिकता ने ले लिया है । प्रतिस्पर्धा, महत्वाकांक्षा और गुणवत्ता के साथ सूचनाक्रांति और कंप्यूटर से गलबाँही के कारण यहां अकूल संभावनाएं पैदा हुई हैं । इस क्षेत्र ने साबित किया है कि जिसे भाषा की शक्ति प्राप्त है, वह संवेदन सक्षम होता है और उसमें संप्रेषण की कुशलता भी होती है । वह समाज की नब्ज पहचानता है, उसे समय और वक्त की धारा का रुख मालूम होता है । वह राजनीतिक हलचलों से अछूता नहीं रहता, बल्कि वह एक साथ समाजचेता और युग का नेता हो जाता है । आज हिंदी-अंग्रेज़ी के साथ कन्नड़ अथवा किसी अन्य भाषा के जानकार और जानदार आदमी को समझ लेना चाहिए कि भाषा जानने से कोई अटलबिहारी वाजपेयी बन सकता है और कोई प्रमोद महाजन । लालकृष्ण आडवाणी, सरला माहेश्वरी और नवोदित व्यक्तियों में संजय निरूपम सीधे पत्रकारिता और मीडिया की ओर से राजनीति को देन हैं । अच्छी भाषा अच्छी समझ की द्योतक है । किसी की समझ साफ है, यह उसके द्‌वारा प्रयुक्त भाषा बताती है । भारतीय परिवेश में सफल नेता, सफल अभिनेता और सफल विक्रेता होने के लिए हिंदी जरूरी है । विज्ञापन की भाषा विक्रेता की भाषा है ।

कुछ लोग हिंदी पत्रकारिता को अंग्रेज़ी अनुवाद से आक्रांत मानते हैं, किंतु ऐसा पूरी तरह मानना उचित नहीं है । काफी सारी वाक्य संरचनाएँ और शब्द अंग्रेज़ी से प्रभावित और प्रेरित अवश्य हैं, तथापि हिंदी के अभिव्यक्ति रूपों की मर्यादा, गरिमा और उनका सौंदर्य वहाँ मन को मोहनेवाला है । यदि ऐसा न हो तो समाचारों की प्रस्तुति बेजान और बोझिल हो जाए । मीडिया और विज्ञापन में परस्पर गहरा संबंध है, बल्कि कहना चाहिए कि आज का विज्ञापन मीडिया का ही एक रूप है । वहाँ ऐसी भाषा चाहिए जिसमें सम्मोहन हो और वह जादुई असर कर सकती हो । ज़रा इन वाक्यों को देखिए :

(1) जब भी पुराना हिसाब-किताब होता है, नतीजे में अक्सर रिश्ता खराब होता है ।

(2) जिसे खोदना हो उसे मिट्‌टी कहते हैं, जिसे जोड़ता हो उसे गिट्‌टी कहते हैं ।

(3) सच्चाई छुप नहीं सकती बनावट के असूलों से।
खुशबू आ नहीं सकती कभी कागज़ के फूलों से।

मन में ठुक जानेवाली इन पंक्तियों का तापमान आज के चौबीस घंटे प्रसारित होनेवाले हिंदी समाचारों की प्रस्तुति में दिखता है। कुछ कहावतें देखिए--(1) चोरी और सीनाजोरी (2) चोर चोरी से जाए तो जाए तुम्मा फेरी से न जाए (3) मियाँ घर नहीं, बीवी को डर नहीं। हिंदी की इन कहावतों, इन लोकोक्तियों में बात कहने की जो ताकत है, विज्ञापन की भाषा ने उसे समझ-बूझकर आयातित किया है। विज्ञापनों में कहीं मिली-जुली भाषा का गंगा-यमुना सौंदर्य है तो कहीं बॉडी-लैंग्वेजं का करिश्मा। कहीं वचन भंगिमा है तो कहीं अनुप्रास की छटा। ''यही है राइट च्वाइस बेबी'' तथा ''कुछ तो है एक्स्ट्रा'' जैसे विज्ञापनी वाक्यों से कुछ लोग भाषा की शुद्धता को लेकर सिर धुनते हैं। भाषा की शुद्धता के लिए चिंता करनेवालों को समझ लेना चाहिए कि भाषा इतनी गतिशील है जितना जीवन। यह बन-बनकर बिगड़ती है और बिगड़-बिगड़कर बनती है। भाषा की सबसे छोटी इकाई वाक्य होते हैं; अर्थात् वाक्य के कुछ शब्द नहीं, अधिकांश शब्द विजातीय भी हों, किंतु वाक्य-रचना हिंदी की हो तो अभिव्यक्ति हिंदी की मानी जाएगी। तथापि, मेरा आशय यह नहीं है कि भाषा के मानक स्वरूप का आदर न किया जाए। विज्ञापन और मीडिया में ऐसी भाषा चाहिए जो लोकलुभावन और जन-जन भावन हो। वह ऐसी चुटीली हो कि सब के मन पर चढ़ जाए। इसलिए जुमलेबाजी विज्ञापन की भाषा को धार देती है। यहां नित नए जुमले इज़ाद किए जाते हैं। जींस पर कुर्ता और कमीज़ पहननेवाली पीढ़ी को चलताऊ भाषा चाहिए। विज्ञापन में ''मिले सुर हमारा-तुम्हारा'' का मतलब व्यवसायी और ग्राहकी का सुर एक हो। व्यवसायी बनाए कुछ, और ग्राहक पसंद करे कुछ और-तो यह सुरों का न मिलना ही होगा। फिर ग्राहक और व्यवसायी के सुरों को पहचानना और उसे पकड़ना तथा कई बार उसका निर्माण और संयोजन विज्ञापन की चुनौती है।

विज्ञापन के बारे में यह साफ़ है कि यह कला, विज्ञान और व्यवसाय का मिला-जुला रूप है। इसमें कला की कलात्मकता, विज्ञान की तार्किकता और वाणिज्यिक दृष्टि तीनों का होना आवश्यक है। वर्तमान की औद्योगिक संस्कृति विज्ञापन के बिना पंगु हो सकती है। विज्ञापन जगत् में सब मानते हैं कि व्यापारी को अपना सामान ग्राहकों की भाषा में बेचना पड़ता है। खरीददार अथवा ग्राहक को भाषा तलाशने की जरूरत नहीं पड़ती। व्यापारी को हमेशा पड़ती है। व्यापार और व्यवसाय का मोर्चा अधिसंख्यक जनता पर नज़र रखता है। हिंदी भारत में आमजन की भाषा है, इसलिए व्यावसायिकता को हिंदी अवश्य चाहिए। हिंदी अर्थात् इस भाषा का वह स्वरूप जो व्यवसाय बढ़ाने में सहायक हो। विज्ञापन के गुरू ऐसी भाषा की पहचान करते हैं, उसका स्वरूप गढ़ते हैं एवं दृश्यों तथा भंगिमाओं से उसे जोड़ते हैं। साहित्य की भाषा में रूपवाद तथा विज्ञापन की भाषा में प्रयोजनवाद मुख्य होता है। विज्ञापन का प्रयोजनवाद है विक्रय की दर में वृद्धि करना। औद्योगिक उत्पाद अधिकाधिक उपभोक्ताओं तक पहुँच सके और अपनी ग्राहकप्रियता अर्जित कर सके, इस उद्देश्य के लिए विज्ञापन आधारभूत महत्व रखता है। इस बात से एतराज करना किसी के लिए संभव नहीं है कि विज्ञापन के माध्यम से ग्राहकता बढ़ती है और उत्पादों की स्वीकार्यता में वृद्धि होती है। इसलिए वाणिज्य और विज्ञापन में अन्योन्याश्रय संबंध है। उत्पादन का मोर्चा वितरण और विपणन के बिना बेसहारा ही होगा। व्यवसाय और विज्ञापन मिलकर राष्ट्र का आर्थिक विकास करते हैं। बैंकिंग, बीमा, रोजगार, शिक्षा और व्यवसाय--सभी के लिए प्राणदायक माध्यम है विज्ञापन और विज्ञापन अनेक प्रकार से व्यक्ति और राष्ट्र के आर्थिक हितों को संबल देते हैं। आज शिक्षा, रोजगार और व्यवसाय में गलाकाट प्रतिस्पर्धा है और यह स्पर्धा और प्रतिद्वंद्विता की देन है। व्यापार और उद्योग की चुनौती को सिर पर लेकर विज्ञापन आगे बढ़ता है।

अर्थ की दृष्टि से विज्ञापन से मिलता-जुलता शब्द हिंदी में प्रचार है। विज्ञापन वस्तुओं और उत्पादों का होता है और प्रचार विचारों, मतवादों और संदेशों का। प्रचार जहाँ समाज-सुधारकों के लिए प्रासंगिक है; वहाँ विज्ञापन व्यापारियों, व्यावसायिकों तथा उद्यमियों के लिए प्राणशक्ति है। बस, एक ही बात दोनों में सामान्य है कि प्रचार और विज्ञापन दोनों के लिए जनमाध्यमों एवं मीडिया का सहारा और सहयोग चाहिए। शब्द जब दृश्यों, भंगिमाओं, चरित्रों के साथ-साथ भाषा प्रयोग की कलात्मकता से जुड़ जाते हैं तो वह कार्यक्षेत्र विज्ञापन का हो जाता है। विज्ञापन ने भाषा को नया मिज़ाज और नई ताज़गी दी है और देती जा रही है। इसके कारण रोज़गार और उद्योग के बेशुमार अवसर खुले हैं। कुछ विज्ञापनों की भाषा हम भूल नहीं पाते--''वाह ! सुनील बाबू, ऐसी गाड़ी, ऐसा घर. . .?" किंतु, ''गन्ने के खेत में टमाटर कीत्थे'' जैसी दृश्ययुक्त भाषा समझनेवालों को आहत ही कर सकती है। विज्ञापन में स्त्री शरीर का दुरूपयोग सामाज़िक विषय है। इसलिए उस विषय पर यहाँ चुप रहना ही उचित है।

मित्रो, विज्ञापन तो भाषा का 'बिग बाजार' है। और यह सेल का फोरम अथवा हंगामा है। "बस जिंदगी की दो बूँद" और बिग बी की अदा; कहने का जादू।

हमने भारतीय जीवन बीमा का विज्ञापन सुना ही है--"जिंदगी के साथ भी, जिंदगी के बाद भी"। एक बिस्किट का प्रचार करता बच्चा बोलता है टी वी के पर्दे पर--"हक से माँगो"। लाखों बच्चे हक से माँगकर प्रिया गोल्ड बिस्किट कंपनी की बिक्री ऐसी बढ़ाते कि "देखनेवाले देखते रह जाते हैं"--याद करें-- "ढूँढ़ते रह जाओगे"। यह विज्ञापन ही है जो ठंडे का तड़का लगा सकता है और "ब्रू" से खुशियां शुरू करवा सकता है। कई विज्ञापन काव्यात्मक तरीके से शुरू होते हैं, जैसे "घर बनता है सपनो से, अपनों से और एशियन टाइल्स से"।

अमिताभ बच्चन की शख्सियत, उनकी आवाज का असर और अंदाज हम सब सिनेमा से लेकर टी वी पर देख ही रहे हैं--"कुछ तो है एकस्ट्रा", अमिताभ में एकस्ट्रा देखिए या ऐवरेडी बैटरी में, किंतु, क्या बल्ला के अलावा भाषा ने व्यापार, के सचिन को "मास्टर ब्लास्टर नहीं बनाया"। विज्ञापन की भाषा में छुआछूत और कोई वाद काम नहीं करता; यहां तो बस "टाईम प्लीज़" और एक "ब्रेक" चाहिए। ज़रा इन अभिव्यक्तियों को याद करें और भाषा के विपणन का भी अनुमान लगाएं--

(1) आजतक में प्रस्तुत है अभी तक की खबरें।

(2) देखें, फिर खास खबर, रहें न बेखबर--आँखों देखी।

(3) आप रहें होशियार, हम करते हैं आपको खबरदार--सनसनी।

सनसनी की सनसनी ध्वनि और प्रकाश के साथ-साथ क्या एंकर श्रीवर्धन त्रिवेदी की भाषा और भंगिमा के कारण नहीं फैलती? सिटी सिक्सटी, क्राइम रिपोर्टर, वारदात, स्टार सवेरा, सास बहू और साजिश आदि विषय और प्रस्तुति के अलावा भाषा का विपणन भी तो है। टी वी "हर खबर की पूरी खबर" के बहाने भाषा बेचता है। प्रमोद महाजन की दर्दनाक मौत और दर्दनाक नहीं हो जाती जब स्टार न्यूज़ कहता है "प्रमोद जिंदगी की जंग हार गए"। क्या मौत का मातम, जीत का जश्न, जिंदगी का जिंदाबाद जैसे जुमले खुद विज्ञापन और मीडिया की भाषा का जिंदाबाद नहीं करते? जब टी वी पर दृश्य के साथ धुन बजती थी "जंगल जंगल पता चला है, चड्ढी पहन के फूल खिला है" तो न जाने कितने लाखों-करोड़ों बच्चों के चेहरे फूल की तरह प्रस्फुटित हो जाते थे। यही तो मीडिया में "अंदर की बात है"। यहां धोनी कभी धुनते हैं तो कभी धोते हैं। मेरी गोल्ड बिस्किट के विज्ञापन की तरह यदि इस भाषा में "डिप नहीं किया तो चाय क्या पिया?" युवाओं को एस एम एस की भाषा से तौबा करके ज़रा इन करिश्माई भाषा की संभावनाओं पर गौर करना चाहिए। विज्ञापन हमें दिखाते हैं "कुछ मीठे-मीठे सपने, कुछ नमकीन सच।" खाने में मस्त खिलाने में ज़बरदस्त। बिरला सीमेंट हर इमारत की जान है, और विज्ञापन में जाहिर होते हैं भाषा के प्राण। भाषा का यह लोक प्रतिभा पुरुषों का लीलाक्षेत्र है और प्रभाव का क्रीड़ा-क्षेत्र। यह मैदान है जहाँ कोई छक्के लगा रहा है तो कोई चौके। फिर किसी-किसी को तो रन के लाले भी पड़े रहते हैं। मेरी कामना है कि नई पीढ़ी के अधिक से अधिक लोग यहां भी सानिया मिर्जा और वीरेंद्र सहवाग बनकर आएं।

आज के परिवेश में मीडिया और विज्ञापन कंप्यूटर द्वारा रचित माया का संसार है। कंप्यूटर परंपरागत ज्ञान और समझ की सभी सीमाओं को तोड़ चुका है। इन्फॉर्मेशन टेक्नॉलाजी कहिए अथवा सूचना क्रांति--विश्वव्यापी विस्फोट बनकर इसने सामाजिक और सांस्कृतिक प्राथमिकताओं को एक विचित्र प्रकार के गड़बड़झाले से जोड़ दिया है। सूचना-क्रांति बाज़ार के समीकरणों में काम करता है जिसका प्रतिफल है कि विज्ञापन में अश्लीलता, अशिष्टता और अभद्रता। इसके साथ ही दृश्य-शब्दात्मक भौंडापन और नंगई सामाजिक मूल्यों की तरह परोसी जा रही है। ऐसे विज्ञापन हमारे जीवन तथा हमारे घर में घर बना चुके हैं। बच्चे, बूढ़े, जवान, युवतियाँ, गृहणियाँ, तथा तमाम महिलाएँ मज़ा ले-लेकर विज्ञापन पीती रहती हैं। दूरदर्शन के व्यावसायिक अंतराल वस्तुओं का जादुई संसार और सम्मोहक दुनिया दिखाते हैं। उनका उद्देश्य जन-शिक्षण उतना नहीं होता जितना होता है हमारी जेब पर आक्रमण करना और बैंक ऋणों का बोझ हमपर लादना। एक अजीब चकाचौंध और चाकचिक्य बोलते हैं विज्ञापन। सच कहें तो व्यावसायिकता की आँधी विज्ञापन की तेज़ हवाएं पैदा करती हैं और उसके पीछे पूंजीवाद का फितूर काम करता है। इन सबको समझदारी से लेने का माध्यम भी वही भाषा है जो इन्हें अकूत संभावनाएँ दे रही हैं। विज्ञापनकर्ता और विज्ञापन भोक्ता दोनों को एक संतुलन में, एक अच्छे स्वास्थ्य में चीजों को लेना सीखना चाहिए। ■

381 HA/12—4A

भारत का वर्तमान सामाजिकार्थिक परिदृश्य और हिंदी

–अजयेंद्रनाथ त्रिवेदी*

अपनी बात के आरंभ में भारत के वर्तमान सामाजिकार्थिक परिदृश्य को आपके सामने रखना चाहूंगा। नब्बे का दशक समकालीन भारत के सामाजिकार्थिक परिदृश्य में एक उल्लेखनीय पटपरिवर्तन की तरह आया। इस दशक की शुरुआती वर्ष में केंद्र में कांग्रेस नीत सरकार बनी तथा वैश्वीकरण, उदारीकरण तथा निजीकरण की बयार बही। इन्हीं शुरुआती वर्षों में अयोध्या के आंदोलन का चरमोत्कर्ष भी आया। इन दो घटनाओं ने हमारे सामाजिकार्थिक परिदृश्य पर दूरगामी प्रभाव डाला। यदि ध्यान से देखा जाए तो पता चले कि किस प्रकार विगत दो दशकों के दौरान हमारे समस्त सामाजिकार्थिक समारंभ इन्हीं दोनों घटनाओं से प्रभाव में अथवा उनसे मुक्ति की चेष्टा में हो रहे हैं।

वैश्वीकरण, उदारीकरण तथा निजीकरण की प्रक्रिया के परिपक्व होने के संकेत छोटे-बड़े नगरों में उग आये मौलों, एक्सप्रेस हाइवे के संजालों, कंप्यूटर क्रांति के उत्सवों तथा मोबाइल टेलीफोनी के नित-नये पदक्षेपों आदि से मिल रहे हैं। कहा जा रहा है कि यह सारा परिवर्तन प्रक्रिया के आरंभ होने का ही संकेत मात्र है। इसके अंजाम तक पहुंचते-पहुंचते क्या दृश्य बनेगा इसकी कल्पना अभी नहीं की जा सकी है। हमारी जीवन शैली में अचानक ही प्रकट हो आए परिवर्तन, हमारे इतिहासबोध में स्थापित होने को मचल रही अनेकानेक विजातीय एवं असहज सी लग रही मान्यताएं एवं हमारी भाषाओं को आक्रांत कर रहीं अनेक प्रवृत्तियां यदि कोई संकेत हैं तो कहा जा सकता है कि भारत के वर्तमान सामाजिकार्थिक परिदृश्य में तीव्र परिवर्तन हो रहा है।

वर्ष 1992 में अयोध्या में जो हुआ और उसकी कड़ी में तब से आज तक जो कुछ होता आ रहा है उसने हमारी राजनीति को लगातार प्रभावित कर रखा है। फलस्वरूप हमारा सामाजिक गठन क्रमशः सुस्त होता चला गया है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि इस सुस्ती के कारण अनेक विसंगतियों को सिर उठाने का अवसर अनायास ही मिल गया है।

वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः का घोष देश की एकता अखंडता की रक्षा की मौखिक कवायद में दब कर रह गया। पक्ष तथा विपक्ष ने आरोपों-प्रत्यारोपों की जो झड़ी लगाई उसमें संविधान तथा देश के संघीय ढांचे का चेहरा भी विद्रूप होता हुआ नज़र आया। दलीय राजनीति कुछ समय के लिए सांप्रदायिक राजनीति के प्रवक्ताओं की तरह व्यवहार करने लगी। इससे देश के सुसंतुलित सांप्रदायिक ताने-बाने को बहुत क्षति पहुंची। स्वतंत्र न्यायपालिका तथा मुखर जनमत ने बहुत हद तक इस क्षति की पूर्ति की है, पर घाव के निशान तो मिटते-मिटते मिटेंगे न।

भारत के वर्तमान सामाजिकार्थिक परिदृश्य पर एक पर्यवेक्षी दृष्टि डालने पर मोटे तौर पर इसकी दो प्रवृत्तियां रेखांकित की जा सकती हैं।

1. भारत विविधता में एकता का देश है अतः इसकी विविधता का प्रबंधन किया जाना चाहिए, तथा
2. इसके लिए द्रुत तथा समावेशी विकास का ब्ल्यू प्रिंट तैयार किया जाना चाहिए। न्वाचारिता (Innovation) को बढ़ावा देना इसके लिए कारगर हो सकता है।

भारत की शक्ति इसकी विविधता में निहित है। यह विविधता, नृतात्विक, जलवायविक, भौगोलिक, पारिस्थितिक तथा धार्मिक आदि कई आयामों में पाई जाती है। भारत की विविधता ही इसकी शक्ति है--एक नारे की तरह यह वाक्य अब तक इतनी बार, इतनी तरह से दुहराया जा चुका है कि इसका भाव ही तिरोहित हो गया-सा लगता है। अनेकानेक आयोगों ने भारत की भावात्मक एकता को मज़बूत करने के लिए अनेक सुझाव दिए हैं। इनमें मौलिकता का सर्वथा

* वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) यूको बैंक, अंचल कार्यालय, शिलपुलपुखुरी, गुवाहाटी : 781003

अभाव रहा है । अत: कुछ सकारात्मक परिणाम सामने नहीं आ सका है । भारत की राष्ट्रीय एकता को वर्तमान में जिन संकीर्ण स्वार्थों से खतरा दीख रहा है, उनसे निपटने के लिए भारत की विविधता के कुशल प्रबंधन की तत्काल आवश्यकता है ।

विविधता के सुप्रबंधन के लिए आवश्यक है कि विविधता के लिए सम्मान की भावना जगाई जाए तथा उसको समाविष्ट करने के अवसर उपलब्ध कराए जाएं । जन्म, जाति, भाषा, खानपान तथा अन्य कारणों से यदि कोई अलग तरीके से आचरण करता है तो इसमें उस पर हंसने अथवा उसे हीन समझने की प्रवृत्ति को बढ़ावा नहीं देना चाहिए । इससे आपसी फूट को अवसर मिलता है तथा अंतत: देश की एकता कमज़ोर होती है । भारत में, विशेषकर पूर्वोत्तर भारत में, ऐसा हुआ भी है । यहां के पर्वतीय तथा मंगोलियाई मूल के निवासियों को भारत के शेष भाग में कभी-कभी अभारतीय कह कर पहचाना जाता है । यही नहीं, किसी-किसी अंचल को अविकसित तथा पिछड़ा मानकर वहां के निवासियों को नीचा दिखाने की चेष्टा की जाती है। ऐसी प्रवृत्ति को हतोत्साहित किया जाना चाहिए । यदि ऐसा नहीं किया जाता है तो समूह में अलगाव का भाव जाग उठता है । इस भाव को विदेशी शक्तियां पोषित करती हैं तथा उससे राजनीतिक लाभ लेने की चेष्टा करती हैं ।

भारत की विविधता के प्रबंधन की तरह ही आवश्यक है यहां नवाचार को बढ़ावा देना । नवाचार का अर्थ है पारंपरिक ज्ञान में नये अनुभवों के समावेश से मूल्यवर्धन किया जाना । यह हज़ारों स्वप्न देखने और उनको क्रियान्वित करने का जज़्बा है । ऐसे जज़्बेदारों ने भारत के आर्थिक परिदृश्य पर महत्वपूर्ण हस्तक्षेप किए हैं । इनमें जे आर डी टाटा, विक्रम साराभाई, एस नारायणमूर्ति, वी. कुरियन, आईटीसी, आईसीआईसीआई आदि व्यक्तियों तथा संस्थाओं की गणना की जा सकती है । देश के आर्थिक विकास के लिए नई खोजों के साथ-साथ नवाचार को बढ़ावा देना आज की सबसे बड़ी ज़रूरत है । भारत में नवाचार की स्थिति पर टिप्पणी करते हुए एक लेख में डॉ. माशेलकर ने विनोदपूर्वक कहा है : ''In India people who take risk are shot whereas in developed countries people who do not take risk are shot. He adds 'I' in India stands for imitiation and inhibition not innovation"

इस मामले में हम अपने एक पड़ोसी से सीख सकते हैं । यह पड़ोसी हमारे बाज़ार में दीपावली के दीयों से लेकर बच्चों के खिलौनों तक का निर्यात करता है । यही नहीं आफिस स्टेशनरी के रूप में छोटी पेपर क्लिप तथा रेखागणित का औजार बक्स तक अब उसी देश से हम मंगाने लगे हैं । ये सारे उत्पाद नवाचार के परिणाम हैं और इसी लिए काफी सस्ते तथा आकर्षक बन पड़े हैं । नवाचार को आर्थिक विकास का वाहक बनाकर यदि हमारे पड़ोसी देश समृद्धि की सीढ़ियां चढ़ सकते हैं तो हमें इस दिशा में पहल करने में संकोच कैसा? नवाचारी भारत ही अपनी बढ़ती जनसंख्या के लिए अन्न, शिक्षा, पेयजल तथा स्वास्थ्य की पर्याप्त व्यवस्था कर सकता है । इसके लिए सरकार की हर पहल का स्वागत किया जाना चाहिए ।

भारत की विविधता नवाचार के लिए अनुकूल अवसर उपलब्ध कराती है । नवाचार के लिए विचारधाराओं, मान्यताओं तथा प्रचलनों की विभिन्न धाराओं का समन्वय आवश्यक है । इसी से नवाचार का मार्ग प्रशस्त होगा । विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के इस युग में नवाचार का महत्व बहुत बढ़ गया है । एक शोध से पता चला है कि लगभग 1000 नए विचारों की परीक्षा की गई तो उनमें से कुल 100 के आसपास विचार ही व्यवहार्य समझे गए । इनमें एक दर्जन से भी कम ही विचार ऐसे निकले जिनको पूरी तरह लाभदायक समझा जा सकता था । इस दृष्टांत से पता चलता है कि विकास के लिए नवाचार की ओर बढ़ते जाने की जितनी आवश्यकता है । विश्व के स्तर-निरूपण में जिस नयी प्रवृत्ति की बात कही जा रही है उसको प्राकृतिक संसाधन, पूंजी तथा ज्ञान से संपन्न देश निरूपित करेंगे ऐसा वे मानते हैं । इस लिहाज़ से भारत को काफी बढ़त मिलने वाली है । भारत की प्राकृतिक तथा मानव संसाधनगत विविधता ने हमें एक मौका दिया है । आवश्यकता है स्वयं को इसके योग्य सिद्ध करने की । इसके लिए सबसे आवश्यक है माडलों के आयात तथा उनका अंधानुकरण की प्रवृति की समीक्षा करने की और अपना रास्ता स्वयं बनाने की । इसके लिए समावेशी विकास करने तथा समान अवसर प्रदान करके विकास की प्रक्रिया में सबको साझीदार बनाना सहायक हो सकता है ।

उक्त चर्चा से यह बात स्पष्ट होती है कि सामाजिकार्थिक मोर्चों पर आगे बढ़ने के लिए भारत को एक बड़ी पहल करने की आवश्यकता है । इसके लिए समावेशी चिंतन तथा मौलिक समझ की आवश्यकता है । लोकतांत्रिक शासन

प्रणाली को अपनाकर हमने एक ठोस पहल तो पहले ही कर ली है। परंतु सार्वभौम शिक्षा, प्रशासनिक सुधार तथा शासकीय पारदर्शिता के अभाव में भ्रष्टाचार का बोलबाला हो गया है। इससे लोकतंत्र की जड़ों को नुकसान पहुंचा है। प्रसन्नता तथा संतोष की बात है कि भारत ने सूचना तथा शिक्षा के अधिकार, रोजगार की गारंटी, स्वास्थ्य तथा फसल का बीमा आदि सांवैधानिक प्रावधानों के द्वारा देश की सामाजिकार्थिक दशा सुधारने का प्रयास किया है। परंतु इस दिशा में जितना किया गया है उससे कहीं ज्यादा किया जाना अभी बाकी है।

अब हम इस परिप्रेक्ष्य में हिंदी की भूमिका पर विचार करना चाहेंगे। भारत के परिप्रेक्ष्य में हिंदी को एक भाषा मात्र ही नहीं समझा जाना चाहिए। यह एक दर्शन है तथा एक विकल्प भी है--समर्थ भारत को गढ़ने का। हिंदी, जैसा कि अमीर खुसरो (मध्यकालीन दरबारी कवि तथा संगीतकार) ने कहा था हिंदी हिंदोस्तान को समझने की भाषा के रूप में विकसित हुई। उनकी यह उक्ति--मैं हिंदोस्तान का तूती हूं तुम मुझ से हिंदवी में पूछो मैं तुमको अच्छी-अच्छी बातें बता सकूंगा--आज भी हमारी जुबान पर है। अमीर खुसरो तुर्क मूल के थे, फारसी तथा तुर्की अच्छी तरह लिखते-बोलते थे। मां भारतीय थीं। उन्होंने भारत के विशेष परिप्रेक्ष्य में मां की भाषा के प्रभाव में एक खास भाषा शैली का चलन शुरू किया। जिसे उन्होंने हिंदवी कहा। इसमें अनेक स्थानीय भाषाओं/बोलियों के शब्दों का प्रयोग किया गया था।

हिंदी को संपूर्ण भारतीय संदर्भ में समझना आवश्यक है जिसने भारत की मनीषा को सदैव जागृत तथा रचनाशील बनाये रखा। भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से तो हिंदी प्राकृत से निकली एक भाषा मात्र है, जो देवनागरी लिपि में लिखी जानेवाली बहुसंख्य भारतीय की भाषा है। परंतु हिंदी इससे आगे निकल चुकी है। इसमें मध्यकालीन भारत की काव्य-धारा बहती है तथा जो तब से लेकर आजतक भारत की सबसे समर्थ तथा प्रभावी संपर्क भाषा बनी हुई है। इसमें भारतीय इतिहास के अनछुए पहलू, लोकजीवन के राग-रंज, मनोरंजन जगत की सभी भंगिमाएं तथा सूचना एवं संचार की सारी गतिविधि संचालित हो रही है।

भारत के समक्ष समकालीन आर्थिक समस्याओं पर भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर डॉ. विमल जालान की बात मुझे यहां प्रासंगिक दिखती है। उन्होंने कहा ''इस (आर्थिक विकास) दिशा में आगे बढ़ने में हमारे सम्मुख जो समस्या है वह कुछ तो मनोवैज्ञानिक और कुछ वास्तविक है। लेकिन है वह अतीत का भार ही। हमारा अधिकांश आर्थिक चिंतन ब्रिटिश राज के जमाने में ही हुआ। औपनिवेशिक अनुभवों तथा औद्योगिक एवं गैर-औद्योगिक देशों के बीच व्यापार तथा निवेश से जुड़ी युद्धोत्तर वास्तविकताओं ने ही हमारे स्वातंत्र्योत्तर सर्वानुमति को आकार दिया था ....अंग्रेज चले गए और भारत भी बदल गया है। लेकिन हमारे चिंतन में, कि क्या सही है क्या गलत, बदलाव धीमा रहा है... आज भी हमारी राजनीतिक बहसों में 'स्वदेशी', 'आत्मनिर्भरता', 'देशी उद्योग', 'विदेशियों से मुक्ति' जैसे पुराने मूल्यों एवं जुमलों की ही प्रधानता होती है। इक्कीसवीं सदी की तैयारी करने के क्रम में, मुझे उम्मीद है कि हम राष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों पर बहस करने की नई शब्दावली विकसित कर लेंगे।

communicate effectively, it has to be taught properly and to be acquired in an invironment where it is used correctly. This does not exist, and is unlikely to come about, in the case of the large masses in this country. At most, they may acquire a smattering of English poorly taught and badly learnt. It science is then propagated through the medium of English, the only chance an individual has of acquitting himself satisfactorily is to memorise. He does not have enough knowledge of the language to have properly understood what has been taught to him nor to express himself. He will depend entirely on what has been in form, in content and in language with no deviations. And this is completely contrary to the whole spirit of science, which is of free independent thinking and expression.

विद्यमान सामाजिकार्थिक परिदृश्य के मद्दे नज़र हिंदी का कोई विकल्प नहीं है। नेशनल यूथ रीडरशिप सर्वे 2009 में समकालीन भारतीय संस्कृति के संबंध में अनेक चौंकाने वाली बातें सामने आयीं हैं। वर्ष 2001 की जनगणना के आंकड़ों के आधार पर इस सर्वे ने बताया है कि ग्रामीण भारत जहां देश की आबादी के 72.8% लोग निवास करते हैं, हिंदी सबसे ज्यादा पढ़ी जाती है। मध्य, उत्तर तथा पूर्वी भारत में 39.5% लोगों की पसंद हिंदी ही है। शहरी क्षेत्र

शेष पृष्ठ 20 पर

भूमण्डलीकरण के दौर में हिंदी के बढ़ते कदम

–कृष्ण कुमार यादव*

भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, उन्नत प्रौद्योगिकी एवं सूचना-तकनीक के बढ़ते इस युग में सबसे बड़ा खतरा भाषा, साहित्य और संस्कृति के लिए पैदा हुआ है। इतिहास साक्षी है कि जब-जब समाज पथभ्रमित हुआ है या अपसंस्कृति हावी हुई है तो साहित्य ने ही उसे संभाला है। कहा भी गया है कि—"साहित्य समाज का दर्पण है।" साहित्य का संबंध सदैव संस्कृति से रहा है और हिंदी भारतीय संस्कृति की अस्मिता की पहचान है। संस्कृत वाङ्मय का पूरा सांस्कृतिक वैभव हिंदी के माध्यम से ही आम जन तक पहुँचा है। हिंदी का विस्तार क्षेत्र काफी व्यापक रहा है, यहाँ तक कि उसमें संस्कृत साहित्य की परंपरा और लोक भाषाओं की वाचिक परंपरा की संस्कृति भी समाविष्ट रही है। स्वतंत्रता संग्राम में भी हिंदी और उसकी लोकभाषाओं ने घर-घर स्वाधीनता की जो लौ जलायी वह मात्र राजनैतिक स्वतंत्रता के लिए ही नहीं थी, वरन् सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा के लिए भी थी। भारत में साहित्य, संस्कृति और हिंदी एक दूसरे के दर्पण रहे हैं ऐसा कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा।

यह एक सच्चाई है कि स्वतंत्रता से पूर्व हिंदी ने अंग्रेजी राज के विरुद्ध लोगों को जोड़ने का कार्य किया पर स्वतंत्रता पश्चात् उसी अंग्रेजी को हिंदी का प्रतिद्वंदी बना दिया गया। भारत सदैव से विभिन्नताओं का देश रहा है। आज संसार भर में लगभग 5000 भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। उनमें से लगभग 1652 भाषाएँ व बोलियाँ भारत में सूचीबद्ध की गई हैं जिनमें 63 भाषाएँ अभारतीय है। चूँकि इन 1652 भाषाओं को बोलने वाले समान अनुपात में नहीं हैं अत: संविधान की आठवीं अनुसूची में 18 भाषाओं को शामिल किया गया जिन्हें देश की कुल जनसंख्या के 91 प्रतिशत लोग प्रयोग करते हैं। इनमें भी सर्वाधिक 46 प्रतिशत लोग हिंदी का प्रयोग करते हैं अत: हिंदी को राजभाषा के रूप में वरीयता दी गई। अधिकतर भारतीय भाषाएं दो समूहों से आती हैं—आर्य भाषा परिवार की भाषाएं और द्रविड़ भाषा परिवार की भाषाएं। द्रविड़ भाषाओं व बोलियों का एक अलग ही समूह है और आर्य भाषाओं के आगमन के बहुत पहले से ही भारत में उनका उपयोग किया जा रहा है। तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम प्रमुख द्रविड़ भाषाएं हैं। आर्य भाषा में सबसे प्राचीन संस्कृत भाषा (2500 ई. पू.- 500 ई. पू.) मानी जाती है। वेदों की रचना भी संस्कृत में की गई। संस्कृत माने परिमार्जित अथवा विशुद्ध। संस्कृत किसी समय जनभाषा थी पर व्याकरण के कठोर नियमों और उच्चारण की कठिनता के कारण संस्कृत विशिष्ट वर्ग की भाषा बनकर रह गई। संस्कृत के साथ ही उस समय कई लोकभाषाएँ प्रचलित थीं, जिनसे संस्कृत के विभिन्न रूप प्रचलित हुए। संस्कृत के इन विभिन्न रूपों से विभिन्न प्राकृतों व अपभ्रशों का विकास हुआ और अंत में हिंदी आदि प्रांतीय भाषाओं (1000 ई. के लगभग) का विकास हुआ। कुल 7 अपभ्रंशों से आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास माना जाता है, जिसमें शौरसेनी से पश्चिमी हिंदी (खड़ी बोली, ब्रजभाषा, बांगरू, कन्नौजी व बुन्देली बोलियाँ), राजस्थानी (मारवाड़ी, जयपुरी, मालवी व मेवाती बोलियाँ), और गुजराती भाषा, महाराष्ट्री से मराठी भाषा (दक्षिणी, कोंकणी, नागपुरी व बरारी बोलियाँ), मागधी से भोजपुरी मैथिली, मगही, बंगला, उड़िया व असमी भाषाएं, अर्ध-मागधी से पूर्वी हिंदी (अवधि, बघेली व छत्तीसगढ़ी बोलियाँ), पैशाची से लहँदी, ब्राचड से सिंधी व पंजाबी भाषा तथा खस से पहाड़ी भाषाओं का उद्भव हुआ। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय हिंदी भाषा हुई। कबीर की निर्गुण भक्ति एवम् भक्ति काल के सूफी-संतों ने हिंदी को काफी समृद्ध किया। कालांतर में मलिक मुहम्मद जायसी ने पद्मावत और गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस की अवधी में रचना कर हिंदी को और भी जनप्रिय बनाया। अमीर खुसरो ने इसे 'हिंदवी' गाया तो हैदराबाद के मुस्लिम शासक कुली कुतुबशाह ने इसे

* **निदेशक डाक सेवाएं, भारतीय डाक सेवा अंडमान व निकोबार द्वीप समूह, पोर्ट ब्लेयर-744101**

381 HA/12—5A

'जबाने हिंदी' बताया। स्वतंत्रता तक हिंदी ने कई पड़ावों को पार किया व दिनों-ब-दिन और भी समृद्ध होती गई। सन् 1741 में राम प्रसाद निरंजनी द्वारा खड़ी बोली में प्रथम ग्रंथ 'भाषा योग्यवासिष्ठ' लिखा गया तो सन् 1796 में देवनागरी लिपि में टाइप की गई प्रथम प्रिंटिंग तैयार हुई। सन् 1805 में फोर्ट विलियम कॉलेज, कलकत्ता के लिए अध्यापक जान गिलक्राइस्ट के आदेश से लल्लू लाल जी ने खड़ी बोली गद्य में 'प्रेमसागर' लिखा जिसमें भागवत दशम्स्कंध की कथा वर्णित की गई। यह अंग्रेजों द्वारा भारतीय संस्कृति को हिंदी के माध्यम से समझने का एक शुरूआती प्रयास था। सन् 1826 में कानपुरवासी पं. जुगल किशोर ने हिंदी का प्रथम समाचार पत्र 'उदंत मार्तंड' निकालना शुरू किया, जो एक वर्ष बाद ही सहायता के अभाव में बंद हो गया। सन् 1835 एक निर्णायक वर्ष था जब ईस्ट इण्डिया कंपनी की सरकार ने मैकाले की अनुशंसा पर 7 मार्च 1835 को अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार का प्रस्ताव पास कर दिया और धीरे-धीरे अंग्रेजी के स्कूल खुलने लगे। हिंदी को अलग-थलग करने का एक अन्य कारण अंग्रेजी की 'फूट डालो और राज करो' की नीति भी थी। अंग्रेजी शिक्षा का प्रस्ताव पास होने के बाद भी अदालतों के कामकाज की भाषा फारसी ही रही। सर सैयद अहमद खान ने भी हिंदी को एक गँवारी बोली बताकर अंग्रेजों का उर्दु की ओर झुकाने की लगातार चेष्टा की। इस बीच सन् 1893 में बनारस में 'नागरी प्रचारिणी सभा' का गठन इन सबकी प्रतिक्रिया स्वरूप हिंदी को एक भाषा के रूप में बढ़ावा देने हेतु किया गया। बनारस के राजा शिव प्रसाद भी हिंदी की रक्षा के लिए उठ खड़े हुए और निरंतर यत्नशील रहे। सन् 1913 में शिक्षा विभाग के इंस्पेक्टर के रूप में राजा शिवप्रसाद ने हिंदी को विचलन से बचाने हेतु ठेठ हिंदी का आश्रय लिया जिसमें फारसी-अरबी के चालू शब्द भी शामिल थे। सन् 1913 में ही हिंदी में पहली मूक फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' का निर्माण हुआ तो सन् 1931 में हिंदी की पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' का निर्माण किया गया। इस बीच राजनैतिक स्तर पर भी हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने हेतु कई समाज सुधारकों व साहित्यकारों ने यत्न किए। गुजराती कवि नर्मद (1833-86) ने हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाने का प्रस्ताव किया तो सन् 1918 में मराठी भाषी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने कांग्रेस अध्यक्ष की हैसियत से घोषित किया कि—हिंदी भारत की राजभाषा होगी। उसी समय देश की राजनीति में एक नक्षत्र की भांति तेज़ी से उभर रहे गुजराती भाषी महात्मा गाँधी ने भी कहा—हिंदी ही देश को एकसूत्र में बाँध सकती है। मुझे अंग्रेजी बोलने में शर्म आती है और मेरी दिली इच्छा है कि देश का हर नागरिक हिंदी सीख ले व देश की हर भाषा देवनागरी में लिखी जाए। उन्होंने इसको तार्किक रूप देते हुए कहा कि—''सभी भाषाओं को एक ही लिपि में लिखने से वही लाभ होगा जो यूरोप की तमाम भाषाओं को एक ही लिपि में लिखे जाने से हुआ। इससे तमाम यूरोपीय भाषाएं अधिक विकसित और समुन्नत हुईं।'' 1918 में इंदौर में हिंदी साहित्य सम्मेलन सभा में महात्मा गाँधी ने दक्षिण भारत में हिंदी प्रचारकों को भेजा, इनमें स्वयं उनके पुत्र देवदास गाँधी भी थे। 1919 के बाद तो गाँधी जी ने कांग्रेस को अपने सभी कार्य हिंदी में करना एक तरह से बाध्यकारी बना दिया। उन्होंने यहाँ तक कह दिया कि जिसे हिंदी नहीं आती उसे कांग्रेस के अधिवेशनों में बोलने का अवसर नहीं दिया जाएगा। इसी से प्रभावित होकर सरदार पटेल ने 1919 में अहमदाबाद के कांग्रेस अधिवेशन में अपना स्वागत भाषण हिंदी में दिया और अधिवेशन के स्वागत मंत्री पी.जी. मावलंकर, जो कि कालांतर में प्रथम लोकसभा अध्यक्ष बने, ने अधिवेशन के सभी दस्तावेज हिंदी में तैयार किए। स्वामी दयानन्द सरस्वती, केशव चंद्र सेन, सुभाष चंद्र बोस, आचार्य कृपलानी, चक्रवती राजगोपालाधारी जैसे अनेक अहिंदी भाषी नेताओं ने हिंदी को भारत की राजभाषा बनाने की पैरवी की। 20 दिसंबर, 1928 को कलकत्ता में राजभाषा सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए सुभाष चंद्र बोस ने देश के प्रत्येक नागरिक विशेषकर नवयुवकों से हिंदी सीखने की अपील की तथा इस बात पर खेद भी व्यक्त किया कि वे स्वयं अच्छी हिंदी नहीं बोल पाते हैं। 1935 में मद्रास राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में सी. राजगोपालाचारी ने हिंदी शिक्षा को अनिवार्य कर दिया। 1935 में ही बेल्जियम के नागरिक डॉ. कामिल बुल्के इसाई धर्म प्रचार के लिए भारत आए पर फ्रेंच, अंग्रेजी, फ्लेमिश, आयरिश भाषाओं पर अधिकार होने के बाद भी हिंदी को ही अभिव्यक्ति का माध्यम चुना। अपने हिंदी ज्ञान में वृद्धि हेतु उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. किया और तुलसी दास को अपने प्रिय कवि के रूप में चुनकर 'रामकथा उद्भव और विकास' पर डी. फिल की उपाधि भी प्राप्त की। निश्चितत: स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में हिंदी राष्ट्रीय आंदोलन और भारतीय संस्कृति की अभिव्यक्ति की भाषा बनी।

381 HA/12—5B

यदि हम व्यवहारिक धरातल पर बात करें तो हिंदी सदैव से राजभाषा, मातृभाषा व लोकभाषा रही है पर दुर्भाग्य से हिंदी कभी भी राजप्रेयसी नहीं रही । स्वतंत्रता आंदोलन में जनभाषा के रूप में लोकप्रियता, विदेशी विद्वानों द्वारा हिंदी की अहमियत को स्वीकारना, तमाम समाज़ सुधारकों व महापुरुषों द्वारा हिंदी को राजभाषा/राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की बातें, पर अन्ततः संविधान सभा ने तीन दिनों तक लगातार बहस के बाद 14 सितंबर 1949 को पंद्रह वर्ष तक अंग्रेजी जारी रखने के परंतुक के साथ ही हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया । राष्ट्रभाषा के सवाल पर संविधान सभा में 300 से ज्यादा संशोधन प्रस्ताव आए । जी. एस. आयंगर ने मसौदा पेश करते हुए हिंदी की पैरोकारी की पर अंततः कहा कि—"हिंदी आज काफी समुन्नत भाषा नहीं है । अंग्रेजी शब्दों के हिंदी पर्याय नहीं मिल पाते ।'' यद्यपि हिंदी के पक्ष में काफी सदस्यों ने विचार व्यक्त किए । पुरूषोत्तम दास टंडन ने अंग्रेज ध्वनिविज्ञानी इसाक पिटमैन के हवाले से कहा कि विश्व में हिंदी ही सर्वसंपन्न वर्णमाला है तो सेठ गोविंद दास ने कहा कि—''इस देश में हजारों वर्षों से एक संस्कृति है । अतः यहाँ एक भाषा और एक लिपि ही होनी चाहिए ।'' आर.वी. धुलेकर ने काफी सख्त लहजे में हिंदी की पैरवी करते हुए कहा कि—''मैं कहता हूँ हिंदी राजभाषा है, राष्ट्रभाषा है । हिंदी के राष्ट्रभाषा/राजभाषा हो जाने के बाद संस्कृत विश्व भाषा बनेगी । अंग्रेजों के नाम 15 वर्ष का पट्टा लिखने से राष्ट्र का हित साधन नहीं होगा ।'' स्वयं पं. नेहरू ने भी हिंदी की पैरवी में कहा था—''पिछले एक हजार वर्ष के इतिहास में भारत ही नहीं सारे दक्षिण पूर्वी एशिया में और केंद्रीय एशिया के कुछ भागों में भी विद्वानों की भाषा संस्कृत ही थी । अंग्रेजी कितनी ही अच्छी और महत्वपूर्ण क्यों न हो किंतु इसे हम सहन नहीं कर सकते, हमें अपनी ही भाषा (हिंदी) को अपना चाहिए ।''

निश्चिततः इस आधार पर कि हिंदी भाषा समुन्नत नहीं है, राजकाज की भाषा रूप में पंद्रह साल तक अंग्रेजी को स्थान दे दिया गया । इस बात पर कालांतर में काफी बहस हुई । कुछेक का तो मानना था कि राष्ट्रीय आंदोलन के अधिकतर नेताओं की दिली इच्छा हिंदी को राष्ट्रभाषा/राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की थी पर ऐसे सदस्य जो मात्र कानूनविद् होने के नाते संविधान सभा से जोड़ दिए गए, वे अंग्रेज़ भक्त थे और उन्होंने प्रयास करके अंग्रेजी की महत्ता भारत के राजकाज व न्यायालयों पर सदैव हेतु थोप दी । आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा—''यदि अंग्रेजी अच्छी है और उसे बनाए रखना चाहिए तो अंग्रेज भी अच्छे थे, उन्हें भी राज करने बुला लीजिए ।'' यदि स्वयं ब्रिटेन में अंग्रेजी की स्थिति पर चर्चा की जाए तो जब 15वीं शताब्दी में अंग्रेजी को इंग्लैंड की राजभाषा घोषित किया गया तब यह अत्यंत अविकसित और पिछड़ी हुई भाषा थी । सन् 1066 में फ्रेंच भाषी नारमण्डों द्वारा इंग्लैंड पर कब्जा किए जाने के बाद फ्रेंच भाषा इंग्लैंड के राजकाज, न्यायालयों व उच्च वर्ग की भाषा हो गई थी । उस समय उच्च वर्गीय सार्वजनिक जीवन में अंग्रेजी का प्रयोग वर्जित था और अंग्रेजी हेय व उपेक्षित समझी जाती थी किंतु सैंकड़ों सालों के अनवरत संघर्ष के बाद अंग्रेजी 14वीं शताब्दी में ही न्यायालयों में प्रवेश पा सकी व 15वीं शताब्दी में शिक्षा का माध्यम बनी । प्रशासन, उच्च शिक्षा, विज्ञान आदि में अंग्रेजी 18वीं शताब्दी में ही पूरी तरह स्थापित हो सकी । यही कारण है कि प्रशासनिक, विधिक, साहित्य व रोजमर्रा के उपयोग के तमाम शब्द अंग्रेजी ने फ्रेंच व लैटिन से लिए । यहाँ तक कि स्वयं ब्रिटेन में हिंदी की शुरूआत प्रिंटिंग प्रेस क्रांति के साथ ही सोलहवीं शताब्दी के आरंभ में ही हो गई जब भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव पड़नी आरंभ हो चुकी थी । सन् 1560 में ब्रिटेन में देवनागरी में छपाई का कार्य आरंभ हो चुका था जबकि तब तक वह भारत में हाथ से ही लिखी जा रही थी । कालांतर में जे. विल्किंसन व जार्ज फॉस्टर ने क्रमशः श्रीमद्भागवत गीता व अभिज्ञान शकुन्तलम से प्रभावित होकर हिंदी सीखी और उनका अंग्रेजी में अनुवाद किया । सन् 1800 के दौरान स्कॉटलैण्ड के जॉन बोथनिक गिलक्रास्ट ने देवनागरी और उसके व्याकरण पर तमाम पुस्तकें लिखीं तो डॉ. एल.एफ. रूनाल्ड ने 1873 से 1877 तक भारत प्रवास के दौरान हिंदी व्याकरण पर काफी कार्य किया और लंदन से इस विषय पर एक पुस्तक भी प्रकाशित कराई । सन् 1865 में एक राजाज्ञा के तहत लंदन की रॉयल एशियाटिक सोसायटी में हिंदी सहित भारत में मुद्रित सभी भाषाओं के अखबार, पत्रिकाएं व पुस्तकें आने लगीं । ऐसे में यह कहना कि हिंदी समुन्नत भाषा नहीं थी, इसलिए उसे राष्ट्रभाषा/राजभाषा के रूप में एकाधिकार प्रतिष्ठा नहीं मिल सकती तथ्यों से परे लगता है ।

आज हिंदी भारत में ही नहीं वरन् पाकिस्तान, नेपाल बांग्लादेश, इराक, इंडोनेशिया, इजरायल, ओमान, फिजी,

इक्वाडोर, जर्मनी, अमेरिका, फ्रांस, ग्रीस ग्वाटेमाला, सउदी अरब, पेरू, रूस, कतर, म्यंमार, त्रिनिदाद-टोबैगो, यमन इत्यादि देशों में जहाँ लाखों अनिवासी भारतीय व हिंदी-भाषी हैं, में भी बोली जाती है। चीन, रूस, फ्रांस, जर्मनी, व जापान इत्यादि राष्ट्र जो कि विकसित राष्ट्र हैं की राष्ट्रभाषा अंग्रेजी नहीं वरन् उनकी खुद की मातृभाषा है। फिर भी ये दिनों-ब-दिन तरक्की के पायदान पर चढ़ रहे हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अंग्रेजी के बिना विकास नहीं हो पाने की अवधारणा को इन विकसित देशों ने परे धकेल दिया है।

यह एक कटु सत्य है कि आज वैश्विक स्तर पर हिंदी को प्रतिष्ठा मिलने के बाद भी हिंदी अपनों से ही उपेक्षित रही है। एक प्रतिष्ठित शख्सियत ने विदेशी मंच पर कहा कि—''हिंदी एक पिछड़ी भाषा है, यहाँ तक कि हिंदी में रैट और माउस हेतु के अलग-अलग शब्द नहीं हैं।'' इसी प्रकार प्रवासी भारतीयों के सम्मेलन में राष्ट्रीय सलाहकार परिषद् के सदस्य सैम पित्रोदा ने मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित राजेन्द्र सिंह द्वारा हिंदी में दिए गए भाषण पर न केवल आपत्ति की बल्कि माफी भी माँगी। क्या यह माँ व प्रेयसी के द्वंद में असलियत जानते हुए भी प्रेयसी को ज्यादा भाव दिए जाने की सोच का परिचायक नहीं है कि प्रेयसी कहीं मुझे पिछड़ा और गंवार न समझ ले? भारत की 70 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में रहती है और अभी भी भारत में अंग्रेजी-तहजीब वालों की गिनती अंगुलियों पर की जा सकती है। अधिकतर शहरी घरों में आज भी बच्चे भले ही अंग्रेजी भाषी स्कूलों में पढ़ते हों, पर क्या वाकई वे अपने माता-पिता, रिश्तेदारों और मित्रों से अंग्रेजी में बातें करते हैं। निश्चिततः इन सबके पीछे ही छुपा है हिंदी की उपेक्षा का भाव। असलियत तो यही है कि हम हिंदी अपनाना चाहते हैं पर आड़े आता है, स्टेट्स सिम्बल और समाज की यह सोच कि हिंदी रोजगार नहीं दिला सकती। राजनैतिक व प्रशासनिक नेतृत्व के शीर्ष की भाषा अंग्रेजी हो सकती है पर मध्यम व निचले पायदान पर हिंदी या अन्य क्षेत्रीय भाषाएँ ही काबिज हैं। फील्ड में काम कर रहे तमाम अधिकारियों को भी लोगों से उनकी मातृभाषा में ही संवाद करना पड़ता है। हिंदी को यदि उचित प्रतिष्ठा नहीं मिली है तो उसका एक अन्य प्रमुख कारण हिंदी पर कुण्डली मारकर बैठे साहित्यकारों-प्रकाशकों-सम्पादकों का त्रिगुट है। अपना वर्चस्व न टूटने देने हेतु यह त्रिगुट नवागन्तुकों को हतोत्साहित करता है। पैसे व चमचागिरी की बदौलत एक अयोग्य व्यक्ति समाज में प्रतिष्ठा पाता है वहीं योग्य व्यक्ति अपनी रचनाएँ लेकर संपादकों और प्रकाशकों के दरवाजे भटकता रहता है। निश्चिततः हिंदी के विकास में ऐसे कदम अवरोध उत्पन्न करते हैं।

निज भाषा उन्नति अहै, सब भाषन को मूल.....आज वाकई इस बात को अपनाने की जरूरत है। भूमण्डलीकरण एवं सूचना क्रांति के इस दौर में जहाँ एक ओर 'सभ्यताओं का संघर्ष' बढ़ा है, वहीं बहुराष्ट्रीय कंपनियों की नीतियों ने भी विकासशील व अविकसित राष्ट्रों की संस्कृतियों पर प्रहार करने की कोशिश की है। सूचना क्रांति व उदारीकरण द्वारा सारे विश्व के सिमट कर एक वैश्विक गाँव में तबदील होने की अवधारणा में अपनी संस्कृति, भाषा, मान्यताओं, विविधताओं व संस्कारों को बचाकर रखना सबसे बड़ी जरूरत है। एक तरफ बहुराष्ट्रीय कम्पनियां जहाँ हमारी प्राचीन संपदाओं का पेटेंट कराने में जुटी हैं वहीं इनके ब्राण्ड-विज्ञापनों ने बच्चों व युवाओं की मनोस्थिति पर भी काफी प्रभाव डाला है, निश्चिततः इन सबसे बचने हेतु हमें अपनी आदि भाषा संस्कृत व हिंदी की तरफ उन्मुख होना होगा। हम इस तथ्य को नक्कार नहीं सकते कि हाल ही में प्रकाशित ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी शब्दकोष में हिंदी के तमाम प्रचलित शब्दों, मसलन--आलू, अच्छा, अरे, देसी, फिल्मी, गोरा, चड्डी, यार, जंगली, धरना, गुण्डा, बदमाश, बिंदास, लहंगा, मसाला इत्यादि को स्थान दिया गया है तो दूसरी तरफ अमरीकी राष्ट्रपति जार्ज बुश ने राष्ट्रीय सुरक्षा भाषा कार्यक्रम के तहत अपने देशवासियों से हिंदी, फारसी, अरबी, चीनी व रूसी भाषाएं सीखने को कहा है। अमेरिका जो कि अपनी भाषा और अपनी पहचान के अलावा किसी को श्रेष्ठ नहीं मानता, हिंदी सीखने में उसकी रूचि का प्रदर्शन निश्चिततः भारत के लिए गौरव की बात है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने स्पष्टतया घोषणा की कि—''हिंदी ऐसी विदेशी भाषा है, जिसे 21वीं सदी में राष्ट्रीय सुरक्षा और समृद्धि के लिए अमेरिका के नागरिकों को सीखनी चाहिए।'' इसी क्रम में अमरीकी राष्ट्रपति बराक हुसैन ओबामा ने अपने चुनावी घोषणा पत्र की प्रतियां अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी और मलयालम में भी छपवाकर वितरित कीं। ओबामा के राष्ट्रपति चुनने के बाद सरकार की कार्यकारी शाखा में राजनैतिक पदों को भरने के लिए जो आवेदन पत्र तैयार किया गया उसमें 101 भाषाओं में भारत की 20 क्षेत्रीय भाषाओं को भी जगह दी गई। इनमें अवधी, भोजपुरी,

छत्तीसगढ़ी हरियाणवी, माघी व मराठी जैसी भाषाएं भी शामिल हैं, जिन्हें अभी तक भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान तक नहीं मिल पाया है । ओबामा ने रमजान की मुबारकवाद उर्दू के साथ-साथ हिंदी में भी दी। यही नहीं टेक्सास के स्कूलों में पहली बार 'नमस्ते जी' नामक हिंदी की पाठ्यपुस्तक को हाईस्कूल के छात्रों के लिए पाठ्यक्रम में शमिल किया गया है । 480 पेज की इस पुस्तक को भारतवंशी शिक्षक अरूण प्रकाश ने आठ सालों की मेहनत से तैयार की है । इसी प्रकार जब दुनिया भर में अंग्रेजी का डंका बज रहा हो, तब अंग्रेजी के गढ़ लंदन में बर्मिंघम स्थित मिडलैंड्स वर्ल्ड ट्रेड फोरम के अध्यक्ष पीटर मैथ्यूज ने ब्रिटिश उद्यमियों, कर्मचारियों और छात्रों को हिंदी समेत कई अन्य भाषाएं सीखने की नसीहत दी है । यही नहीं, अंतरराष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान हिंदी का अकेला ऐसा सम्मान है जो किसी दूसरे देश की संसद, ब्रिटेन के हाउस ऑफ लॉर्ड्स में प्रदान किया जाता है । आज अंग्रेजी के दबदबे वाले ब्रिटेन से हिंदी लेखकों का सबसे बड़ा दल विश्व हिंदी सम्मेलन में अपने खर्च पर पहुँचता है। निश्चितत: भूमण्डलीकरण के दौर में दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र, सर्वाधिक जनसंख्या वाले राष्ट्र और सबसे बड़े उपभोक्ता बाजार की भाषा हिंदी को नजर अंदाज करना अब संभव नहीं रहा । प्रतिष्ठित अंग्रेजी प्रकाशन समूहों ने हिंदी में अपने प्रकाशन आरंभ किए हैं तो बी.बी.सी., स्टार प्लस, सोनी, जी. टी. वी., डिस्कवरी आदि अनेक चैनलों ने हिंदी में अपने प्रसारण आरंभ कर दिए हैं । हिंदी फिल्म संगीत तथा विज्ञापनों की ओर नजर डालने पर हमें एक नई प्रकार की हिंदी के दर्शन होते हैं । यहाँ तक कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों के विज्ञापनों में अब क्षेत्रीय बोलियों भोजपुरी इत्यादि का भी प्रयोग होने लगा है और विज्ञापनों के किरदार भी क्षेत्रीय वेश-भूषा वे रंग-ढंग में नजर आते हैं । निश्चितत: मनोरंजन और समाचार उद्योग पर हिंदी की मजबूत पकड़ ने इस भाषा में संप्रेषणीयता की नई शक्ति पैदा की है पर वक्त के साथ हिंदी को वैश्विक भाषा के रूप में विकसित करने हेतु हमें भाषाई शुद्धता और कठोर व्याकरणिक अनुशासन का मोह छोड़ते हुए उसका नया विशिष्ट स्वरूप विकसित करना होगा अन्यथा यह भी संस्कृत की तरह विशिष्ट वर्ग तक ही सिमट जाएगी । हाल ही में विदेश मंत्रालय ने इसी रणनीति मे तहत प्रति वर्ष दस जनवरी को 'विश्व हिंदी दिवस' मनाने का निर्णय लिया है, जिसमें विदेशों में स्थित भारतीय दूतावासों में इस दिन हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया जाएगा । आगरा के केंद्रीय हिंदी संस्थान में देश का प्रथम हिंदी संग्रहालय तैयार किया जा रहा है, जिसमें हिंदी विद्वानों की पाण्डुलिपियाँ, उनके पत्र और उनसे जुड़ी अन्य सामग्रियाँ रखी जाएंगी ।

आज की हिंदी वो नहीं रही.........बदलती परिस्थितियों में उसने अपने को परिवर्तित किया है । विज्ञान-प्रौद्योगिकी से लेकर तमाम विषयों पर हिंदी की किताबें अब उपलब्ध हैं, क्षेत्रीय अखबारों का प्रचलन बढ़ा है, इण्टरनेट पर हिंदी की बेबसाइटों मे बढ़ोत्तरी हो रही है, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कई कंपनियों ने हिंदी भाषा में परियोजनाएं आरंभ की हैं । सूचना क्रांति के दौर में कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य संस्कृति को बढ़ावा देने हेतु सूचना एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के प्रतिष्ठान सी-डैक ने नि:शुल्क हिंदी साफ्टवेयर जारी किया है, जिसमें अनेक सुविधाएं उपलब्ध हैं । माइक्रोसाफ्ट ने ऑफिस हिंदी के द्वारा भारतीयों के लिए कंप्यूटर का प्रयोग आसान कर दिया है । आई.बी.एम. द्वारा विकसित साफ्टवेयर में हिंदी भाषा के 65,000 शब्दों को पहचानने की क्षमता है एवं हिंदी और हिंदोस्तानी अंग्रेजी के लिए आवाज पहचानने की प्रणाली का भी विकास किया गया है जो कि शब्दों को पहचान कर कंप्यूटर लिपिबद्ध कर देती हैं । एच.पी. कंप्यूटर्स एक ऐसी तकनीक का विकास करने में जुटी हुई है जो हाथ से लिखी हिंदी लिखावट को पहचान कर कंप्यूटर में आगे की कार्यवाही कर सके । चूँकि इण्टरनेट पर ज्यादातर सामग्री अंग्रेजी में है और अपने देश में मात्र 13 फीसदी लोगों की ही अंग्रेजी पर ठीक-ठाक पकड़ है । ऐसे में हाल ही में गूगल द्वारा कई भाषाओं में अनुवाद की सुविधा प्रदान करने से अंग्रेजी न जानने वाले भी अब इण्टरनेट के माध्यम से अपना काम आसानी से कर सकते हैं । अपनी तरह की इस अनोखी व पहली सेवा में हिंदी, तमिल, तेलगू, कन्नड़ और मलयालम का अंग्रेजी में अनुवाद किया जा सकता है । यह सेवा इण्टरनेट पर www. google. in/ translate—t टाइप कर हासिल की जा सकती है । आज हिंदी के वेब पोर्टल समाचार, व्यापार, साहित्य, ज्योतिषी, सूचना प्रौद्योगिकी एवं तमाम जानकारियाँ सुलभ करा रहे हैं। यहाँ तक कि दक्षिण भारत में भी हिंदी के प्रति दुराग्रह खत्म हो गया है । निश्चितत: इससे हिंदी भाषा को एक नवीन प्रतिष्ठा मिली है । ■

381 HA/12—6A

शब्द विकास की प्रक्रिया

–टेकचंद*

किसी भाषा के शब्दों या अक्षर के टूटने, बिगड़ने, लुप्त होने, नया रूप धारण करने, शब्द परिवर्तन आदि को शब्द विकास कहा जाता है ।

शब्द विकास के मुख्यत: निम्न स्तरों पर होने की संभावना व्यक्त की गई है :-

1. वर्ण आगम अर्थात वर्णागम ।
2. वर्ण विर्य्यय अथवा व्यत्यय ।
3. वर्ण विकार ।
4. वर्ण का विनाश अथवा लोप ।
5. अर्थ-परिवर्तन अथवा अर्थ विकास:

शब्द विकास की प्रक्रिया के इन प्रथम चारों को शब्द या पद परिवर्तन का कारण और पाँचवे को निरूक्त शास्त्र में अर्थ परिवर्तन का कारण माना गया है ।

वर्ण के संबंध में यह जान लेना चाहिए कि वर्ण के दो भेद हैं, (i) स्वर तथा (ii) व्यंजन ।

वर्णागम :

पद अर्थात् शब्द विशेष में, देखने में आता है कि अकस्मात् कहीं से कोई अक्षर या वर्ण, शब्द विशेष में परिस्थिति का अवसर पाकर जुड़ जाता है और अपना व्यवस्थित स्थान अपनी लचक आदि के कारण शब्द में बना लेता है । इस प्रकार वर्णागम् होने से शब्द-विकास माना जाता है ।

'धर्म' एक पद है, हिंदी व्याकरण में इसे शब्द भी माना गया है । 'धर्म' पद की स्थिति यहाँ 'ध+र्+म' है । अर्थात् ध्+अ =ध, र् वर्ण में, हलंत के कारण स्वर रूपी ध्वनि 'अ' का लोप है, अत: 'र' में 'अ' स्वर नहीं हैं । म्+अ =म, से सूक्ष्म स्तर पर अर्थ की स्थिति स्पष्ट है । ''धरम'' पद में यहाँ 'र' देखें तो इसमें कालक्रम या लचक के प्रभाव से कहीं से 'अ' आकर बैठ गया है । और इस तरह 'र्' 'अ' का सहारा लेकर 'र' (र्+अ =र) बन गया । स्पष्ट होता है कि 'धरम' पद में किस तरह स्वर के आगमन से शब्द-विकास हो गया ।

यदि 'कर्म' शब्द को लिया जाये तो 'कर्म' शब्द में भी 'करम' के रूप में शब्द विकास देखा जा सकता है । जन सामान्य आज भी 'धरम' और 'करम' शब्दों का ही उच्चारण करता है ।

अलोचना के भाव से न लें तो देखने में आता है कि बिहार एवं बिहार सटे क्षेत्र उत्तर-प्रदेश के लोग प्राय: ''स्पष्ट'' शब्द का प्रयोग 'अस्पष्ट' शब्द के तौर पर ही करते हैं । यदि उन्हें 'स्पष्ट' शब्द का प्रयोग करना है तो वे 'अस्पष्ट' शब्द का ही उच्चारण 'स्पष्ट' शब्द के लिए करेंगे । अर्थात् उच्चारण के आधार पर 'स्पष्ट' और अस्पष्ट शब्द में उनके लिए अंतर नहीं है, किन्तु अर्थ में भिन्नता रखते हैं । उच्चारण की दृष्टि से माना जा सकता है कि स्पष्ट शब्द में 'अ' स्वर के आ बैठने से स्वरागम के कारण शब्द का विकास माना जा सकता है ।

हिंदी भाषा में कुछ समय पूर्व तक 'बन' शब्द 'जंगल' तथा 'बनना' क्रिया रूप में अर्थात् दोनों के पर्याय के रूप में प्रयोग होता था । किन्तु कालांतर में 'ब' शब्द 'व' में परिवर्तित होकर 'जंगल' पर्याय के रूप में 'वन' शब्द बन गया जोकि मानक रूप बन चुका है । 'बन' रह गया 'बनना' शब्द के रूप में । संस्कृत भाषा में 'वन' शब्द का प्रयोग 'जंगल' के रूप में ही होता है । साधारण लोग आज भी

* हिंदी प्राध्यापक, सर्वकार्यभारी अधिकारी का कार्यालय, हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, दूसरा तल, भारतीय भाषा संस्थान, मानसंगगोत्री मैसूर-570006.

381 HA/12—6B

बोलचाल की भाषा में 'वन' शब्द के लिए 'बन' शब्द का की प्रयोग करते हैं।

व्यंजन के आगमन के कारण भी शब्द-विकास हो जाता है। कई बार व्यंजन स्वतंत्र रूप में आ जाता है तो कई बार स्वर के साथ आकर शब्द अथवा पद में परिवर्तन अथवा शब्द-विकास कर लेता है। 'बताना' से बतलाना' बन गया है। यहाँ 'ता' और 'ना' के बीच में कहीं से 'ला' आ गया है। ''दिखाना'' से ''दिखलवाना''। यही ''वर्णगम'' या 'वर्ण आगम'' कहलाता है।

वर्ण्-विपर्य्यर्या अथवा व्यत्यय :

पदों या शब्दों में,,स्वर या व्यंजन के स्थान परिवर्तन अथवा इधर-उधर होने को '' वर्ण विपर्य्यया'' अथवा ''वर्ण-व्यत्यय'' कहते हैं। जिसका प्रभाव शब्द विकास के होने में देखा जाता है। उदाहरण स्वरूप संस्कृत के शब्द 'हिंस' को यदि देखें तो 'सिंह' शब्द बन गया। 'स' इधर और 'ह' उधर अर्थात् स्थान परिवर्तन हो गया। 'जंघा' से 'जाँघ' शब्द बन गया। स्पष्ट होता है कि 'जा' पर अनुस्वार (बिन्दु) अनुनासिक (चन्द्रबिन्दु) की ही ध्वनि देता है। स्वर विपर्य्यय स्पष्ट दिखाई देता है। 'आ' अंत से उठाकर आदि में चला गया; 'ज' के साथ बैठ गया, और 'ज' का छोटा 'अ' स्थान परिवर्तन कर अंत में (घ के साथ) मिल गया और इस तरह 'जंघा' से 'जाँघ' शब्द का विकास हो गया। इस तरह के उदाहरण कम ही मिलते हैं।

वर्ण विकार :

जब एक वर्ण के स्थान पर दूसरा वर्ण आ कर बैठ जाए अथवा एव वर्ण दूसरे किसी वर्ण के रूप में परिणत हो जाये, तो इस तरह के परिवर्तन को वर्ण-विकार मान लिया जाता है। जैसे, 'काक' का 'काग' या फिर 'कागा'। यहाँ संस्कृत के शब्द काक की अंतिम ध्वनि 'क' से 'ग' में परिवर्तित होकर शब्द-विकास का कार्य कर गई।

इसी तरह 'शाक' शब्द का पर्याय 'साग' बन गया। शाक पद में 'शा', 'सा' हो गया और 'क' वर्ण 'ग' वर्ण में परिवर्तित हो गया। प्रायः यह देखने में आता है कि उत्तर भारत के लोगों को विशेषकर सामान्य स्तर के लोगों को 'शा' और 'ष' के उच्चारण में असुविधा होती है, इसलिए उच्चारण के संयोगवश 'शा', 'सा' में परिवर्तित हो गया। 'क' को 'ग' में परिवर्तित करने में बौद्धिक असुविधा नहीं हुई। यदि 'शाक' का साफ उच्चारित किया जाता तो अर्थ बोध नहीं होता। 'शाक' शब्द का तो शाब्दिक अर्थ पेड़-पौधों की 'शाखा' या टहनियों के रूप स्पष्ट में स्पष्ट होता है किन्तु 'साग' शब्द का सार-गर्भित रूप देखने में नहीं आता।

एक संत की वाणी में आता है कि-त्यागो मन के 'सगल' काम। 'सगल' का शब्दिक अर्थ है 'सकल' अर्थात् सभी। 'सगल' शब्द में 'ग', 'क' ध्वनि में परिवर्तित हो गया। किन्तु अर्थ की दृष्टि से कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

वर्ण लोप :

वर्ण के लोप अथवा लुप्त होने का क्रम भाषाओं में निरंतर चलता रहता है। वर्ण के लुप्त होने के कारण भी शब्द विकास हो जाता है, जैसे संस्कृत के 'स्नेह' शब्द का 'स्' लुप्त होकर ब्रज या अवधि भाषा में 'नेह' रह गया।

'हे' शब्द का प्रयोग संबोधन के लिए किया जाता है, 'हे' शब्द से 'ह्' वर्ण लुप्त होकर 'ऐ' शब्द रह गया - ऐ लड़के।

हिंदी के वर्तमान समय में ही हिंदी के भक्त कवियों की भाषा के अनेक वर्ण सामान्य बोल-चाल की भाषा में भी लुप्त होते जा रहे हैं, जिससे नये शब्दों का आगमन हो रहा है। संत मीरा जी की ये पक्तियाँ ''.........गगन मंडल सेज पिया की कौ विध मिलन होई।'' परिस्थितिवश 'कौ' की ध्वनि में परिवर्तन दिखाई देता है। यहाँ 'कौ'', का शब्दिक अर्थ है -'किस'। 'कौ' से 'ओ' का लोप होकर 'ई' की मात्रा के आगमन के साथ 'स' वर्ण आकर बैठ गया, जिससे शब्द-विकास 'किस' हो गया। संत तुलसी दास जी की रामचरित मानस की पक्तियाँ-''राम करही सब के सब काजा।'' 'करहिं' करता है, शब्द बन गया।

अर्थ परिवर्तन या अर्थ-विकास :

अर्थ में बदलाव या हेर-फेर को अर्थ परिवर्तन या अर्थ विकास के रूप में जाना जाता है। संस्कृत भाषा से हिंदी भाषा में अधिकांश शब्द ज्यों के त्यों या कुछ परिवर्तन के साथ हिंदी भाषा में आए हैं। 'स्तन' से 'थन' शब्द का विकास हुआ, परंतु 'थन' शब्द से अर्थ की परिधि कम हो गई। 'थन' शब्द का प्रयोग पशुओं के संबंध में व्यक्त किया जाता है।

कभी-कभी शब्द का विकास हो जाने पर भी अर्थ में परिवर्तन नहीं होता, अर्थ पूर्ववत् ही बना रहता है। 'पठ' तथा 'पढ़' की धातुओं में कोई भेद नहीं है। 'गृह' का 'घर' हो

गया, शब्द विकास होने पर भी अर्थ विकास नहीं हुआ। लेकिन प्रयोग की दृष्टि से भेद अवश्य दिखाई पड़ते हैं। कहा जाए कि 'राम' घर पर नहीं है', 'घर' के स्थान पर 'गृह' शब्द जोड़कर कहा जाए कि 'राम गृह पर नहीं है।' अर्थ में सरता न आकर अर्थ का अनर्थ सा प्रतीत होता है।

विशेष :

स्वर : स्वर उन वर्णों को कहा जाता है जोकि बिना अन्य वर्णों की सहायता से उच्चारित किये जाते हैं।, जिनकी कुल संख्या हिंदी में 11 दी गई ; अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ, इन स्वरों में दीर्ध और संयुक्त दो प्रकार के स्वर माने गये हैं।

दीर्ध स्वर - आ (अ+अ); ई (इ+इ) तथा ऊ (उ+उ) इनकी संख्या तीन है।

संयुक्त स्वर - ए (अ+ इ), ऐ (अ+ए), ओ (अ+उ) तथा औ (अ+ओ) इनकी संख्या चार मानी गई है। व्यंजनों के दो भेद माने गये हैं - मूल और संयुक्त व्यंजन।

हिंदी शब्दों के अंग्रेजी पर्याय

निरूक्त	=	Etymology
वर्ण/अक्षर	=	Letter, Alphabet
लोप	=	Elision
स्वर	=	Vowel
दीर्घ	=	Long
साग	=	Curry
व्यक्त	=	Express
समास	=	Compound
संयुक्त अक्षर	=	Conjuct Consonants
ध्वनि	=	Sound
लचक	=	Flex
परिस्थिति	=	Circumstance

पृष्ठ 12 का शेष

में 37.2% लोगों ने हिंदी को पसंद किया। अखिल भारतीय पसंद की दृष्टि से देखें तो भी हिंदी को 38.5% लोगों ने चाहा है जबकि अंग्रेज़ी को 2.5% लोगों ने (देखिए राजेश शुक्ला, निदेशक, NCRAR-CMRV का आलेख the Language India Reads in, the Economic Times 15-7-10)।

भारत बदल रहा है। भारतीय समाज का विश्व समाज पर बढ़ता दबदबा और भारतीयों की वैश्विक बाज़ार नीति समितियों, कला एवं मनोरंजन उद्योग में बढ़ती साख के मद्देनज़र अब समय आ गया है कि हमको अपने समस्त जनता के लिए अवसर उपलब्ध कराने सांवैधानिक दायित्व का शतप्रतिशत निर्वाह करने को तैयार हो जाना चाहिए। इसके लिए शायद सबसे आवश्यक है भाषा नियोजन के काम के रूपायन तथा कार्यान्वयन की। यहां हिंदी की महति भूमिका है। इसी के माध्यम से भारत के विपुल ज्ञान भंडार को वैश्विक प्रतिस्पद्‌र्धा के समक्ष प्रस्तुत किया जा सकेगा।

जनतंत्र को यदि सफल बनाना है तो सबको सशक्त करना होगा, सबकी राय लेनी होगी और सबके अनुभवों से लाभ उठाना होगा। जो बात हस्तामलकवत थी उसे सर्वेक्षण के निष्कर्ष ने भी प्रमाणित कर दिया है। देश में लागू विकासात्मक परियोजनाओं की असफलता, खेतों में पसरती वीरानी, किसानों का मोहभंग, प्राकृतिक संतुलन का बिगड़ता जाना, जाति तथा क्षेत्र के नाम पर अंध हिंसा और बेलगाम भ्रष्टाचार, पारंपरिक ज्ञान की घोर उपेक्षा एवं आयातित ज्ञान पर उत्कट निर्भरता आदि व्याधियां अनुत्तरदायित्वपूर्ण सत्ता सुख-भोग के परिणाम हैं। हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार से, देश की सुप्त मेधा को यदि जगाया जा सका तो विविधता के प्रबंधन तथा नवाचार के विकास को अभूतपूर्व अवसर मिलेगा इसमें संदेह नहीं। ■

साहित्यिकी

हिंदी के अनन्य सेवक, फादर कामिल बुल्के

डॉ. परमानंद पांचाल*

रैवरेंड फादर कामिल बुल्के एक मिशनरी के रूप में भारत के जनजातीय क्षेत्रों में धर्म प्रचार हेतु बेल्जियम से आए थे, किंतु वे यहां की मनीषा और जन मानस में व्याप्त राम के प्रति अगाध श्रद्धा से इतने प्रभावित हुए कि स्वयं राम मय बन गए और विश्व में राम कथा के अनन्य विशेषज्ञ के रूप में अमर हो गए। तुलसी के राम चरित्र मानस से उन्हें असीम प्रेरणा प्राप्त हुई। गोस्वामी तुलसी दास की राम के प्रति समर्पित भक्ति भावना और उनके चमत्कारिक काव्य कौशल से प्रभावित हो कर उठे–

"सबै नचावत राम गुसाई।"
मोहे नचावत तुलसी गुसाई" ॥"

उन्होंने रामकथा को ही अपने शोध का विषय बनाया और आजीवन इसी दिशा में कार्य करते हुए निरन्तर हिंदी की सेवा में लगे रहें और जाते-जाते हिंदी भाषा को अंग्रेजी-हिंदी शब्द कोश के रूप में एक ऐसा अमूल्य उपहार दे गए, जिसके लिए हिंदी जगत सदा उनका ऋणी रहेगा। फादर कामिल बुल्के का जन्म पहली दिसम्बर 1909 को बेल्जियम के एक गांव राम्सकपैले में हुआ था। वे अपने पिता अदोल्फ बुल्के और माता, मारिया की पहली संतान थे। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा लिज़बिग में सम्पन्न हुई। वे असाधारण प्रतिभा के तजस्वी विद्यार्थी थे। साइकिल की सवारी, उनका शौक था और फुटबाल उनका प्रिय खेल था। 1930 में उन्होंने इंजिनियरिंग की परीक्षा पास की और लैटिन, ग्रीफ, तथा जर्मन भाषाओं में दक्षता प्राप्त की। उनकी मातृभाषा फलेमिश थी, जिस के प्रति उन्हें अगाध प्रेम था। ग्रिगोरियन विश्वविद्यालय से दर्शन शास्त्र में एम.ए. किया और धर्मनिष्ठ कामिल बुल्के ने मानव सेवा के प्रति प्रवृत्त हो 1930 में सन्यास ग्रहण कर लिया। वे कैथोलिको के जेसुइट संघ में शामिल हो गए। उन्हें 1932 में हालैंड के कैथोलिक जर्मन जेसुइट धर्म शिक्षा केन्द्र में भेज दिया गया। उन्होंने विदेशों में रहकर धर्म सेवा के कार्य को वरीयता दी और भारत जाने का निर्णय किया।

1935 में वे भारत आए और रांची पहुंचे। फिर, दार्जिलिंग होते हुए गुमला गए। जहां वे इग्नेशियस हाई स्कूल में शिक्षक के रूप में कार्य करने लगे। उन्होंने देखा कि भारत में हिंदी के ज्ञान के बिना वे अपने मिशन को आगे नहीं बढ़ा सकते, इसलिए उन्होंने हिंदी सीखनी आरंम्भ की। हज़ारी बाग में पं. बद्रीदत शास्त्री से संस्कृत पढ़ी। वे शीघ्र ही संस्कृत में इतने पारंगत हो गए कि शास्त्री जी उन्हें "चलता फिरता शब्द कोश" कहने लगे। कार्सियांग में उन्होंने दो पुस्तके "द थिठज़्म ऑफ न्याय वैशेषिक" तथा "द सेवियर" नाम से लिखी। दि सेवियर का 1940 में हिंदी अनुवाद "मुक्तिदाता के नाम से प्रकाशित हुआ, जो अत्यन्त लोकप्रिय हुआ। इसमें उनके उत्कृष्ठ हिंदी ज्ञान के सहज ही दर्शन होते हैं। हिंदी के प्रति उनकी रूचि निरन्तर बढ़ती गई। अब उन्होंने हिंदी को अपनी मातृभाषा के रूप में ग्रहण कर लिया था। उन्होंने विशारद की परीक्षा पास की। कलकता विश्वविद्यालय से बी. ए. किया। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल से मिले, बनारस में वे हिंदी में एम.ए. करने के लिए इलाहाबाद पहुंचे। डॉ. भूपेन्द्र कलसी ने लिखा है, डॉ धीरेन्द्र वर्मा ने उनके हिंदी ज्ञान की परीक्षा लेने के उद्देश्य से उन्हे विनय पत्रिका के दो पद अर्थ निरूपण के लिए दिए। इनके शब्दों में "जैसे-जैसे" डॉ. वर्मा ने उन पृष्ठों को पढ़ा ....उनकी अरूचि, रूचि में, रूचि आश्चर्य में और आश्चर्य आदर में परिवर्तन हो गया। 1947 में फादर कामिल बुल्के ने हिंदी में एम. ए. की उपाधि ली। उन्हीं में, निर्देशन में उन्होंने "रामकथा" की उत्पति और

*232, ए, पाकेट-1, मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली-110091.

381 HA/12—7A

विकास" पर 1949 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से डी. फिल. उपाधि प्राप्त की ।

उनके शोध कार्य की विशेषता यह थी कि वह ऐसा शोध प्रबन्ध था, जो पहली बार हिंदी माध्यम से हिंदी में प्रस्तुत किया गया था, जिसके लिए विश्वविद्यालय को अपने नियमों में संशोधन करना पड़ा था । यह शोध-प्रबंध देश-विदेश से राम कथा के सम्बन्ध में एकत्रित इतने साक्ष्यों से पोषित था कि सर्वत्र इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की गई । डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ने तो इसे "राम कथा का विश्व कोश" ही कह डाला । 1950 में इसी विश्वविद्यालय की हिंदी परिषद् द्वारा इसका प्रकाशन भी किया गया । इस प्रबंध में वेदों से लेकर साकेत तक की राम कथा की सामग्री का उपयोग करने के अतिरिक्त मलाया, जाबा, म्यांमार, थाइलैंड तथा इंडोनेशिया आदि देशों में प्रचलित राम विषयक आख्यानों को भी समाविष्ठ किया गया है । इसमें वैश्विक स्तर पर राम काव्य के दर्शन होते हैं । समस्त सामग्री को चार अध्यायों में विभक्त कर, देशी और विदेशी रूपों के स्रोत, शोध और प्रसंगों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है । गहन और विस्तृत शोध के आधार पर विभिन्न देशों और स्थानों पर प्रचलित राम कथा के किंचित रूपान्तरों के वैविध्य का मूल कथा के परिप्रेक्ष्य में सटीक विवेचन किया गया है । वे कहते हैं, "अत्यन्त विस्तृत राम कथा साहित्य में कथावस्तु में पर्याप्त मात्रा में परिवर्द्वन और परिवर्तन हुआ है, किंतु सीता का पातिव्रत्य, राम का आज्ञापालन, भरत का अस्वार्थ, लक्ष्मण का भ्रात प्रेम, दशरथ की सत्य संधता, कौशल्या का वात्सल्य, हनुमान का स्वामी-सेवा, ये आदर्श सभी रामकथाओं में विद्यमान है। किसी विदेशी विद्वान द्वारा लिखे गए इस शोध प्रबंध की लोकप्रियता यहां तक हुई कि उनके जीवन काल अर्थात् 1982 तक इसके तीन संस्करण प्रकाशित हो गए थे । कामिल बुल्के निरन्तर इस विषय में प्राप्त अद्यतन जानकारी का समावेश संशोधित संस्करणों में करते रहे । इसका प्रमाण यह है कि 1962 में प्रकाशित संस्करण की सामग्री पहले संस्करण की उपेक्षा दोगुनी है । इसके अनुवाद अन्य भाषाओं में भी किए गए । 1978 में केरल ग्रंथ अकादमी ने इसका मलयालम भाषा में अनुवाद प्रकाशित किया । यही नहीं आस्ट्रेलिया के केनबरा विश्वविद्यालय के डॉ. रिचर्ड बार्ज ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया ।

डॉ. फादर कामिल बुल्के रामकथा के सम्बन्ध में अपने गहन अध्ययन, गवेषणात्मक और तर्क सापेक्ष विवेचन के लिए ही हिंदी जगत में श्रद्वेय और वरेणय नहीं है, हिंदी को उनका अप्रतिम योगदान उनका "अंग्रेजी-हिंदी शब्द-कोश" भी है । कोशकार के रूप में उन्होंने हिंदी की अनन्य सेवा की । 1955 में अहिंदी भाषा-भाषियों के लिए एक अंग्रेजी- हिंदी शब्द-कोश, ए टेक्नीकल इंग्लिश हिंदी ग्लोसरी (A Technical English-HIndi Glossary)" के नाम लिखा, जो धार्मिक साहित्य समिति की ओर से प्रकाशित हुआ । इसके बाद 1968 में उनका प्रसिद्ध "अंग्रेजी- हिंदी शब्द कोश" आया । डॉ. कामिल बुल्के कोश लेखन के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए इसके प्राक्कथन में लिखते है "यह कोश प्रमुख रूप से हिंदी सीखने वालों की समस्याएं दूर करने के उद्देश्य से लिखा गया है, फिर भी मुझे आशा है कि यह हिंदी भाषियों के लिए समान रूप से उपादेय होगा ।" उनके द्वारा निर्मित यह अद्वितीय कोश अपने बहुविधगणों के कारण इतना लोकप्रिय सिद्ध हुआ कि 1968 में प्रकाशित पहले संस्करण से लेकर अब-तक इसका चालीस से अधिक बार पुनर्मुद्रण हो चुका है, जो अपने आप में एक अद्वितीय रिकार्ड है । अध्यापकों, विद्यार्थियों, लेखकों, अनुवादकों, व्यावसाइयों, पत्रकारों, सरकारी कार्यालयों, बैंकों, दूतावसों और राजनैतिक क्षेत्र में कार्यरत सभी के लिए एक मानक कोश के रूप में यह कोश अत्याधिक उपयोगी है । कहना न होगा कि अनुवादकों में तो इसकी लोकप्रियता एक प्रकार से अनिवार्यता की सीमा को छू गई है । भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वियन के लिए सभी कार्यालयों में अनुवाद की आवश्यकता रहती है । सरकार द्वारा बनाए गए और बाज़ार में उपलब्ध अनेक कोशों के बाजजूद कामिल बुल्के के इस कोश प्रामाणिकता अंसदिग्ध है । एक प्रकार से सरकारी कार्यालयों में राजभाषा के प्रचार-प्रसार में इस कोश की एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है । यही कारण है कि लगभग प्रत्येक वर्ष इसका पुनर्मुद्रण हो जाता है । लेखक जगत में इसकी लोकप्रियता का आंकलन श्री इलाचन्द जोशी के इन शब्दों से सहज ही किया जा सकता है - यह कोश न केवल हिंदी और अंग्रेजी के नए पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा, वरन हम जैसे पुराने घिसे हुए लेखकों के लिए भी बड़े काम की चीज सिद्ध होगा, स्वयं मुझे अपने निबंधों के लेखन में इस से बड़ी सहायता मिली है ।

इस कोश की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें अंग्रेजी शब्दों के विभिन्न अर्थ अंक लगाकर तथा कोष्ठक में अतिरिक्त संकेत देकर स्पष्ट किए गए हैं । जहां अंक

381 HA/12—7B

लगाना आवश्यक नहीं समझा गया वहां अर्द्ध विराम द्वारा विभिन्न अर्थों कर विभाजन किया गया है । सबसे बड़ी बात यह है कि इसमें अंग्रेजी शब्दों में लिंग भेद एक चिह्न द्वारा स्पष्ट कर दिए गए है । (सभी स्त्री लिंग शब्द पर * अंकित है और उभय लिंगी शब्दों पर ** अंकित है) । मूल शब्दों (उच्चरण देवनागरी में) के साथ उनसे उद्भूत तथा निर्मित तथा सामाजिक शब्दों के हिंदी अनुवाद दिए गए है । डॉ. कैलाश भाटिया का कथन है कि ''हिंदी के कोश विज्ञान में डॉ.बुल्के की इस सेवा का कोई प्रतिदान संभव नहीं है ।'' प्रसिद्ध कोशकार और भाषा वैज्ञानिक डॉ. भोलानाथ तिवारी तो इसे कोश-विज्ञान तथा कोशकला की दृष्टि से एक आदर्श कोश मानते थे ।

मुझे 1976 में फादर कामिल बुल्के के दर्शन करने का अवसर उस समय मिला, जब वे मारिशस में होने जा रहे दूसरे विश्व हिंदी सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि मंडल के सदस्य के रूप भाग लेने के लिए दिल्ली आए थे । वे केंद्रीय सचिवालय, नार्थ ब्लाक में औपचारिक कार्य से आए थे । मुझे उनकी आवश्यक सहायता का कार्य सौंपा गया था । उन्हें कानों से सुनने में कुछ कठिनाई थी । मुझे उसी समय एक आभायुक्त ऋषि तुल्य मनीषी डॉ. कामिल बुल्के से वार्तालाप का सुअवसर प्राप्त हुआ । यह देखकर प्रसन्नता हुई कि जिस विद्वान द्वारा निर्मित कोश का हम रोज़ाना अपने कार्यालय में प्रयोग करते हैं, वही डॉ. कामिल बुल्के मेरे सामने खड़े हैं ।

डॉ. कामिल बुल्के एक विदेशी होते हुए भी इस देश की मिट्टी और यहां की भाषा से पूर्णत: जुड़ गए थे । 1950 में उन्होंने भारतीय नागरिकता ग्रहण की और पूर्ण रूपेण भारतीय बन गए । उन्हें हिंदी के प्रति अगाध प्रेम था । भाषा को वे राष्ट्रीय स्वाभिमान से जोड़ते थे । उनका मानना था कि जिस देश के निवासी अपनी भाषा का आदर नहीं करते, उनकी संस्कृति क्षरण करने लगती है । वे आजीवन हिंदी के परम भक्त और सेवक रहे । वे शुद्ध सरल हिंदी में बात करना पसन्द करते थे । भारतीयों को अंग्रेजी के पत्रों का उतर वे सिद्धांत: नहीं देते थे । वे कहते थे कि जो भाषा मैं सबसे अच्छी तरह जानता हूं वह हिंदी ही है । वे सरल हिंदी भाषा के पक्षधर थे । वे कहते थे कि हिंदी विद्वान तथा साहित्यकार इतनी क्लिष्ठ तथा कृत्रिम हिंदी लिखने लगे हैं कि खड़ी बोली की सुबोधगभ्यता खतरे में आ गई है । उनकी प्रेरणा से अनेक मिशनरी स्कूलों में अध्यापन का माध्यम हिंदी भाषा हुई । गिरजाघरों में हिंदी में प्रार्थनाओं और भक्तिगीतों को स्थान मिला । फादर कामिल बुल्के रांची के सेंट जेवियर्स कालिज में हिंदी एवं संस्कृत के विभागाध्यक्ष के रूप में कार्य करते रहे । इन्होंने मैटरलीनिक के प्रसिद्ध नाटक ''ब्लूवर्ड'' का ''नीलपंछी'' के नाम से हिंदी में अनुवाद किया, जिसे बिहार राष्ट्र भाषा परिषद् द्वारा प्रकाशित किया गया । 1974 में भारत सरकार ने उनकी सेवाओं के लिए उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया ।

1975 में नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन और 1976 में मारिशस में सम्पन्न हुए दूसरे विश्व हिंदी सम्मेलन में उन्होंने भारतीय प्रतिनिधि मंडल के सदस्य के रूप में भाग लिया । नागपुर सम्मेलन में उन्होंने कहा था कि संतुलन और समन्वय की विशेषता रखने वाली भारतीय संस्कृति को हिंदी के द्वारा ही विश्व तक पहुंचाया जा सकता है.......किंतु भारतीय संस्कृति विश्व में तब-तक प्रतिष्ठित नहीं हो सकती, जब-तक हिंदी अपने की देश में प्रतिष्ठित नहीं होती ।''

फादर कामिल बुल्के इसाई धर्म के प्रचारक बनकर आए थे, किंतु वे साम्प्रदायिकता से कोसों दूर रहे । वे कहते थे हम सब ईश्वर की सृष्टि हैं । उनका हृदय विशाल था । तुलसी के ''राम चरित्र मानस'' और विनय पत्रिका का उनके व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव रहा था । वे अपने ईष्ट प्रभु की अराधना तुलसी की भांति समर्पित भावना से करते थे । 3 जुलाई 1982 को जब वे रांची में थे तो अचानक अस्वस्थ हो गए और पटना के कुर्जी अस्पताल में भर्ती हो गए, किंतु स्वास्थ्य बिगड़ता गया । वहां से उन्हें दिल्ली के होली फेमिली अस्पताल में लाया गया, किंतु कोई लाभ नहीं हुआ । अंत में 17 अगस्त 1982 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान हस्पताल में हिंदी के इस परमभक्त फादर कामिल बुल्के ने अपनी अंतिम सांस ली और उन्हें दिल्ली में ही निकोल्सन सेमेटरी में दफन कर दिया गया ।

भारत उन्हें हिंदी के प्रति की गई उनकी नि:स्प्रह सेवाओं और उनके अप्रतिम योगदान के लिए सदैव याद रखेगा । ■

हिंदी एवं तमिल भाषा की समानता एवं असमानता

डॉ. बी. एन. पाण्डेय*

उत्तर एवं दक्षिण भारत की भाषाओं के वाक्यों की संरचना एवं शब्द क्रम में अद्भुत समानता है । असमानताएं बहुत कम एवं गौण महत्व की हैं । यहाँ हिंदी एवं तमिल के संदर्भ में हम इन्हें देखेंगे ।

विभक्तियों का प्रयोग :-

उत्तर भारत की भाषाओं में विभक्तियाँ भाषाओं के विकास के क्रम में संज्ञा शब्दों से पृथक हो गई हैं और संज्ञा शब्दों के बाद पृथक से लिखी जाती हैं । दक्षिण भारतीय भाषाओं में संस्कृत की तरह अभी भी विभक्तियाँ संबद्ध संज्ञा शब्दों से मिलाकर लिखी जाती हैं । मुख-सुकरता अर्थात् उच्चरण की सरलता के लिए कभी-कभी संज्ञा से विभक्ति को संलग्न करने के पूर्व संज्ञा के अंतिम अक्षर को हटा दिया जाता है या बदल दिया जाता है यथा अलुवलगम् (कार्यालय) में विभक्ति इल् (में) जोड़ने के पहले अंतिम अक्षर म् को हटाकर त्त कर दिया जाता है और विभक्तियुक्त शब्द बनता है- अलुवलगत्तिल् (कार्यालय में)। तमिल में विभक्तियों के सही प्रयोग पर अधिकार अधिक से अधिक तमिल किताबों को पढ़ने से एवं सतत् प्रयास करने से ही किया जा सकता है । यह नियम दूसरी भाषाओं के लिए भी उतना ही सत्य है ।

किसी भाषा में विभक्तियों का प्रयोग मातृभाषा के रूप में उस भाषा का प्रयोग करने वाले समुदाय की सोचने की प्रक्रिया पर भी निर्भर करता है । उदाहरण के लिए आवागमन के साधन के लिए हिंदी में से विभक्ति का प्रयोग होता है तथा अंग्रेजी में से के समानार्थी रूप by का प्रयोग होता है परंतु तमिल में इल् (में) विभक्ति का प्रयोग होता है । यह परम्परा तमिल समुदाय के सोचने की इस प्रक्रिया से उत्पन्न हुई होगी कि हम बस या कार में पहले प्रवेश करते हैं, उसके बाद ही जाते हैं, इसलिए ऐसे संदर्भों में इल्/में/in विभक्ति (preposition) का प्रयोग अधिक महत्वपूर्ण है । परंतु एक भाषा के वाक्यों को दूसरी भाषा में अनुवाद के समय संबद्ध भाषा की परंपरा को ध्यान में रखा जाना चाहिए, इसलिए तमिल का निम्नलिखित वाक्य

'नान बस्सिल् पोगिरेन' हिंदी में शब्दश: 'मैं बस में जाता हूँ' से अनूदित नहीं किया जाना चाहिए । हिंदी की परंपरा को ध्यान में रखते हुए सही अनुवाद होगा -मैं बस से जाता हूँ ।

निषेधसूचक क्रिया विशेषण का प्रयोग :-

हिंदी और तमिल भाषा में दूसरा अंतर निषेधवाचक अव्यय नहीं, न एवं मत के प्रयोग में है । इनका प्रयोग हिंदी वाक्य में मुख्य क्रिया के ठीक पहले होता है जबकि तमिल में निषेधवाचक अव्यय इल्लै (नहीं), दे (न) तथा दीर्गल (मत) का प्रयोग मुख्य क्रिया के अंत में एवं मुख्य क्रिया से संलग्न रूप में होता है, यथा :-

वह नहीं आता	अवन् वरुवदिल्लै ।
कुछ भी न बोलो	ओन्रुम सोल्लादे
मत जाइए	पोगादीर्गल्

क्रिया रूप :-

हिंदी एवं तमिल भाषा में तीसरा उल्लेखनीय अंतर क्रिया रूप बनाने में है । हिंदी में वचन, लिंग एवं पुरूष द्योतक प्रत्यय प्राय: क्रिया धातु के बाद में उससे अलग लिखे जाते हैं जबकि तमिल में ये संस्कृत की तरह क्रिया धातु से मिलाकर लिखे जाते हैं, यथा :-

आप क्या देख रहे हैं ? नींगल एन्न पार्तुक् कोण्डिरुक्किरिर्गल

यहाँ पार्तुक्कोण्डिरुक्किरिर्गल एक शब्द है यद्यपि पार्त्तु अलग लिखा जाता है परंतु योजक प्रतीक के रूप में बाद में आने वाले शब्द कोण्डि के प्रथम व्यंजन क् को डब्ल करके एक

* डॉ. बी. एन. पाण्डेय, उपनिदेशक (कार्या.), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, 18वॉ तल, निजाम पैलेस, 234/4 ए, जे.सी. बोस रोड, कोलकाता-20

को पार्त्तु धातु से संलग्न करके लिखा गया है, परंतु उसका उच्चारण नहीं होता और पार्त्तुक कोण्डिरुक्किरिर्गल् का उच्चारण वस्तुत: पार्त्तु कोण्डिरुक्किरिर्गल् रूप में होता है । अन्य भाषाभाषियों के लिए यह एक नया अनुभव है कि तमिल में संज्ञा और क्रिया तथा सार्वजनिक विशेषण एवं बाद में आने वाली संज्ञा को भी परवर्ती शब्द के प्रथम व्यंजन को डबल करके जोड़ दिया जाता है । जोड़ने के प्रतीक स्वरूप डबल किए गए व्यंजन में से एक को प्रथम शब्द के बाद में लिखा जाता है, यद्यपि उसका उच्चारण नहीं होता, यथा

मोहनैक् कूप्पिडु मोहन को बुलाओ Call Mohan
इन्द पेट्टियै मुरलिक्कुक् कोडु यह पेटी मुरली को दो ।

उपर्युक्त तमिल वाक्यों में क् एवं प् संयोजक व्यंजन वर्ण हैं जो इस बात के प्रतीक हैं कि इनके पहले और बाद में आने वाले शब्द एक इकाई शब्द या सामासिक शब्द के रूप में उच्चरित किए जा सकते हैं । इनका स्वयं का उच्चारण नहीं होता एवं इनके लिखने का कोई दूसरा उद्देश्य नहीं है । ये इस बात के प्रतीक हैं कि संस्कृत की तरह तमिल भी संयोगात्मक भाषा है और उसमें अभी भी संस्कृत की तरह कई-कई शब्दों को जोड़कर बड़े शब्द बनाने की प्रवृत्ति है । आम आदमी छोटे-छोटे शब्द चाहता है जिससे उच्चारण में आसानी हो । यह प्रवृत्ति बोलचाल की तमिल में भी दृष्टिगत होती है । यही कारण है कि तमिल के अधिकांश बड़े शब्द बोलने में छोटे कर लिए जाते हैं । अन्य भाषाभाषियों के लिए तमिल के लिखित एवं बोलचाल के रूप पर अधिकार दोनों पर्याप्त-अलग चीजें हैं । तमिल का लिखित रूप उट्कारंग (बैठिए) बोलने में उक्कारंग हो जाता है । उसी तरह ओण्डु (एक), इरण्डु (दो), मुण्डु (तीन) बोलने में क्रमश: ओन, रण्ड एवं मुन हो जाते हैं । यह भाषा विज्ञान का सिद्धांत है कि जो प्रचलित भाषा जितनी प्राचीन होगी उसके लिखित एवं उच्चरित अर्थात् बोलचाल के रूप में उतना की अंतर होगा । लिखित एवं उच्चरित रूप की समानता की वैज्ञानिकता से वह उतनी ही दूर होगी । तमिल भारत की प्रचलित भाषाओं में सबसे प्राचीन है, इसलिए उसके लिखित एवं बोलचाल के रूप में काफी अंतर आ गया है और अन्य भाषा वालों के लिए उसे सीखना अपेक्षाकृत कठिन है । हिंदी भारत की प्रचलित भाषाओं में सबसे नई भाषा है इसलिए उसके लिखित एवं बोलचाल के रूप में अंतर लगभग नहीं है, और एक साथ उसके लिखित एवं वाचिक रूप पर अधिकार संभव है ।

लिपि एवं वर्णमाला :-

हिंदी एवं तमिल भाषा में सबसे महत्वपूर्ण अंतर वर्णमाला का है । इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि भारत की सभी लिपियाँ भारत की प्राचीनतम लिपि ब्राह्मी के किसी न किसी रूप से विकसित हुई हैं । संभवत: प्राचीन काल में जब तमिल एक कबिलाई/जनजातीय (ट्राइबल) एवं केवल बोलचाल की भाषा थी एवं प्रथम बार भाषा के विकास के क्रम में उसके लिए एक लिपि की आवश्यकता महसूस की गई, ब्राह्मी लिपि का कोई न कोई रूप तमिल भाषा को लिखने के लिए स्वीकार किया गया । ब्राह्मी लिपि से तब केवल उन्हीं अक्षरों को लिया गया जो तमिल ध्वनियों को व्यक्त करने के लिए आवश्यक थे । क-वर्ग से लेकर प-वर्ग तक के अक्षरों में से केवल प्रथम एवं अंतिम अक्षर ही तमिल में लिए गए क्योकि तब तमिल में इन पाँचों वर्गों की प्रथम अल्प प्राण ध्वनि एवं अंतिम अनुनासिक ध्वनि ही विद्यमान थी । बाद में जब तमिल में इन पाँचों वर्गों की तीसरी अल्पप्राण ध्वनियाँ (ग. ज. ड, द, ब) विकसित हो गई तो लोग इन ध्वनियों को भी उस वर्ग के प्रथम अक्षर से ही लिखने लगे । उनके लिए अलग से लिपि चिह्न नहीं बनाए गए । जब संस्कृत पूरे भारत की सबसे अधिक सम्मानित एवं धर्म तथा धार्मिक विधि-विधानों की भाषा बन गई तब लगभग 30 प्रतिशत संस्कृत शब्द तमिल में अंगीकृत हो गए । परंतु संस्कृत शब्दों में जहाँ-कहीं क-वर्ग से प-वर्ग की दूसरी और चौथी महाप्राण ध्वनियाँ थीं, उनका उच्चारण पूर्ववर्ती अल्पप्राण ध्वनि में परिवर्तित हो गया । इस तरह संस्कृत शब्दों का उच्चारण तमिल में इतना बदल गया कि आम आदमी के लिए उन्हें पहचानना मुश्किल है । तमिल लिपि में सभी ध्वनियों को लिखने के लिए भी पर्याप्त लिपि चिह्न नहीं है । तमिल में क-वर्ग से लेकर प-वर्ग तक में प्रथम, तीसरी एवं पाँचवी ध्वनियाँ हैं, परंतु तमिल वर्णमाला/लिपि में प्रत्येक वर्ग में केवल प्रथम एवं पंचम अक्षर ही हैं । प्रत्येक वर्ग की तीसरी ध्वनि(ग, ज, ड, द्, ब) को उसी वर्ग के प्रथम अक्षर से ही लिखा जाता है । अन्य भाषा-भाषियों के लिए तमिल लिपि पर पूरा अधिकार करने के बावजूद तमिल भाषा पढ़ना मुश्किल है, क्योंकि वह नहीं समझ सकता कि तमिल शब्द में आने वाले क को कहाँ के कहाँ ग और कहाँ ह पढ़ना है । उसी तरह च का उच्चारण च, ज, श या स होगा, ट का उच्चारण ट, ड, या ड़, त का उच्चारण त या द, प का उच्चारण प या ब होगा, यह वह नहीं समझ सकता । भारतीय भाषाओं में केवल

381 HA/12—8A

तमिल भाषा के शब्दकोशों में अंग्रेजी भाषा के शब्दकोशों की तरह प्रत्येक शब्द के उच्चारण की व्याख्या अर्थात् Phonetic Spelling or Explanation की आवश्यकता है । परंतु हम शब्दकोश विज्ञान (Lexicography/Science of compiling Dictioaries) में काफी पिछड़े हुए हैं । भारत में एक भी ऐसा तमिल शब्दकोश उपलब्ध नहीं है जिसमें तमिल शब्दों के उच्चारण (Phonetic Spelling) भी दिए गये हों । यही कारण कि स्थानीय तमिल व्यक्ति समान तमिल शब्द का उच्चारण अलग-अलग करते हैं । गोया (अमरूद) का उच्चारण दूसरा तमिल व्यक्ति कोया भी कर सकता है । रेलवे स्टेशन पर कॉफी बेचने वाले कॉफी का उच्चारण कॉफि, कॉपि, गॉपि भी करते हैं । हिंदी-तमिल शब्द चाबी (Key) को एक ही तमिल व्यक्ति कभी चाबि और कभी शबि बोल सकता है । वस्तुत: तमिल भाषा एवं साहित्य सभी प्रचलित भारतीय भाषाओं में सबसे प्राचीन एवं समृद्ध है परंतु तमिल लिपि सभी भारतीय लिपियों की तुलना में अधिक अपूर्ण है । विनोवा भावे का विचार था कि एशिया की सभी लिपियों में देवनागरी सर्वश्रेष्ठ लिपि है । उनका कहना था कि न केवल भारत की सभी भाषाएँ अपितु चीनी एवं जापानी जैसी एशिया की दूसरी भाषाएँ भी देवनागरी लिपि में अधिक सटीकता के साथ लिखी जा सकती हैं । उनका कहना था कि भारतीय भाषाओं की संरचना एवं शब्दों की भिन्नता नहीं अपितु लिपियों की भिन्नता विभिन्न भाषा-भाषियों के लिए एक दूसरे से नजदीक आने एवं एक दूसरे के साहित्य का आनन्द उठाने में बाधा बनी हुई हैं । उन्होंने इसके लिए बहुत प्रयास किया कि देवनागरी को अभी भारतीय भाषाओं की एक वैकल्पिक लिपि के रूप में स्वीकार कर लिया जाए तथा सभी भाषाओं की उत्कृष्ट पुस्तकें देवनागरी लिपि में भी लिप्यंतरित की जाएँ । कुछ हद तक तमिल भाषा सीखने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि देवनागरी में सभी तमिल ध्वनियों के लिए अक्षर हैं तथा देवनागरी लिपि में तमिल लिपि से भी अधिक सटीकता से तमिल भाषा लिखी जा सकती है । अन्य भाषा-भाषी तमिल भाषा बहुत तेजी से सीख सकता है यदि वह देवनागरी में लिप्यंतरित कुछ तमिल कहानी पुस्तकों एवं उपन्यासों को उसके हिंदी अनुवाद की सहायता से पढ़े । दुर्भाग्य से इस दिशा में अब तक कोई भी प्रयास नहीं किया गया है ।

तमिल को देवनागरी लिपि में लिखने के लिए कुछ नए लिपि चिह्नों/अक्षरों की आवश्यकता होगी जो सहज ही बनाए जा सकते हैं । तमिल में तीन ल हैं - और पहले प्रकार के दोनों ल एक ही ध्वनि को व्यक्त करते हैं, परंतु शब्द में स्थान भेद से प्रथम एवं दूसरे का प्रयोग निर्धारित होता है, के लिए हिंदी ल के लिए हिंदी ल के पुराने रूप का प्रयोग किया जा सकता है, का उच्चारण कभी-कभी ल की तरह और कभी-कभी ड की तरह होता है, इसके लिए हिंदी में क्त का प्रयोग किया जा सकता है । इसी तरह तमिल में दो तरह के र हैं - और पहला र से तथा दूसरा र से देवनागरी में लिखा जा सकता है । जब बिना अ स्वर का अर्थात् अ स्वर का अर्थात् विशुद्ध स्यंजन के रूप में इनका प्रयोग होता है अर्थात ये संयुक्ताक्षर बनाते हैं तब प्रथम र अर्थात् के लिए रेफ एवं के लिए का प्रयोग किया जा सकता है । तमिल के ह्स्व ए अर्थात के लिए ए तथा इसके मात्रा रूप के लिए का प्रयोग किया जा सकता है । दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के प्रकाशनों में इसका प्रयोग किया जा रहा है । दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा ह्स्व ओ अर्थात के मात्रा रूप के लिए ॉ का प्रयोग करती है जोकि दोषपूर्ण है क्योंकि इस चिह्न का प्रयोग पहले से ही देवनागरी में अंग्रेजी से आए Doctor, Hockey आदि शब्दों में O से प्रतिध्वनित स्वर के लिए किया जा रहा है । अत: तमिल का ह्स्व ओ अर्थात् हिंदी में सामान्य ओ के नीचे विन्दी लगाकर ओ के रूप में तथा इसका मात्रा रूप के रूप में लिखा जा सकता है । भारत सरकार द्वारा देवनागरी के एक विस्तृत रूप को अनुमोदित किया गया है जिसके द्वारा भारत की किसी भी भाषा की किसी भी पुस्तक को देवनागरी में लिप्यंतरित किया जा सकता है जहां मुझे ज्ञात है देवनगरी के इस भी विस्तृत रूप का प्रयोग करते हुए भारत की किसी भी भाषा की कोई भी पुस्तक अभी तक देवनागरी में लिप्यंतरित नहीं की गई जिससे देवनागरी के विस्तृत रूप की व्यावहारिकता का पता चल सके ।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, भारतीय भाषाओं की सरंचना एवं विभिन्न प्रकार के वाक्य सॉचों के शब्द विन्यास अर्थात शब्द क्रम में अदभुत समानता है, बौद्ध काल में एशिया के सभी देशों में बौद्ध दर्शन के रूप में भारतीय सभ्यता-संस्कृति का अभूतपूर्व विस्तार हुआ और भारतीय भाषाओं की संरचना का अनुकरण चीनी, जापानी आदि भाषाओं में भी हुआ । इन भाषाओं के वाक्यों में भी शब्द क्रम लगभग वही है जो भारतीय भाषाओं में है ।

381 HA/12—8B

उत्तर भारत की सभी भाषाएँ संस्कृत मूल की हैं और न केवल उनकी संरचना में समानता है अपितु उनके 95% शब्द भी समान हैं । किसी भाषा में 8 प्रकार के शब्दों का प्रयोग होता - संज्ञा (Noun), सर्वनाम (Pronoun) विशेषण (Adjective), क्रिया (Verb), क्रिया विशेषण (Adverb) संबंध बोधक अव्यय (Preposition), संयोजक (Conjunction) एवं विस्मयादि बोधक शब्द (Interjunction) इसमें सबसे बड़ा समूह संज्ञा शब्दों का होता है । किसी भी भाषा में संज्ञाएँ लाखों में होती हैं । दूसरा बड़ा समूह क्रियाओं का होता है । किसी भी भाषा में क्रियाएं हजारों में होती हैं । अन्य सपूह के शब्द अधिक से अधिक सैकड़ो में होते हैं । उत्तर भारत की भाषाओं की 95% संज्ञाएँ तथा 95% क्रिया धातुएं समान हैं । उत्तर भारत की भाषाओं में मुख्य अंतर विभिन्न कालों में लिंग, वचन एवं पुरूष के अनुसार क्रिया रूप बनाने के लिए प्रयोग किए जाने वाले प्रत्ययों में होता है जिन्हें गणितीय सूत्र (Mathematical Fromulas) के रूप में 15 दिन के भीतर अपने भाषा संस्कार का अंग बनाया जा सकता है । दूसरा मुख्य अंतर विभक्तियों (Case ending Prepositions) के प्रयोग में होता है जिन्हें थोड़े अभ्यास से समझा जा सकता है ।

संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार हिंदी भाषा का विकास अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों, अभिव्यक्तियों आदि को समाहित करते हुए इस तरह करना है ताकि वह भारत की सामाजिक संस्कृति की वाहिका बन सके । यह तभी संभव है जब हिंदी भाषी अन्य भारतीय भाषाओं के संपर्क में आएँ । चूँकि हिंदी भाषी केवल अंग्रेजी के संपर्क में आते हैं और स्वभावतः हिंदी में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करते रहते हैं । वे अन्य भाषाओं के संपर्क में आएँ तथा अन्य भाषाओं के उपयोगी शब्द एवं अभिव्यक्तियाँ भी हिंदी भाषा में समाहित होकर हिंदी भाषा को समृद्ध करें इसके लिए राजभाषा विभाग द्वारा पहल की आवश्यकता है । राजभाषा विभाग को ज्ञानपीठ पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार आदि पुरस्कारों से सम्मानित अन्य भारतीय भाषाओं के सौ-दो सौ उपन्यासों एवं कहानी पुस्तकों का देवनागरी में लिप्यंतरण एवं हिंदी में अनुवाद प्रकाशित करना चाहिए/मात्र इतना सा प्रयास हिंदी भाषा की समृद्धि एवं भारत के भाषिक, साहित्यिक एवं भावनात्मक समन्वय में मील का पत्थर सिद्ध हो सकता है ।

यहाँ कुछ विचार दक्षिण भारत की अन्य लिपियों के विकास के संबंध में । जैसा कि बताया जा चुका है तमिल भाषा में क वर्ग से प वर्ग तक प्रत्येक वर्ग में केवल प्रथम एवं पाँचवे अक्षर पाए जाते हैं तथा प्रत्येक वर्ग में प्रथम, तृतीय एवं पाँचवी अर्थात तीन ध्वनियाँ पाई जाती हैं । प्रथम एवं तृतीय ध्वनि (जैसे क एवं ग) प्रथम अक्षर से ही लिखी जाती हैं । इसके विपरीत तेलगू, कन्नड एवं मलयालम में देवनागरी लिपि के लगभग सारे अक्षर एवं ध्वनियाँ पाई जाती हैं । संभवतः तमिल के लिए जब लिपि बनाई गई उसके बहुत बाद तक अन्य दक्षिण भारतीय भाषाओं का केवल बोलने के लिए प्रयोग होता रहा । बाद में जब इन भाषाओं ने विभिन्न भागों में महत्व प्राप्त कर लिया एवं अधिक विकसित हो गई तथा इनके लिए लिपि की आवश्यकता महसूस की गई तब तक संस्कृत के बहुत सारे शब्द इन भाषाओं में अपनी मूल ध्वनियों के साथ आ गए थे और यह धारणा भी अधिक स्पष्ट हो गई थी कि भाषा में प्रयुक्त सभी ध्वनियों के लिए अलग-अलग लिपि चिह्न अर्थात अक्षर होने चाहिए । यही कारण है कि ब्राहमी लिपि के एक या दूसरे रूप से जब इन भाषाओं की लिपियाँ बनाई गई ब्राह्मी के सभी अक्षर अर्थात क वर्ग से लेकर प वर्ग तक में पॉच-पॉच अक्षर लिये गए । ■

हिंदी किसी विशिष्ट वर्ग, प्रदेश या समुदाय की भाषा न होकर भारतीय जनता की भाषा है ।

—फादर कामिल बुल्के

असम के तुलसी: शंकरदेव

–चितरंजन लाल 'भारती'*

भारतीय इतिहास में मध्यकाल अन्यतम स्थान रखता है। इस वक्त एक तरफ भारतीय राजा आपसी प्रतिद्वंद्विता में अपने-अपने राज्य-सीमा के विस्तार में युद्धों में उलझे थे। दूसरी तरफ पश्चिम एशिया से चली मुस्लिम आक्रांताओं की आंधी नया इतिहास तैयार कर रहा था। ऐसे समय में भारतीय समाज में विभिन्न पंथ, मत और संप्रदायों की भरमार थी। सिर्फ हिंदू ही नहीं, बौद्ध और जैन मतावलंबी भी अनेक गुटों या पंथों में विभाजित थे। किसी को कोई दिशा-निर्देश नहीं था। या यूं कह लें कि सभी दिग्भ्रमित थे। मुस्लिम सत्ता ज्यों-ज्यों अधिष्ठित होती गई, पराभव और बढ़ता रहा। मगर जैसा कि विदित है भारतवर्ष राजनीतिक रूप में भले विखंडित रहा हो, अपनी सांस्कृतिक समृद्धि के बलबूते जीवंत रहा।

ऐसे घटाटोप भरे अंधेरे में दक्षिण से भक्ति की भाव धारा की भागीरथी ऐसी उमड़ी कि उसने देखते ही देखते विशाल जाहनवी का स्वरूप ग्रहण कर लिया। ठीक है कि इसका केन्द्र मध्य भारत रहा, जहां से सूर, तुलसी, जायसी, कबीर जैसे विख्यात भक्त कवि हुए। सुदूर प्रांतों पंजाब में गुरू नानकदेव हुए तो राजस्थान में मीराबाई हुईं। महाराष्ट्र से संत नामदेव हुए, तो बंगाल में चैतन्य महाप्रभु। इन सभी ने भक्ति की त्रैतरणी प्रवाहित कर दी। और यह वही समय था जब असम में शंकरदेव हुए, जिन्होंने असम में वैष्णव धर्म की आधारशिला रखी।

असम मूलत: प्राचीन भारतीय ग्रंथों में "प्राग्ज्योतिषपुर" अथवा "कामरूप" के नाम से ही जाना जाता रहा है। बहुत बाद में अहोम सामाज्य के समय ही इसका "असम" के रूप में प्रचलित और प्रसिद्ध हुआ। यहां के घने वनों, विशालकाय पहाड़ों और तेज धाराओं के साथ बहती गहरी नदियों ने इस क्षेत्र को दुर्गम बना दिया। तिसपर यहाँ क्षणों में मौसम को अपना मिजाज बदलते देर नहीं लगती। कब खूब वारिश हो और कब धूप निकल आए, कोई नहीं कह सकता। और इन सबके बीच थोड़ी-थोड़ी दूरी पर ही एक दूसरे की बोली-बानी, रहन-सहन और खान-पान में विविधता को देख कोई भी दिग्भ्रमित हो सकता है। चित्र-विचित्र प्रकार के कीट-पतंगों और सरीसृपों से लेकर हाथी और गैंडे जैसे विशालकाय जानवरों को झुंड में विचरण करते देख कोई भी सहज की रोमांचित और भयभीत भी हो सकता है। और इन सब पर भारी पड़ती हैं- अनेक जनश्रुतियां और किंवदंतियाँ, जो जादू-टोनों और तंत्र-मंत्र की कहानियों से भरी पड़ी है। वैसे भी पूर्व सदैव की मातृपूजक और शाक्त मतावलंबी रहा है। अहोम शासन के समय शैव मत का भी बहुत प्रचार हुआ। और ऐसे ही माहौल में शंकरदेव का प्रादुर्भाव हुआ।

सन् 1449 में नगांव जिले के बरदोया नामक गांव में शंकरदेव का जन्म एक संपन्न जमींदार घराने में हुआ था। उनकी माता-पिता का नाम क्रमश: सत्यसंध्या तथा कुसुम्बर थां। बचपन में ही माँ का साया सर से उठ जाने के कारण उनका लालन-पालन उनकी दादी खेरसुती न की। और जब वे सात साल के हुए, तो उनके पिता का देहान्त हो गया, बचपन से ही वे कुशाग्र बुद्धि संपन्न थे। उनका विवाह सूर्यवती नामक युवती से हुआ। शादी के तीन साल बाद ही एक कन्या को जन्म देकर सूर्यवती का देहान्त हो गया। स्वाभाविक रूप से उनमें वैराग्य का संचार हुआ और वे तीर्थाटन को निकल गये।

गया, काशी, प्रयाग, मथुरा, वृंदावन आदि ही नहीं, बल्कि पुरी और रामेश्वरम आदि का भी वे 12 वर्षों तक

* राजभाषा अनुभाग, मा सं एवं से विभाग, हिंदुस्तान पेपर कारपोरेशन लिमिटेड, कछाड़ पेपर मिल, पो. पंचग्राम, असम-788802

तीर्थाटन करते रहे । कल्पना करें, आज से लगभग छः सौ वर्ष पहले यात्रा कैसे की जाती रही होगी, जबकि आवागमन और संचार की कोई सुविधा न थी । समृद्ध लोग तो फिर भी हाथी, घोड़ा,पालकी अथवा बैलगाड़ी अथवा घोड़ागाड़ी पर यात्रा कर लिया करते थे । मगर हर प्रकार की सुविधाओं से हीन ये भक्त साधु-जन पैदल ही यात्रा करते होंगे । फिर भी इतना तो मानना ही होगा कि इन सांस्कृतिक दूत स्वरूप सन्यासियों और भक्त कवियों ने भारत की एकता के लिए महान कार्य किये ।

शंकरदेव का दूसरा विवाह 54 वर्ष की अवस्था में कालिंदी नामक युवती से हुआ । मगर इसके तत्काल बाद की वे पूरी तरह वैष्णव धर्म के प्रचार में लग गए । आगे के 14 वर्ष वेलगुरि में रहने के बाद वे शिष्यों के साथ कामरूप जिले के पाटवाउसी में रहने लगे । थोड़े समय के बाद वे पुनः तीर्थाटन पर निकल लिये । इन्हीं तीर्थाटनों के आधार पर ही वे सही मायने में संत कवि बन गये ।

कबीर, नानक देव, चैतन्य, रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य, सूरदास आदि भक्त कवि उनके समकालीन थे । ऐसी मान्यता है कि नानकदेव ने असम की यात्रा भी की थी । यह वह समय था, जब वल्लभाचार्य और रामातुजाचार्य जैसे गुरू कृष्ण-भक्ति में रमे शिष्यों को तैयार कर रहे थे । और इसी वक्त भक्ति-साहित्य की भाषा के रूप में ब्रज-भाषा को मान्यता मिल चुकी थी । कृष्ण काव्य ''गीति काव्य'' के रूप में प्रतिष्ठित और लोकप्रिय हो चला था । स्वाभाविक ही शंकरदेव उस धार्मिक, सांस्कृतिक परंपराओं को आत्मसात कर रहे थे, ताकि उसका वे अपने असम में प्रचार कर सकें, जहाँ बौद्ध, जैन, शैव, शाक्त आदि का वामाचार सामान्य जनों को दिग्भ्रमित और व्यथित कर रहा था ।

तीर्थाटन से लौटने के बाद की कोचविहार के राजा नरनारायण ने उन्हें अपने राज्य में बुला लिया । चूँकि उस समय अहोम तथा कछारी के अलावा अनेक छोटे-छोटे राज्य पूर्वोत्तर में बिखरे पड़े थे, जिनमें सत्ता-संघर्ष के साथ--साथ हिंदु धर्म के प्रति आस्था भी बढ़ रही थी और वे हिंदू संस्कृति में घुल-मिल रहे थे । इसी समय कोच राजा नरनारायण के भाई चिलाराय, जो कोच सेना का सेनापति भी था, उसने अहोम और कछारी राज्यों पर आक्रमण कर उन्हें पराभूत किया था । और यही कारण है कि उस समय पूर्वोत्तर भारत मे कोच राज्य की ख्याति चरमावस्था पर थी ।

कोचविहार के राजा नरनारायण शंकरदेव की मेधा, प्रतिभा और ज्ञान के प्रंशसक थे । फिर भी शंकरदेव ने न उन्हें दीक्षा दी और न ही उन्हें अपना शिष्य बनाया । तथापि शंकरदेव के निर्देशानुसार राजा नरनाराण ने राजधानी में एक मदनमोहन मंदिन का निर्माण कराया । एक सौ बीस साल के लंबे जीवन काल में शंकरदेव को कई बार अपने स्थान परिवर्तित करने पड़े । वे वरदोया से गांसौ, गांसौ से बेलगुरि-धूवाहाटा, वेलगुरि-धुवाहाटा से पालेंदि-चूनपोरा और वहां से गणकपारा, कुमार कुछि और बाउसी गये । अन्त में बेहार (कोच विहार) के मधुकर में उनका स्वर्गवास हुआ ।

वैसे समग्र रूप से देखा जाए तो शंकरदेव मूलतः भारतीय राष्ट्रीयता के पोषक थे । एक जगह वे अपनी अभिव्यक्ति देते है :

जानिवा जीवन दुर्लभ नरदेहा भारतत
जम्बुद्वीप मध्यते भारत श्रेष्ठतर
यिहेतु भारतेसे पूण्यभूमि हय
पावे स्वर्ग मोक्ष पद बैकुण्ठ को पाय
भारत समान कर्मभूमि आन नाइ
यितो आसि नरजन्म लभि भारतत
तार पुनरपि जन्म नाहि संसारत
देवरो वाञ्चनी भारतत नरकाया

महापुरूष शंकरदेव ने ''एक शरण नाम धर्म'' का प्रवर्तन किया । इस मन में 'दास्य भक्ति' प्रधान रहता है । आम जनता के सामने वैष्णव धर्म की मूल बातें रखने के लिए उन्होंने बहुत सारे शास्त्रों का अनुवाद किया और बहुत से ग्रंथों की स्वयं रचना भी की । उनके ग्रंथों में ''कीर्तन'' तथा ''दशम'' असमिया जनमानस में अत्यंत आदर के साथ लिया जाता है । उन दिनों जो भक्ति की पूजा पद्धति प्रचलित थी, वह मनुष्य केन्द्रित या वाममार्गी था । ऐसे विपरीत परिस्थितियों में उन्होंने हरिनाम पर विशेष बल देते हुए भक्ति तथा नाम विशेष पर बल दिया । उनके इस मत में तर्क तथा वादानुवाद की किंचित भी गुंजाइश नहीं थी ।

श्री शंकरदेव की रचनाओं में वरगीत, रूक्मिणी हरण काव्य, गुणमाला, अंकीया नाट विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । इसके अलावा दशम भागवत का उन्होंने अनुवाद किया । इनकी श्रेष्ठ रचना ''कीर्तन'' मानी जाती है, जिसे असमिया वैष्णव धर्म का आधार कहा जा सकता है । उन्होंने असमिया लोगों को विविध वाद्य-यंत्र, नृत्य, ताल आदि भी दिया ।

शेष पृष्ठ 32 पर

381 HA/12—9A

संस्कृति

भारतीय संस्कृति एवं कला को बौद्ध धर्म की देन

–डॉ. माया दुबे*

'संस्कृति' शब्द का उपयोग व्यापक अर्थ में किया जाता है। इसमें कई प्रकार के अर्थ शिलष्ट है। संस्कृति एवं सभ्यता को हम अलग-2 कर के नहीं परिभाषित कर सकते, जिस प्रकार व्यक्ति और व्यक्तित्व जल एवं लहर एक साथ जुड़े हुए है, ठीक उसी प्रकार संस्कृति एवं सभ्यता, सौन्दर्य एवं कला, धर्म एवं धर्मदर्शन सभी एक ही वृत्त पर विकसित होते है। सभी के केंद्र में 'मानव' है। अत: सभ्यता एवं संस्कृति उन उपलब्धियों और क्रिया - कलापों से सम्बन्धित है, जो क्रमश: मानव अस्तित्व की रक्षा तथा प्रसार करते है। मनुष्य की कल्पना के कुछ क्षेत्र ऐसे है, जैसे काव्य, कला तथा साहित्य जहाँ सौन्दर्य और उपयोगिता के पहलू एक दूसरे से अनिवार्य रूप से सम्मिश्रित हो जाते है, वही संस्कृति एवं सभ्यता दोनों का समन्वय हो जाता है। संस्कृति एवं कला मानव के सृजनात्मक क्रिया कलापों का ही परिणाम है। अत: संस्कृति समाजिक विरासत है। उसमें ज्ञान, नीति, कानून, रीति, -रिवाज धर्म, दर्शन, रहन, सहन, इत्यादि का समावेश होता है। संस्कृति का भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों रूप है। एक और मानव वाहय विश्व का संस्कार करके अर्थात् प्रकृति पर विजय प्राप्त करके उसमें परिवर्तन करने के लिए यत्नशील रहा है, तो दूसरी ओर वह अपनी आत्मा का संस्कार करके उसमें परिवर्तन करने में भी यत्नशील रहा है।

भारतीय संस्कृति में ये दोनों रूप समन्वित, दिखायी देते है। वैदिक ऋषि "तमसो मा ज्योर्तिगमय" का उदघोष करते हुए निरन्तर प्रयत्नशील रहे है, उनकी कर्मठता तथा जिजीविषा का स्पष्ट प्रमाण प्रकृति की उपासना तथा मानव हित के लिए नियंत्रण में मिलता है। लेकिन वाहय प्रकृति-विजय से ही वे सुतंष्ट नहीं हुए, उनकी जिज्ञासु प्रवृत्ति ने, सृष्टि के नानाविध विचित्र पदार्थों के प्रति कुतूहल को जाग्रत किया। "विश्व कहाँ से उद्भूत हुआ और कहाँ विलीन होगा हम कौन है, कहाँ से आये है, और कहाँ जाएंगे?" इस प्रकार तत्वपरक विचारणा का सूत्र ऋग्वेद के नासदीयसूक्त में मिलता है-

"को अद्वा वेद क इह प्रवोचत, कुत आ जाता, कुल इयंविसृष्टि" इसी प्रकार पुरूष सूक्त, हिरण्यगर्भ सूक्त, दार्शिनिक चिन्तन के बीज रूप में उदयभूत है। जब मुनष्य "कस्मै देवाय हविषा विधंम" की जिज्ञासा करता हुआ, दुख निवृत के लिए तथा संसार में सुख-पूर्वक जीने के लिए एंव ऐसे आधार स्तम्भ को खोजता है, जो उसे शान्त करे। इस प्रकार दर्शन के मूल में मानव-जिज्ञासा ही है। मनुष्य की इस सर्वतोमुखी अज्ञता ने ही अनेक विचारपरक शास्त्रों को जन्म दिया, जिसकी चरमपरिएति 'मोक्ष' की अवधारणा रही, जो भारतीय संस्कृति में उपनिषद् काल की प्रमुख उपलब्धि है। उसकी जिज्ञासाये तो अनन्त है, 'ब्रहमांडे तदपिण्डे' जितना रहस्यमय यह ब्रहमांड है, उतना ही रहस्यमय यह मानव पिंण्ड है। पंचतत्व निर्मित इस पिंण्ड में जो चेतन आत्मत्व है, वही समस्त विचार व्यवहार का अधिष्ठान होने से एक मात्र सत्य है। वही इस निखिल प्रपंच का मूल है।

अत: भारतीय संस्कृति में आध्यात्म्य चिंतन में "आत्म" तत्व को अत्याधिक महत्व प्राप्त है। "अहं ब्रहमास्मि", तत्त्वअसि', 'अहं शिवोडस्मि' आदि महावाम्य इसी तरफ इंगित करते है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति की विशेषतायें अप्रतिम है। और यहं निर्विवाद है कि किसी भी धर्म, दर्शन तथा साहित्य एवं कला का प्रभाव तत्कालीन समाज पर पड़ता है।

*एच आई जी-698, अरविन्द विहार, बाग मुगालिया, भोपाल (म.प्र.)

381 HA/12—9B

इसी प्ररिप्रेक्ष्य में बौद्धकालीन समाज पर भी बौद्ध धर्म, तथा उनके सिंद्वातों का प्रभाव दिखायी पड़ता है। बुद्ध का जन्म भारतीय इतिहास में एक अविस्मरणीय घटना है। तथा मानव के लिए एक ऐसे पथ-प्रदर्शक का अविर्भाव माना जा सकता है। जो विभिन्न मतों, शास्त्रों तथा पंथों में जकड़े हुए मानव को परम सत्य का सहज तथा अति उत्कृष्ट मार्ग बताते है। बुद्ध का धर्म दर्शन कम नैतिक आचरण पर अधिक बल रचना नहीं की बल्कि संसार में जन्म-जन्मात्तर से भटकते हुए, दुखी एवं पथभ्रष्ट मानव जाति को मुक्ति का मार्ग दिखाया। संसारिक करूण-रूदनों से व्यधित हद्रय बुद्ध ने राजवैभव त्याग कर मानव दुख दूर करने का प्रण लिया। यह वाकई एक विचित्र समानता है कि जैन एंव बौद्ध धर्म के संस्थापक बुद्ध एवं महावीर दोनों की क्षत्रिय-वंशी राजकुल में उत्पन्न थे, तथा विलास एवं वैभव उन्हें जन्मना प्राप्त था, जिसे प्राप्त करने के लिए मनुष्य अपना जीवन उत्सर्ग कर देता है। यह मानव कमजोरी है। वह आजीवन इसी की प्राप्ति में भटकता है। लेकिन इन महान विभूतियों के पास ये सब कुछ था, फिर भी उनकी करूणा जो ईश्वर की तरह सृष्टि कल्याण् के लिए महा करूणा में परिवर्तित हो गई। यह वही करूणा भाव है, जो आदि कवि बाल्मिकी को आदि काव्य का रचियता बनाता है। "कौन्चबध" की छोटी सी घटना मन परिवर्तित करके विशाल करूणा के रूप में प्रस्फुटित हुई। यही करूणा का भाव बालक सिद्धार्थ के हृदय में संस्कार रूप से विद्यमान था जो छोटे से पक्षी के कष्ट से अधिकार भाव तक जाग्रत हुई और "मारने वाले से बचाने वाला बड़ा" यह बात बचपन में ही बालक सिद्धार्थ के मन में घर कर गई। बड़े होकर, बचपन, बुढापा एवं मृत्यू को देखकर मानव को इन दुखो से छुटकारा दिलाने का प्रयास आजीवन किया।

बौद्ध की समस्त शिक्षाओं का आधार चार आर्थ सत्य है- दुख, दुख समुदाय, दुख का कारण एवं दुख निवारण। और इसी निवारण पर जोर देते हुए उन्होंने आठ आष्टामिग मार्ग बताये, जिस पर चल कर व्यक्ति सम्यक को प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार बुद्ध के व्यक्तित्व तथा उनके उपदेशों ने भारतीय संस्कृति पर व्यापक प्रभाव डाला। समाज में उनका वर्चस्व तेजी से बढने लगा। जिसका कारण था एक तो भाषा। उन्होंने पाली को चुना जो लोकबोली के रूप में प्रचलित थी। और ज्यादा लोग उसको समझ सकते थे। तथा जाति एंव लिंगभेद को उन्होंन महत्व नहीं दिया। बुद्ध का मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति मोक्ष का अधिकारी है।" मोक्ष प्राप्ति पर किसी का विशेषाधिकार नहीं है। इस प्रकार घूम-घूमकर स्वंय जब तक जीवित रहे वे मानव को दुख मुक्ति का मार्ग सुझाते रहे।

भारतीय संस्कृति को बौद्ध धर्म की अनोखी देन रही है। सांस्कृति, समाजिक, धार्मिक, आर्थिक, साहित्यिक, राजनितिक सभी कलाओं पर भी बौद्ध धर्म का गहरा प्रभाव पड़ा। प्रज्ञा एवं ज्ञान के क्षेत्र में एक क्रांति उत्पन्न हुई यह धर्म भारत की सीमाओं से बाहर निकलकर परदेश में भी अति प्रचलित हुआ। पूरे एशिया को बौद्ध धर्म के सिद्धांतो ने प्रभावित किया।

भारतीय संस्कृति एवं समाज की इसकी कुछ प्रमुख देन है :-

1. भारतीय जनमानस को सर्वप्रिय धर्म प्रदान किया जिसमें नैतिक आचरण और सच्चरित्रता थी, आडम्बर एवं कर्मकांड का अभाव था।
2. भारतीय जनता को मूर्ति-निर्माण की ओर सम्भवत: बौद्ध धर्म ने ही प्रेरित किया। जो प्रांरभिक मूर्तियां मिलती है, वे सब बुद्ध और बोधिसत्वों की है। साथ ही बिहार तथा स्तूप कला का अविर्भाव भी बौद्ध धर्म की ही देन है।
3. भारतीय-समाज में संहा और संघाराम का प्रचलन बौद्धों ने ही प्रारम्भ किया। जिसमें भिक्षु निवास किया करते थे। इससे पहले भारतीय समाज में साधु-सन्यासी वनों तथा कन्दराओं में रहते थे।
4. भारतीय-समाज में नि:स्वार्थ सेवा भावना तथा धर्म-प्रचारक का कार्य बौद्ध भिक्षु करते थे। वे आत्मकल्याण से ज्यादा मानव-कल्याण को महत्व देते थे।
5. बौद्ध-धर्म ने भारतीय-संस्कृति को एक विशाल साहित्य प्रदान किया। और "पालि" जन-भाषा को साहित्यिक भाषा को रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय बौद्ध साहित्य को ही है।
6. इसी प्रकार भारतीय स्थापत्य तथा वास्तुकला को भी बौद्धा धर्म ने प्रभावित किया। अनेकों बौद्ध-विहार, चैत्य, स्तूप इसके उदाहरण है।
7. बौद्ध-धर्म ने भारत का अन्य देशों से सांस्कृतिक सम्बन्ध की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

8. यह धर्म राजधर्म के रूप में भी अनेक राजाओं के लिए प्रिय धर्म था। अशोक ने बौद्ध धर्म ग्रहणकर हिंसा पर रोक लगा दी।

9. बौद्ध-भिक्षुओं में सम्मिलित रहकर आपसी सम्बध एवं सौहार्द की भावना पर जोर दिया।

10. दर्शन के क्षेत्र में एक नवीन विचारधारा के रूप में बौद्ध धर्म ने क्रांतिपूर्ण भूमिका निभायी।

11. बौद्ध धर्म की नीतियों ने अनेकों राजाओं को प्राभावित किया। तथा अहिंसा को परम धर्म के रूप में स्वीकार किया।

इस प्रकार बौद्ध धर्म भारतीय, संस्कृति, समाज एवं कला-साहित्य सभी क्षेत्रों में अपने सिद्धांतों से प्रभावित करता है। चूँकि बौद्ध-धर्म सैद्धाधित दर्शन को प्रभावित किया। इसकी जड़े मानवतावाद पर टिकी है, अतः यह मानव कल्याण की भावना पर अवधारित है।

अतः बौद्ध-धर्म ने उस काल में सामान्य जन-मानस को प्रभावित किया तथा लोकप्रिय-रहा।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. **''प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास''-डॉ. जय शंकर मिश्र बिहार, हिंदी ग्रंथ अकादमी, 1980**
2. **प्राचीन भारतीय संस्कृति- बी. एन. लुनिया, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा, 2002**
3. **बेदांतसार-डॉ. संत्तनारायण श्रीवास्तव, सुदर्शन प्रकाश इलाहाबाद, 1968**
4. **बौद्ध-दर्शन-डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शाक्य म.प्र. हि.ग्र. अकादमी 2001**
5. **धर्म-दर्शन की रूपरेखा-डॉ. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, मोतीलाल, बनारसीदास** ■

पृष्ठ 29 का शेष

लोगों का मन आकर्षित कराने के लिए वे स्वयं नाटक का अभिनय कराते थे। असम के सत्र (मठ-मन्दिर) और नामघर आज भी श्रीशंकरदेव का गुणगान कर रहे हैं। समाज को एकीकृत करने वाले सभी उपादान जैसे नृत्य,गीत भाओना, अंकीया नाटयाभिनय, मेला को उन्होंने समेट लिया था। उनके वैष्णव धर्म की भाषा ''ब्रजबुली'' अर्थात् ''ब्रजभाषा'' थी, जो असमी लिपि में लिपिवद्ध की गई है। कुल मिलाकर देखा जाए तो असम को वर्तमान के असमिया-संस्कृति में ढालने में महापुरूष शंकरदेव और उनके प्रिय शिष्य माधवदेव की अनुपम देन है।

उत्तर भारत में तुलसीदास ने ''रामचरित मानस'' की लोक-भाषा अवधी का आश्रय लेकर नागरी लिपि में सृजन कर भक्ति की जो भाव धारा प्रवाहित की, उससे भारतीय जनमानस अभी तक आप्लावित है उसी प्रकार शंकरदेव ने 'वरगीत' का लोक-भाषा व्रज में, परंतु असमी लिपि में सृजन कर उसे असम के प्रत्येक घर में लोकप्रिय बना दिया। दोनों महानुभावों का प्रारंभिक पारिवारिक जीवन अनाथ अवस्था में अभावों के बीच व्यतीत हुआ। दोनों को राज्य और समाज से जो अनेक कष्ट मिले, फिर भी वे अपने धुन में लगे रहकर नवीन समाज का निर्माण किया। और यही कारण है कि यदि शंकरदेव को असम का तुलसी कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। ■

पर्यावरण

भविष्य के लिए जल की बचत

–राज बहादुर गुप्ता*

प्रस्तावना :

सभ्यता के विकास में जल की भूमिका सबसे बड़ी है । वेदों तथा ग्रंथों ने इस तथ्य की पुष्टि करते हुए, जल को परमात्मा, पालनकर्त्ता, तुष्टिदायी माता, पाप निवारक, रस एवं अमृत तक की संज्ञा दी है । इसके सहारे नावों पर सवार हमारे पूर्वजों ने यात्राएँ कीं तथा अपनी ही दुनियाँ को खोजा । जब पहले चारों ओर पानी दिखाई देता था, तब पानी का मूल्य कोई जानता नहीं था । लेकिन अब लोग बूंद-बूंद के लिए तरस रहे हैं । यह बात सच है कि बैठकर खाते रहने से बिलगेट्स जैसा अमीर आदमी भी भिखारी हो जाता है । जल व जीवन के अन्योत्याश्रित संबंध की व्याख्या इस प्रकार भी की जाती है कि सर्वप्रथम पृथ्वी बनी । फिर तापमान की कमी तथा गैसों की अभिक्रिया के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार होने पर जल का जन्म हुआ । जीवों का प्रादुर्भाव हुआ । जीव अपने विकास की विभिन्न अवस्थाओं को पार करता हुआ, अंत में मानव के रूप में परिवर्तित हुआ । यानी जल ही जीवन के रूप को साकार साबित किया । प्रारंभ में मनुष्यों ने जल स्रोतों के आस-पास रहना प्रारंभ किया, क्योंकि उसे जीवन यापन, पशुपालन, तथा कृषि के लिए जल की नितान्त आवश्यकता थी । सभी पुरानी सभ्यताएँ नदियों के किनारे ही विकसित हुई । परंतु आज जल की अपार कमी महसूस की जा रही है । इसकी कमी के कारण सर्वत्र त्राहि-माम्, त्राहि-माम् हो रहा है और शुरू से जल बचत न करना ही इस समस्या का मुख्य कारण है ।

जल की कमी की अभरती समस्या :

औद्योगिक क्रांति, जन संख्या में वृद्धि लोगों के जीवन स्तर में सुधार जल स्रोतों का अविवेकपूर्ण दोहन जल की बर्बादी, जल प्रबंधन तथा भंडारण में अकुशलता आदि ने जल समस्या को जन्म दिया तथा मानव जल का अविवेकपूर्ण दोहन करते हुए यह भूल गया कि वह मूर्खतापूर्वक संपूर्ण मानव जीवन के अस्तित्व पर ही प्रश्न चिह्न लगा रहा है ।

दुनियाँ को अब पानी की बचत अथवा जल संरक्षण का ख्याल आया है । समस्या इतनी गंम्भीर हो गयी है कि संयुक्त राष्ट्र संघ को भी घोषणा करनी पड़ी कि दुनिया के सामने ग्लोबल वार्मिंग के बाद दूसरा सबसे भयानक खतरा पानी की किल्लत का है । प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता में लगातार गिरावट आ रही है । इसने जन्म दिया, पानी की राजनीति को, इसके लिए कई राज्यों के वर्षों से आपसी विवाद है, पंजाब हरियाणा के बीच तलवारें खिंची हैं, भारत-नेपाल, भारत-पाकिस्तान, भारत-बंगलादेश भी के मध्य पानी के विवाद है दुनियाँ भर में है । पश्चिम एशिया में लडाई तेल की नहीं पानी की है । भविष्य वाणी करने वालों ने पानी को अगला तेल घोषित कर दिया है । जल संकट की गम्भीरता के संर्दभ में पूर्व अमेरिका राष्ट्रपति श्री जे. एफ.कैनडी का यह कथन अतिशयोक्ति नहीं है कि जो जल संकट को हल कर लेगा, वह दो नोबेल पुरस्कार का हकदार होगा । मानव जीवन के लिए स्वच्छ जल की उपलब्धता इतनी महत्वपूर्ण है कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस विषय में गंभीरता से सोचा जा रहा है । बढ़ते जल संकट को देखते हुए, यह जरूरी है भविष्य के लिए जल की बचत की जाए यानी भविष्य के लिए जल का संरक्षण किया जाए । इसके लिए लोगों को जागरूक बनाया जाये इस बारे में हमारे देश में कई कारगर उपाय किए जा रहे हैं जैसे कि मध्य प्रदेश में जलाभिषेक कार्यक्रम राजस्थान तथा गुजरात में जल की खेती, पुराने स्रोतों का पुनरूद्धार आदि ।

* सहायक महाप्रबंधक (पी पी एंड सी) राउरकेला इस्पात संयंत्र (सेल) राउरकेला-769011

381 HA/12—10A

भविष्य के लिए जल बचत के उपाय :

देश में पर्याप्त जल संसाधन होने के बावजूद भी पानी की किल्लत हमेशा बनी रहती है । समस्या इतनी गंभीर है कि कुछ शहरों तो सप्ताह में दो या तीन बार ही जल आपूर्ति की जाती है । गर्मियों में तो सार्वजनिक नलों/टेंकरों या अन्य जल स्रोंतो पर लोगों की लंबी कतार सामान्य बात हो चुकी है । इसका मुख्य कारण एक तरफ जहाँ अधिकांश वर्षा जल बहकर समुद्र में चला जाता है, वहीं दूसरी तरफ भू-जल स्तर, अत्याधिक प्रयोग के कारण लगातार गिरता जा रहा है, कल तक जो क्षेत्र हरित पट्टी के नाम से जाने जाते थे, आज लगाकर सुखा पन रहा है, जल स्रोत सूख गए हैं । ऐसी परिस्थिति में देश के एक बहुत बड़े भूभाग को यदि रेगिस्तान बनने से रोकना है तो उपलब्ध जल को संरेक्षित करने की अत्यधिक आवश्यकता है । इसके लिए जल का पुनर्चक्रण, उन्नत तकनीक द्वारा अवशिष्ट जल का पुन: प्रयोग, जल का बहुसंख्यक उपयोग, जल संरक्षण की पारम्परिक पद्धति जैसे वर्षा जल तथा छत वर्षा जल हार्वेस्टिग और उचित वाटर-शेड प्रबंधन द्वारा उपस्थित उपलब्ध जल स्रोंतो का पुनरूद्धार किया जा सकता है । जो कि पारम्परिक तथा आधुनिक यंत्रों जैसे रिमोट सैन्सिग, भू-विज्ञान सूचना पद्धति इत्यादि प्रयोग कर की जा सकती है । भविष्य के लिए बचत अभियान में सभी की सहभागिता जरूरी है यानी व्यक्ति तौर पर तथा सामाजिक तौर पर पर ।

सामाजिक व क्षेत्र स्तर पर प्रयास :

सामाजिक स्तर पर जल बचत/संरक्षण के लिए व्यक्ति वर्षाकाल में अपप्रवाह जल का कृतिम रूप से जमीन के अंदर संरक्षित कर जाता है । इससे जमीन के अंदर जल का कृत्रिम पुनर्भरण सम्भव होता है । इसके लिए छत जल खेती, क्षेत्र जल फैलाव, उचित फसल जल प्रबंधन, कुआँ इत्यादि के माध्यम से कृत्रिम पुनर्भरण किया जाता है । जल बचत के लिए वर्षा जल की खेती (वर्षाकाल हावेस्टिंग) गुजरात, राजस्थान में बहुत कारगर साबित हुई है ।

वर्षा जल की खेती से भविष्य के लिए जल की बचत की जा सकती है । यह तरीका बैंक या बचत योजनाओं में निवेश के समान है । इससे भू-जल स्तर का संतुलन बराबर बना रहता है । जमीन के अन्दर जल संरक्षित होने से जमीन पर किसी संरचना की जरूरत नहीं पड़ती । तथा जल लम्बे समय तक भण्डारित किया जाता है । इसका मुख्य लाभ प्रति इकाई जल बचत अथवा संरक्षण पद्धति पर खर्च कम होता । तालाब, पोखर बनाकर जमीन की सतह पर भी वर्षा जल संरक्षित किया जा सकता है, जैसा कि गुजरात राज्य तथा मध्य प्रदेश में किया जा रहा है । इससे भूजल पुनर्भरण स्वत: होता रहता है । इससे पूरा समाज लाभान्वित होता है ।

क्षेत्र स्तर पर हम उन्नत कृषि तरीके अपनाकर जल अपप्रवाह, वाष्पोत्सर्जन सीपेज, परलोकेशन इत्यादि कम करके जल की बचत कर सकते हैं । कारण उपरोक्त तरीकों से मृदा में नमी बनी रहती है और जल की मांग कम की जा सकती है । इसके लिए कुछ विधियाँ निम्नलिखित हैं ।

1. उपलब्ध जल के अनुसार फसल और उसकी किस्म का चयन तथा समय पर कृषि कार्य ।
2. कंटूर कृषि : इससे वाष्पोसर्जन व भू-क्षरण में कमी होती है ।
3. उन्नत सिंचाई विधियों का प्रयोग जैसे ड्रिप और स्प्रिक्लर प्रणाली का प्रयोग ।

व्यक्ति स्तर पर जल की बचत :

आज की पीढ़ियों को अपनी आदतों में सुधार तथा आवश्यकता अनुसार जल का उपयोग करके आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए जल की बचत करके जल का संरक्षण किया जा सकता है । इसके लिए निम्नलिखित बातें अपनाई जा सकती हैं ।

1. ब्रश करते हुए, कपड़ा व बर्तन धोते हुए स्नान करते हुए नल को हमेशा न खुला रखें । जब वास्तव में जरूरत हो तभी खोलें ।
2. टायलेट को अनावश्यक रूप से फ्लश न करते रहें । यह भी सुनिश्चित करें कि टायलेट टैंक में रिसाव न हो, टैंक में ईंट या कोई ऐसी चीज रखिए ताकि टैंक की कुछ जगह हो और हर फ्लश के दौरान कम जल प्रयोग हो ।
3. वर्षा जल को, बाल्टी या ड्रम में जरूर इकट्ठा करें, क्योंकि हर बुंद कीमती है ।
4. कार धोने, किचन, गार्डनिंग इत्यादि के लिए जल का प्रयोग बाल्टी से करें न कि होस पाइप से ।

शेष पृष्ठ 78 पर

राजभाषा संबंधी गतिविधियां

(क) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

'ग' क्षेत्र

पूर्व रेलवे, महाप्रबंधक (राजभाषा) कार्यालय, 17 एन.एस.रोड, कोलकाता-700001

क्षेत्रीय रेल राजभाषा कार्यान्वयन समिति (क्षेरेराकास) की तिमाही बैठक दिनांक 23.9.2011 को महाप्रबंधक, पूर्व रेलवे श्री वरुण भरथुआर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

महाप्रबंधक एवं समिति अध्यक्ष ने अपर महाप्रबंधक, मुख्य राजभाषा अधिकारी, प्रमुख विभागाध्यक्षों, मंडलों/कारखानों से आए प्रतिनिधियों का स्वागत किया। उन्होंने मुख्य राजभाषा अधिकारी द्वारा व्यक्त विचारों के साथ सहमति व्यक्त करते हुए कहा कि हमें अनुशासन-बद्ध मानसिकता के साथ हिंदी के अनिवार्य प्रावधानों को रेलवे के कार्यक्षेत्र में पूर्ण रूप से अनुपालन करना/करवाना है। महाप्रबंधक ने राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के प्रावधानों का विशेष जिक्र करते हुए कहा कि इस धारा में वर्णित 14 दस्तावेजों में से किसी को भी केवल एक भाषा में जारी करना निषिद्ध (Prohibited) है। किसी दस्तावेज पर (Hindi Version will follow) मात्र लिख देने से मौजूदा कानून का अनुपालन नहीं हो जाता। उन्होंने सारगर्भित स्वर में कहा कि इस संबंध में उल्लंघन होने पर संबंधित अधिकारी की जिम्मेदारी तय की जाए।

महाप्रबन्धक महोदय ने निम्नांकित निर्देश भी दिए :

1. वैबसाइट को द्विभाषी रूप में अपडेट किया जाए। इसमें सभी आवश्यक सामग्री डाली जाए ताकि जनता को उसकी भाषा में सभी प्रकार की जानकारियां प्रदान की जा सकें।
2. मंडलों/कारखानों/विभागों में फाइलों पर हिंदी के कार्यों की मात्रा बढ़ाई जाए।
3. मूल हिंदी टिप्पण आलेखन योजना के अंतर्गत कार्मिकों को पुरस्कृत किया जाए एवं हिंदी आशुलिपि/टंकण जानने वाले कार्मिकों को नकद प्रोत्साहन योजना के तहत लाभ दिया जाए ।
4. स्टेशन संचालन नियम हर स्टेशन पर अनिवार्यत: द्विभाषी रूप में उपलब्ध रहे। सियालदह मण्डल कृपया शेष स्टेशन संचालन नियमों का टंकण कार्य शीघ्र पूरा करे और उन्हें सभी स्टेशनों में उपलब्ध कराए।
5. हिंदी के प्रति माहौल को सुदृढ़ करने तथा विभागों में हिंदी का प्रयोग-प्रसार व्यवस्थित ढंग से करने के लिए महाप्रबंधक जी ने निदेश दिया कि विभागाध्यक्ष विभागीय स्तर पर प्रत्येक तिमाही के अंत में समीक्षा बैठक करें तथा इन बैठकों के निर्णयों के फलस्वरूप मात्रा व गुणवत्ता की दृष्टि से हिंदी के प्रयोग में हुई वृद्धि का ब्यौरा क्षेरेराकास की बैठकों में रखा जाए।

'ख' क्षेत्र

कार्यालय आयकर, आयुक्त (केंद्रीय), दण्डी स्वामी चौक, लुधियाना-141001

आयकर निदेशक (अंवे.) कार्यालय, लुधियाना प्रभार की आठवीं बैठक दिनांक 8-11-2011 को पूर्वाह्न 11.00 बजे श्री एच. एस. सोही, आयकर निदेशक (अंवे.), लुधियाना की अध्यक्षता में उनके कक्ष में आयोजित की गई।

सर्वप्रथम बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों का अध्यक्ष महोदय द्वारा स्वागत किया गया। तदोपरांत अध्यक्ष महोदय की अनुमति से इस बैठक के लिए निर्धारित कार्यसूची के अनुसार सदस्य सचिव श्री प्रमोद कुमार शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने इस बैठक का संचालन किया।

आयकर आयुक्त लुधियाना प्रभार की पिछली बैठक दिनांक 30-6-2011 को श्री आर. के. गोयल, आयकर निदेशक (अंवे.) लुधियाना की अध्यक्षता में आयोजित की

गई। इस बैठक के कार्यवृत्त पृष्ठां. सं. राभाविअनु/801(8)/2011-12/253 से 270 दिनांक 4-7-2011 के अधीन सभी कार्यालयों को भेज दिए गए थे। सभी अधिकारियों से अनुरोध किया गया था कि यदि उन्हें कार्यवृत्त के संदर्भ में कोई आपत्ति हो या सुझाव देना हो तो कार्यवृत्त प्राप्ति के 15 दिन के भीतर इस कार्यालय को भेज दें।

यह सूचित किया गया कि किसी भी कार्यालय से कोई भी सुझाव/आपत्ति प्राप्त नहीं हुई है। उपस्थित सदस्यों से पिछले कार्यवृत्त के संदर्भ में कोई सुझाव देने या इस संबंध में उन्हें कोई आपत्ति हो, इसके बारे में पुन: पूछा गया। किसी भी सदस्य द्वारा कोई भी सुझाव या आपत्ति न दिए जाने पर सर्वसम्मति से पिछले कार्यवृत्त की पुष्टि की गई।

श्री एच.एस. सोही, आयकर निदेशक (अंवे.), लुधियाना ने बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी में कार्य करना सरल व सहज है। हमारे प्रभार में हिंदी में प्रवीण अधिकारी पर्याप्त मात्रा में हैं। इसलिए उन्हें इस दिशा में स्वयं हिंदी में काम करते हुए अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत करनी होगी जिससे प्रेरित होकर वे भी अपना अधीक से अधिक काम हिंदी में कर सकें।

'क' क्षेत्र

कार्यालय आयुक्त केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क भोपाल

कार्यालय आयुक्त केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क भोपाल की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दिनांक 29-9-2011 की बैठक आयुक्त महोदया हरमीत सिंह की अध्यक्षता में आयुक्तालय के सभा कक्ष में आयोजित की गई।

अध्यक्ष महोदया एवं समिति के सदस्यों के समक्ष पिछली तिमाही की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का कार्यवृत पुष्ठि हेतु प्रस्तुत किया गया, समिति के सदस्यों द्वारा जिसकी पुष्ठि की गई।

सभी शाखा प्रभारियों द्वारा 1-7-2011 से 30-9-2011 तक की अवधि की राजभाषा हिंदी प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की गई जिस पर अध्यक्ष महोदया द्वारा संतोष व्यक्त करते हुए शाखा प्रभारियों को निर्देश दिए वे अपनी-अपनी शाखाओं में शतप्रतिशत कार्य राजभाषा हिंदी करने का लक्ष्य बनाए रखें।

अध्यक्ष महोदया ने हिंदी तिमाही प्रगति रिपोर्ट समय पर प्रस्तुत न करने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए शाखा प्रभारियों/प्रभागीय कार्यालयों को प्रत्येक तिमाही की समाप्ती पर अनिवार्य रूप से अगले माह की 5 तारीख तक हिंदी शाखा मुख्यालय को प्रस्तुत करने के निर्देश दिए।

शाखा प्रभारियों द्वारा हिंदी में प्रत्राचार बढ़ाने हेतु वर्ष 2011-2012 हेतु में अपनी अपनी शाखा में किए जा रहे प्रयासों व उनकी सफलता पर अध्यक्ष महोदया से चर्चा की जिस पर अध्यक्ष महोदया द्वारा संतोष व्यक्त किया गया।

पूर्व मध्य रेल, कार्यालय महाप्रबंधक (राजभाषा) हाजीपुर

पूर्व मध्य रेल, क्षेत्रीय रेल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 35वीं बैठक दिनांक 23-9-2011 को मुख्यालय के नए प्रशासनिक भवन के सम्मेलन कक्ष में संपन्न हुई। मुख्य-विद्युत इंजीनियर सह अपर महाप्रबंधक श्री आर. के. सिंह ने बैठक की अध्यक्षता की।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए अपर महाप्रबंधक श्री आर. के. सिंह ने कहा कि हमें केवल राजभाषा पखवाड़े तक ही नहीं बल्कि साल भर हिंदी में काम करना चाहिए। उन्होंने खुशी व्यक्त करते हुए समिति को बताया कि हम सबके द्वारा हिंदी में निरंतर किए जा रहे सरकारी कामकाज के फलस्वरूप राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने लगातार तीसरी बार रेल मंत्रालय को इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार योजना के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार प्रदान किया है, उन्होंने इसके लिए हार्दिक शुभकामनाएं दी। उन्होंने पूर्व मध्य रेल हाजीपुर पर हिंदी में हो रहे अधिकांश कार्य के लिए खुशी जाहिर की। उन्होंने सभी सदस्यों से अनुरोध किया कि कंप्यूटरों के माध्यम से अधिकतम कार्य हिंदी में करें तथा कंप्यूटरों में हिंदी में कार्य यूनिकोड में करें जिससे कि संबंधित कार्य को दूसरे कंप्यूटरों में पढ़ने, लोड करने या ऐडिट करने में कोई कठिनाई न हो। उन्होंने सभी से कहा कि वे सुनिश्चित करें कि सामान्य आदेश अर्थात् जनरल ऑर्डर, टेंडर नोटिस, टेंडर फार्म, करार, व अधिसूचना आदि को अनिवार्यत: हिंदी-अंग्रेजी में जारी करें, सभी मंडल सुनिश्चित करें कि उनके अंतर्गत गठित सभी राजभाषा समितियों की बैठकें नियमित रूप से समय पर हो, अधिकारीगण स्वयं हिंदी में काम कर अपने साथियों व अधीनस्थों के लिए उदाहरण प्रस्तुत करें, हिंदी की नोटिंग पर हिंदी में ही लिखें। उन्होंने कहा कि मैंने अपना निरीक्षण हिंदी में किया है। आप सब भी अपना निरीक्षण हिंदी में ही करें।

मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, हरियाणा क्षेत्र, आयकर भवन, सैक्टर-2, पंचकूला-134112

मुख्य आयकर आयुक्त, हरियाणा क्षेत्र पंचकूला की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष 2011-12 की दूसरी तिमाही बैठक दिनांक 23-9-2011 को मुख्य आयकर आयुक्त एवं अध्यक्ष श्री जैड. एस. कलार की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

मुख्य आयकर आयुक्त एवं अध्यक्ष श्री जैड. एस. कलार ने अपने संबोधन में कहा कि आज की बैठक में जो भी चर्चा हुई है और निर्णय लिए गए हैं, उन्हें आप पूरी तरह से अपने कार्यालयों में लागू करवाएं और प्रयास करें कि आपके कार्यालय तथा आपके अधीनस्थ कार्यालयों में तिमाही बैठकें नियमित रूप से प्रत्येक तिमाही में आयोजित की जाएं। तिमाही रिपोर्ट भी समय पर भिजवाना सुनिश्चित करें। उत्तर पश्चिम क्षेत्र की बैठक में लिए गए निर्णयानुसार इस बार की रिपोर्ट 8 अक्तूबर तक बोर्ड को भिजवाई जानी है अत: सभी प्रयास करें कि आपके प्रभार की रिपोर्ट 5 तारीख तक इस कार्यालय में पहुंच जाए व रिपोर्ट पर हस्ताक्षर करने से पूर्व आंकड़ों की वास्तविकता एक बार अवश्य जांच लें। विशेषकर धारा 3(3) के आंकड़े एवं हिंदी पत्राचार के आंकड़े। पत्राचार में रिटर्नों/नोटिसों इत्यादि की संख्या भी शामिल होनी चाहिए। वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु एवं राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए प्रत्येक कार्यालय में अपने-अपने ढंग से प्रयास हो रहे हैं लेकिन हमारे प्रयास सरकार और संसदीय समिति की अपेक्षाओं के अनुसार होने चाहिए ताकि जब कभी भी संसदीय समिति किसी कार्यालय का निरीक्षण करें तो हम इस स्थिति में हों कि अपने कार्यालय के बारे में उन्हें गर्व से बता सकें। हमारे विभाग में जो कार्य हिंदी में हो सकते हैं उनकी सूची आपके पास है अत: प्रयास करें कि उक्त कार्य तो अवश्य ही हिंदी में ही किए जाएं। आयकर आयुक्त (अपील) कार्यालयों में भी सहायक निदेशक के सुझाव अनुसार नोटिंग हिंदी में करने का प्रयास करें। मुझे आशा है कि इन प्रयासों से हम अपने क्षेत्र में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने में अवश्य सफल होंगे।

नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन (शहरी विकास मंत्रालय), नई दिल्ली-110002

नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन में 1 सितम्बर, 2011 को श्री जय बी. क्षीरसागर, मुख्य नियोजक की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया। श्री धनसिंह वर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर की गई कार्रवाई के संबंध में विवरण प्रस्तुत किए। तत्पश्चात बैठक की कार्यसूची पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि संगठन की हिंदी पत्रिका "नियोजन संदेश" को प्रकाशन के लिए भेज दिया गया है और हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर मुख्य नियेजक द्वारा इसका विमोचन किया जाएगा। उन्होंने सभी विभागाध्यक्षों और अनुभाग अधिकारियों को अपने यहां प्रयोग में आने वाले तकनीकी अंग्रेजी शब्दों को राजभाषा अनुभाग में भेजने का अनुरोध किया ताकि इन्हें संकलित करके अंग्रेजी-हिंदी शब्दावली का रूप दिया जा सकें। सहायक निदेशक (राजभाषा) ने बताया कि धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले कागजातों को अनिवार्य रूप से द्विभाषी रूप में जारी किया जा रहा है। साथ ही उन्होंने इस बात पर हर्ष व्यक्ति किया कि संगठन में हिंदी पत्राचार का लक्ष्य राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुरूप है ।

(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें

'ग' क्षेत्र

कोलकाता (बैंक)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), कोलकाता की 52वीं बैठक दिनांक 21-10-2011 को अपराह्न 3.30 बजे 'सुचिंतन' युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया, प्रधान कार्यालय, युनाइटेड टावर के सम्मेलन कक्ष, 11, हेमंत बसु सरणी, कोलकाता में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता संयोजक बैंक यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री भास्कर सेन ने की।

समिति की 30-5-2011 को संपन्न 51 वीं बैठक के कार्यवृत्त की सर्वसमिति से पुष्टि की गई।

381 HA/12—11A

2. पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर की गई कार्रवाई की समीक्षा

(i) समिति को बताया गया कि वर्ष 2010-11 का लंबित वार्षिक अंशदान इंडियन बैंक से प्राप्त हो गया है एवं स्टेट बैंक ऑफ हैदराबाद एवं स्टेट बैंक ऑफ मैसूर, जिनसे अंशदान की राशि प्राप्त नहीं हुई है, अनुवर्तन का निर्णय लिया गया।

वर्ष 2011-1212 का अंशदान जिन पांच सदस्य कार्यालयों से प्राप्त नहीं हुआ है, उनके साथ अनुवर्तन का निर्णय लिया गया।

(ii) वर्ष 2010-11 के लंबित कार्यक्रमों में आंध्रा बैंक तथा बैंक ऑफ महाराष्ट्र द्वारा हिंदी कार्यशाला का आयोजन, यूको बैंक द्वारा राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन, आई डी बी आई बैंक लि., द्वारा बैंकिंग शब्दावली एवं अनुवाद प्रतियोगिता का आयोजन तथा सिंडिकेट बैंक द्वारा टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता का आयोजन शीघ्र करने का अनुरोध किया गया।

(iii) पूर्व लंबित कार्यक्रमों के संदर्भ में विजया बैंक तथा सिंडिकेट बैंक द्वारा आयोजित की जाने वाली राजभाषा संगोष्ठी एवं सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित की जाने वाली कार्यपालकों के लिए राजभाषा परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन, संबंधित सदस्य बैंकों से यथाशीघ्र करने का अनुरोध किया गया।

राजभाषा विभाग, कोलकाता के उप निदेशक (कार्या. (डॉ. बी. एन. पाण्डेय ने विभिन्न बैंकों में राजभाषा संवर्ग में अविलंब पदों को भरे जाने का सुझाव दिया। साथ ही कंप्यूटर पर यूनिकोड के प्रयोग पर बल देते हुए उन्होंने इसे शाखा स्तर तक कार्यान्वित करने की सलाह दी। अपने वक्तव्य में उन्होंने शाखाओं को नियम 10(4) के अंतर्गत अधिसूचित करने हेतु सभी सदस्य कार्यालयों से आग्रह किया, जहां 80 प्रतिशत से अधिक अधिकारी/कर्मचारी हिंदी में कार्य ज्ञान प्राप्त हैं। डॉ. पाण्डेय ने बैंकों में विज्ञापन पर किए जा रहे व्यय तथा उसमें से हिंदी पर किए गए व्यय को भी छमाही रिपोर्ट के प्रारूप में शामिल करने का सुझाव दिया तथा कुछ नराकासों की तरह नराकास (बैंक) कोलकाता की समिति को भी शहर में प्रवेश द्वार लगाने का सुझाव दिया।

केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् के स्थानीय संयोजक श्री यमुना प्रसाद राय ने समिति की गतिविधियों की सराहना की एवं इसकी उन्नति की कामना की। साथ ही उन्होंने हिंदी पत्राचार हेतु केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद द्वारा प्रकाशित कार्यालय सहायिका एवं शब्दावली की खरीद एवं उसे सदस्य कार्यालयों के बीच वितरित करवाने का आग्रह किया। अध्यक्ष महोदय ने अपने वक्तव्य में समग्र रूप से बैंकिंग आमजनता की भाषा यानि हिंदी में करने की सलाह दी ताकि कार्यान्वियन और भी आसान हो सकें साथ ही अध्यक्ष महोदय ने सलाह दी कि जिन सदस्य बैंकों से रिपोर्ट प्राप्त नहीं होता है, उनके कार्यालय को संयोजक बैंक के महाप्रबंधक की ओर से पत्र भिजवाने की व्यवस्था की जाए साथ ही हिंदी के नेमी पत्राचार के संबंध में उप निदेशक (कार्या.) के सलाह को क्रियान्वित किया जाए।

'ख' क्षेत्र

दाहोद

दाहोद नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति की बैठक दिनांक 28-9-2011 को 12.00 बजे लोको कैरिज एवं वैगन कारखाना के मंथन सभागृह में आयोजित की गई। समिति की अध्यक्षता श्री संजय अग्रवाल, मुख्य कारखाना प्रबंधक प.रे. दाहोद द्वारा की गई।

समिति के अध्यक्ष श्री संजय अग्रवाल जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि राजभाषा के रूप हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देना हमारा संवैधानिक दायित्व है। इस दायित्व की पूर्ति की दिशा में आने वाली कठिनाईयों के संबंध में आपसी विचार-विमर्श के लिए एक संयुक्त मंच के रूप में नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति की विशिष्ट भूमिका है।

उन्होंने कहा कि नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति अपने उद्देश्य एवं कार्यों में काफी सक्रिय है एवं तिमाही रिपोर्ट पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी का यह दायित्व है कि वे हस्ताक्षर करने से पूर्व यह सुनिश्चित कर लें कि रिपोर्ट में भेजे गए आंकड़े सही हैं ताकि बैठक में चर्चा के दौरान स्पष्टीकरण न देना पड़े।

क्षेत्रीय कार्यान्वियन पश्चिम क्षेत्र मुंबई से प्रेक्षक के रूप में उपस्थित श्रीमती साधना त्रिपाठी ने राजभाषा विभाग द्वारा तैयार हिंदी सॉफ्टवेयरों के बारे में बैठक में विस्तार से बताया साथ ही अनुरोध किया कि राजभाषा विभाग द्वारा विकसित वैब साईट www.Rajbhasha.gov.in तथा www.rajbhasha.nic.in पर आप कोई भी उपयोगी सॉफ्टवेयर

381 HA/12—11B

अपलोड कर हिंदी के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करें। साथ ही यूनीकोड के उपयोग पर विशेष बल दिया तथा बताया कि राजभाषा नीति से संबंधित प्रावधानों का कार्यान्वियन सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी कार्यालय प्रमुखों की है। उनसे यह भी अपेक्षा है कि इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपने-अपने कार्यालयों में प्रभावी जांच बिन्दु बनाएं।

मुंबई

डॉ. एस. एन. सिंह निदेशक-केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली की अध्यक्षता में एचपीसीएल के प्रधान कार्यालय में दिनांक 30 जून, 2011 को मुंबई स्थित नगर राजभाषा कार्यान्वियन समितियों के सचिवों की बैठक का आयोजन किया गया।

डॉ. एस. एन. सिंह ने बैठक में उपस्थित सभी टॉलिक सचिवों को संबोधित करते हुए एचपीसीएल द्वारा राजभाषा कार्यान्वियन की दिशा में चल रहे प्रयासों एवं बैठक आयोजन की सराहना की। उन्होंने कहा कि सभी सरकारी संगठनों, सार्वजनिक उपक्रमों, वित्तीय संस्थानों स्थित राजभाषा विभागों द्वारा कार्यान्वयन की दिशा में चल रहे प्रयास बेहद चुनौतीपूर्ण हैं। कार्यालयों में अब भी अनुवाद के सहारे काम हो रहा है। यदि हमें अपना उद्देश्य सिद्ध करना है तो जरूरी है अनुवाद की विधा को और अधिक विकसित और सार्थक बनाया जाए ताकि समयबद्ध ढंग से हिंदी अनुवाद में सृजनात्मकता का निर्माण किया जा सकें। इसके लिए 21 दिवसीय अल्पकालीन हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने पर विचार किया जा रहा है। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों की महत्ता एवं गंभीरता के प्रति सजगता लाने के लिए इसका उल्लेख तिमाही प्रगति रिपोर्ट में किया जाए।

नराकास के कार्यकलापों के संबंध में अपने विचार प्रकट करते हुए डॉ. एस. एन. सिंह ने बताया कि देश भर में 290 नराकास संस्थाएं हैं। सचिव महोदया सुश्री वीणा उपाध्याय की अध्यक्षता में होने वाली नियमित बैठकों में नराकास पर विचार रूप में चर्चा की जाती है और विभिन्न संगठनों की उपलब्धियों और गतिविधियों की भी समीक्षा की जाती है।

'क' क्षेत्र

छतरपुर (म. प्र.)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आकाशवाणी छतरपुर के कार्यक्रम प्रमुख श्री रामप्रकाश की अध्यक्षता और उपनिदेशक (कार्यान्वयन) कार्यालय भोपाल के अनुसंधान अधिकारी श्री हरीश सिंह चौहान के विशेष आतिथ्य में सम्मपन्न हुई। दिनांक 21 सितम्बर, 2011 को आकाशवाणी छतरपुर के सभागार में हिंदी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों और भोपाल के प्रतिनिधि के संदर्भ में बैठक बुलाई गई थी।

केंद्राध्यक्ष श्री आई.ए.हाशमी ने सभी उपस्थित सदस्यों का आभार व्यक्त किया और हिंदी के संबंध में प्रकाश डालते हुए कहा कि रोजगार के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही अनिवार्य हैं और जहां हिंदी में कार्य हो रहा है वहां पर पीआरओ, हिंदी अनुवादक और हिंदी अधिकारी होना अनिवार्य है। हमारे कार्यालय में 99 प्रतिशत हिंदी में पत्र जा रहे हैं और उनका मुंबई, दिल्ली अन्य जगहों से फीडबैक भी प्राप्त हो रहा है कि छतरपुर से हिंदी में अच्छे पत्र आ रहे हैं। राजभाषा कार्यालय को एक यूनिकोड सभी नराकास के सदस्यों को भेजें ताकि एकरूपता बनी रहे।

बुलंदशहर

बुलंदशहर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की प्रथम बैठक दिनांक 20/9/2011 को आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता पंजाब नैशनल बैंक के बुलंदशहर मंडल प्रमुख, श्री वी. के. शर्मा, उप महाप्रबंधक ने की ।

श्री राकेश कुमार, उप निदेशक ने अपने संबोधन में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के गठन के उद्देश्यों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इस मंच का सदुपयोग बुलंदशहर नगर में हिंदी का प्रचार-प्रसार करने के लिए किया जाए। श्री कुमार ने आगे कहा कि उत्तरा प्रदेश हिंदी भाषी राज्य है एवं यहां सभी कार्य अपनी भाषा में किए जाएं। उन्होंने कहा कि समिति की बैठकों में सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखों का भाग लेना अनिवार्य है जिससे बैठकों में सार्थक चर्चा की जा सके एवं बैठकों में लिए जाने वाले निर्णयों का तत्काल क्रियान्वयन किया जा सकें।

समिति के अध्यक्ष, श्री वी. के. शर्मा ने अपने संबोधन में सचिव महोदया एवं राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उन्होंने पंजाब नैशनल बैंक को बुलंदशहर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के संयोजन का महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा है जो पंजाब नैशनल बैंक के साथ-साथ पूरे बुलंदशहर के लिए अत्यन्त गौरव की बात हैं समिति के गठन से सभी सदस्य कार्यालयों में

हिंदी के प्रचार में काफी बल मिलेगा तथा स्टाफ को हिंदी में काम करने की प्रेरणा मिलेगी। उन्होंने सभी सदस्य कार्यालयों से अपील की कि वे बुलंदशहर नगर समिति को आदर्श समिति बनाने में सहयोग दें। उन्होंने बताया कि समिति के सदस्य कार्यालयों की कुल संख्या 29 है जिनमें से 19 बैंक, 5 उपक्रम तथा 5 केंद्रीय सरकार के कार्यालय हैं। श्री शर्मा ने आगे कहा कि सरकार की नीति के अनुसार हमें अपना समस्त सरकारी काम-काज हिंदी में करना है। यद्यपि बैंकों, उपक्रमों तथा अन्य कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग बढ़ा है पर अभी और काफी कार्य हिंदी से किए जा सकते हैं। इन कार्यों की शुरुआत प्रत्येक कर्मचारी को स्वयं करनी होगी जैसे-उपस्थिति पंजिका में नाम लिखना, उनमें हस्ताक्षर करना, हिंदी में प्राप्त पत्र का उत्तर हिंदी में देना, यात्रा भत्ता बिल, अवकाश आवेदन आदि हिंदी में प्रस्तुत करना, फाइलों एवं पत्रों पर छोटी टिप्पणियां हिंदी में लिखना आदि। उन्होंने कहा कि इस मंच का उपयोग कार्यालयों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों को परस्पर सहयोग से दूर करने के लिए किया जाएगा। उन्होंने बुलंदशहर नगर को हिंदीमय बनाने पर बल दिया।

शिवपुरी (म. प्र.)

नगर राजभाषा कार्यन्वयन समिति, शिवपुरी की वर्ष 2011-12 की प्रथम छमाही बैठक श्री सुरिन्दर खत्री, सेनानी, दूर संचार वाहिनी एवं अध्यक्ष नराकास, शिवपुरी की अध्यक्षता में 30 अगस्त, 2011 को सायं 16.30 बजे से दूर संचार वाहिनी, भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल के सभागार में आयोजित की गई।

श्री सुरिन्दर खत्री, सेनानी दूर संचार वाहिनी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सर्व प्रथम बैठक में समुचित उपस्थिति पर प्रसन्नता व्यक्त की तथा नराकास की कार्यवाही पहली बार पावर प्वाइंट पर तैयार करने के लिए बधाई दी। बैठक का संचालन निरीक्षण/हिंदी अनुवादक लोक नाम नेगी ने किया जिस में नराकास सदस्य कार्यलयों में राजभाषा-हिंदी की स्थिति की समीक्षा की गई तथा राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों पर व्यापक चर्चा की गई। अध्यक्ष महोदय ने बैठक में उपस्थित समस्त सदस्य कार्यालयों के प्रशासनिक प्रधान को राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के प्रति उनके उत्तरदायित्व का स्मरण कराते हुए संघ की राजभाषा नीति का अक्षरशः कार्यान्वयन सुनिश्चित करने पर बल दिया तथा आगामी 14 सितंबर हिंदी दिवस की बधाई देते हुए राजभाषा हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु अपना योगदान देने की अपील की।

कानपुर

दिनांक 3 अगस्त, 2011 को 14.30 बजे ओ.ई.एफ. निरीक्षण भवन के सम्मेलन कक्ष में कानपुर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 25वीं बैठक का आयोजन किया गया आयुध उपस्कर निर्माणी समूह मुख्यालय, कानपुर के उपमहानिदेशक श्री एस. के. आचार्या द्वारा अध्यक्ष महोदय एवं सभा में उपस्थित विभिन्न संस्थानों के विभागाध्यक्षों/प्रतिनिधियों का स्वागत किया गया। श्री विनोद कुमार शर्मा, उपनिदेशक (कार्यान्वयन), उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गाजियाबाद का स्वागत आयुध उपस्कर निर्माणी समूह मुख्यालय, कानपुर के निदेशक श्री वी. के. त्रिपाठी द्वारा किया गया। स्वागत भाषाण की प्रस्तुति में श्री एस. के. आचार्या ने कहा कि अध्यक्ष महोदय के मार्गदर्शन में यह समिति बहुत ही अच्छा कार्य कर रही है। हिंदी भाषी न होते हुए भी हिंदी के क्षेत्र में आपकी विशेष अभिरुचि है। आपने पुनः कहा कि आज की तारीख में कानपुर नराकास की गतिविधियों में अच्छी खासी वृद्धि हुई है। सभी सदस्य कार्यालयों का सहयोग अति महत्वपूर्ण है। यह समिति राजभाषा नीति के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित है।

श्री विनोद कुमार शर्मा, उपनिदेशक (कार्यान्वयन), उत्तर क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गाजियाबाद ने कहा कि विभागाध्यक्षों की कम उपस्थिति पर चिंता व्यक्त की। आपने सदस्य–सचिव महोदया से अनुरोध किया कि जो कार्यालय अनुपस्थित हैं, उनकी एक सूची अध्यक्ष महोदय के माध्यम से उत्तर क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गाजियाबाद को भेजें। महामहिम राष्ट्रपति महोदय के आदेशानुसार नराकास की बैठकों में कार्यालय प्रमुखों का भाग लेना आवश्यक है। आज की समीक्षा में यह देखने को मिला कि कुछ कार्यालयों ने धारा 3(3) का उल्लंघन किया है तथा कुछ कार्यालयों ने हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में न देकर अंग्रेजी में दिए हैं। यह सर्वथा अक्षम्य है। कानपुर 'क' क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। यहां हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कार्मिकों की संख्या बहुत अधिक है। हिंदी हमारे देश की एकता, अखंडता, अस्मिता और संस्कृति से जुड़ी हुई है। हम किसी दूसरी भाषा का विरोध नहीं करते हैं। हमें जितनी भी भाषाएं सीखने का अवसर मिले, चूकना नहीं चाहिए। सभी को साथ लेकर चलेंगे, तभा कुछ प्राप्ति होगी। आपने पुनः कहा है कि

राजभाषा विभाग ने वर्ष 2011-12 के लिए एक लक्ष्य निर्धारित किया है। पूर्व की तुलना में इस बार लक्ष्य लचीला है। इसका उद्देश्य यह है कि हम सत्यता पर चल कर उन लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त कर सकें।

(ग) कार्यशालाएं

'ग' क्षेत्र

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन में दिनांक 12 एवं 13 सितंबर, 2011 को दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। हिंदी कार्यशाला का उदघाटन संयंत्र के विशेष कार्याधिकारी श्री एस. परमसिवम ने किया।

भारी पानी संयंत्र के विशेष कार्याधिकारी एस. परमसिवम ने कहा कि हमें इस प्रकार के कार्याशालाओं का भरपूर लाभ उठानी चाहिए। पहले तमिलनाडु के बहुत कम स्कूलों में हिंदी पढ़ाई जाती थी। जिसके कारण हम लोग हिंदी नहीं पढ़ पाए। लेकिन आजकल लोगों में जागरुकता आ गई है और सब स्कूलों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। अत: हिंदी की आवश्यकता को समझते हुए, हमें कार्यालयों में प्रयोग किए जाने वाले मानक आरूपों, जिसके बारे में कार्यशालाओं में सिखाई जाती है, उन्हें हिंदी में लिखने की पूरी कोशिश करनी चाहिए।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं तकनीकी सेवाएं प्रबंधक श्री आई. सेनगुप्ता ने कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा है इस भाषा में काम करना हमारा कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि जिन अधिकारियों को हिंदी का ज्ञान है वे अन्य कार्मिकों को हिंदी में काम करने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए। उन्होंने कार्यशाला में आए अधिकारियों से कहा कि हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा होने के नाते हमें हिंदी में बोलने और समझने की भी कोशिश करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि अगर किसी भी चीज़ को सीखने की चाह हो तो हम आसानी से और कम समय में सीख सकते हैं। इस अवसर पर प्रशासन अधिकारी श्री एस एस भूपति ने अपने उद्बोधन में कहा कि हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में यह कार्यशाला हमारे लिए विशेष है। उन्होंने उपस्थित प्रतिभागियों से कहा कि वे इस दो दिन की कार्यशाला का लाभ उठाते हुए राजभाषा हिंदी को उसका स्थान दिलाने में सरकार की मदद करें। इस कार्यशाला में कुल 11 व्याख्यान हिंदी व्याकरण, राजभाषा नियम, प्रोत्साहन योजनाएं, यात्रा भत्ता, छुट्टी यात्रा रियायत, कार्यग्रहण समय, छुट्टी नियम, हिंदी शिक्षण योजना एवं वार्षिक कार्य-निषपादन मूल्यांकन रिपोर्ट, सूचना का अधिकार, सुरक्षा जागरूकता नामक विषय पर दिए गए।

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान, औद्योगिक बस्ती, डिग्गियाना, जम्मू-180010

दिनांक 14-9-2011 को कार्यालय परिसर में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में संस्थान के निदेशक श्री वीरेन्द्र शर्मा ने हिंदी दिवस पर संस्थान के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देते हुए कहा कि देश में सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिए जाने वाले प्रस्ताव को 1 सितंबर, 1949 को संसद द्वारा पारित किया गया था उसी समय से प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि हिंदी में काम काज करना सरल है बस संकल्प लेने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि भाषा ही हमारी पहचान है, हम विदेश में भी भाषा के माध्यम से पहचाने जाते हैं। आज हिंदी भाषा विश्व सतर पर बोली और समझी जाती है। विदेशी हिंदी सीख रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमें मूल रूप से सरकारी कामकाज हिंदी में करने का अधिक से अधिक प्रयास करना होगा।

दिनांक 15-9-2011 से 20-9-2011 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन भी किया गया। इस सप्ताह के दौरान विभिन्न कार्यशालाओं का आयोजन हुआ। इन कार्यशालाओं में कर्मचारियों को फाइलों पर हिंदी में नोटिंग करने, विषय या कम संख्या इत्यादि हिंदी में लिखने तथा आकस्मिक अवकाश व कार्यग्रहण रिपोर्ट इत्यादि हिंदी में लिखने का अभ्यास कराया गया।

'ख' क्षेत्र

आकाशवाणी, अहमदाबाद

हिंदी पखवाड़ा-2011 के दौरान दिनांक 26-9-2011 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजि की गई। हिंदी कार्यशाला में गुजरात युनिवर्सिटी की कॉर्स कोर्डिनेटर एवं भवंस कॉलेज की प्रधानाचार्य डॉ. नीरजा अरुण वक्ता के रूप में आमंत्रित थी।

उन्होंने हिंदी की उत्पत्ति के बाद विकास के बारे में सोदाहरण चर्चा की। अपने वक्तव्य में उन्होंने बताया कि एक हिंदी 1960 की है। और उन्होंने 1960 के शागिर्द फिल्म के पुराने गीत 'बड़े मियां दीवाने ऐसे ना बनो' लैपटोप पर बजाकर सभी उपस्थित सदस्यों को सुनाया। फिर इस संदर्भ में चर्चा की और बताया कि एक वो गीत था और आगे उन्होंने 'जाने तू या जाने ना' फिल्म के 'पप्पू कान्ट डान्स' गीत बजाकर इस संबंध में भाषा की प्रगति और उसमें आए परिवर्तन पर चर्चा की। पहले उर्दू मिश्रित हिंदी का प्रचलन अधिक था। और अब अंग्रेजी मिश्रित हिंदी हो गई है। भाषा आकृति में रस डालने का काम करती है। कोई भी आकृति प्रकृति से निकलती है, प्रकृति से निकलती है, प्रकृति एक बिंदु है, चाहे वह विचार बिंदु है। हिंदी जब से जन्मी है तब से निरंतर आगे बढ़ रही है। संस्कृत जो अपभ्रंश हो के हिंदी बनी, चेतक का स्मारक एक कविता है, जो आकृति के द्वारा भाव व्यक्त करती है। क्या ताजमहल ऐसी आकृति नहीं है जो मृत्यु के बाद लिखी गई। ऐसे उन्होंने कई उदाहरण देते हुए अपने वक्तव्य से सभी उपस्थित सदस्यों का मन मोह लिया।

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय : नाशिकरोड

अधिकारियों में हिंदी कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए मुद्रणालय में दिनांक 20 और 21 सितंबर, 2011 को 70वीं हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। स्थानीय बैंकों/उपक्रमों के राजभाषा अधिकारियों/प्रबंधकों को व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया। कार्यशाला में कुल पांच (05) अधिकारियों ने भाग लिया। सहायक निदेशक (रा.भा.) श्री एस व्ही मुर्हेकर ने कार्यशाला का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि अधिकारियों को जनभाषा में अर्थात् हिंदी में कार्य करने की आदत डालनी चाहिए जिससे वे अपने कार्य अधिक प्रभावी ढंग से कर पाएंगे। उन्होंने कहा कि इस वैश्विक प्रतिस्पर्धा के युग में सभी आवश्यक भाषाओं का ज्ञान रखना समय की आवश्यकता है। अब अनेक बड़े देश भारत के साथ व्यापार करने के लिए हिंदी सीख रहे हैं। उन्होंने हिंदी को अधिक व्यावहारिक और सरल बनाने के लिए सभी अधिकारियों से हिंदी सीखने और उसका उपयोग अपने सरकारी कार्य में करने की अपील की। उन्होंने कहा कि इसका अच्छा प्रभाव आने वाले स्टाफ पर पड़ेगा तथा आगे आने वाले स्टाफ भी आसानी से हिंदी में कार्य कर सकेगा।

कार्यशाला के पहले दिन के पहले सत्र में श्री संतोश श्रीवास्तव, राजभाषा अधिकारी, युनियन बैंक ने वार्षिक कार्यक्रम एवं कार्यान्वयन के बारे में जानकारी दी। दूसरे सत्र श्री सुबोध मिश्र, प्रशासनिक अधिकारी (राजभाषा) भारतीयजीवन बीमा निगम, नाशिक को आमंत्रित किया गया था। श्री बंसुोध मिश्र जी ने भाषा सम्प्रेषाण अर्थात् भाषा का महत्व, भाषा का प्रभाव इस पर जानकारी दी।

कार्यशाला की दूसरे दिन के प्रथम सत्र में श्री बी. आर. चितळे, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, ने हिंदी प्रशिक्षण और तत्संबंधित प्रोत्साहन योजनाएं इस विषय पर जानकारी दी। राजभाषा के माध्यम से देश की सेवा के साथ-साथ सरकार की अनेक प्रोत्साहन योजनाओं द्वारा होने वाले आर्थिक लाभ के बारे में उन्होंने जानकारी दी। दूसरे सत्र में डॉ. अनिकेत बोरकर, मानव संसाधन (सेवाएं प्रबंधन) अधिकारी, एच. ए. एल. ने अनुवाद प्रनिया और कार्यालयीन अनुवाद विषय पर व्याख्यान दिए। कार्यालयीन अनुवाद की सहजता और सरलता के बारे में विस्तार से जानकारी दी। हिंदी में कार्य करने की झिझक को दूर कर हिंदी में ही कार्य करने की इच्छा करने की सलाह दी।

'क' क्षेत्र

भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण महानगर दूरसंचार भवन, जवाहरलाल नेहरु मार्ग, पुराना मिंटो रोड, समीप जाकिर हुसैन कॉलेज, नई दिल्ली-110002

भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण (भादूविप्रा) में श्री आर. के. मिश्रा, प्रधान सलाकहार (प्र. एव आर ई) के मार्गदर्शन के तहत दिनांक 9-11-2011 को 1100 से 1300 बजे तक संचचार क्रांति पर यूनिकोड के महत्त्व पर तकनीकी हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

381 HA/12—12B

श्री आर. के. मिश्रा, प्रधान सलाहकार, जोकि प्राधिकरण में राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष भी हैं, ने सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने में आने वाली चुनौतियों और उनके समाधान पर प्रकाश डाला। उन्होंने स्पष्ट किया कि हिंदी में कामकाज करना केवल हमारी मानसिकता पर निर्भर करता है। यदि हम प्रतिवद्ध होंगे तो निश्चित ही हम लीक के अनुसार चली आ रही बोझिल एवं जटिल सरकारी अंग्रेजी का प्रयोग करने की बजाए सरल और सही हिंदी में अपना कामकाज कर सकेंगे। हिंदी में कामकाज आसान है और यदि हमें किसी अंग्रेजी शब्द का तत्काल ही हिंदी रूप आता भी नहीं है तो हम उसे ज्यों का त्यों भी लिख सकते हैं।

श्री केवल कृष्ण, वरिष्ठ तकनीकी निदेशक, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र ने संचार क्रांति में यूनिकोड का महत्व, विंडोज आधारित किसी भी ऑपरेटिंग सिस्टम में यूनिकोड को सक्रिय करना, नॉन यूनिकोड में तैयार फाइलों को यूनिकोड में बदलना मशीन अनुवाद कैसे करें, भाषायी कंप्यूटरीकरण के संबंध में किसी भी समस्या का समाधान विषय के सभी पहलुओं पर सरल,सरस और स्पष्ट भाषा में वृहद प्रकाश डाला। यह व्याख्यान प्रतिभागियों के लिए अत्यंत लाभप्रद रहा क्योंकि उन्होंने यूनिकोड एवं मशीनी अनुवाद की विस्तृत जानकारी प्राप्त की। सत्र के बीच में प्रतिभागियों द्वारा विषय से संबंधित अनेक प्रश्न भी पूछे गए जिनका श्री केवल कृष्ण, वरिष्ठ तकनीकी निदेशक द्वारा मौके पर ही समाधान किया गया। व्याख्यान प्रतिभागियों के लिए अत्यंत उपयोगी साबित हुए जिनकी उनके द्वारा सराहना की गई।

आकाशवाणी, इन्दौर

माननीय संसदीय राजभाषा समिति, राजभाषा विभाग तथा आकाशवाणी महानिदेशालय के निर्देश के अनुपालन में, कार्यालय में बुधवार, दिनांक 8 नवम्बर, 2011 को एक दिवसीय व्यावहारिक 'हिंदी कार्यशाला' का आयोजन किया गया।

आरंभ में कार्यालयाध्यक्ष श्री सुधीर सोधिया, उपमहानिदेशक (अभियांत्रिकी) ने माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर इस हिंदी कार्याशाला का शुभारंभ किया। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि ऐसी कार्यशालाओं में दैनिक कार्यों के लिए देवनागरी लिपि में मानक शब्दों व अंकों के प्रयोग तथा इसमें आने वाली व्यावहारिक कठिनाइयों पर चर्चा होनी चाहिए। श्री सोधिया ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि केन्द्र में प्रयुक्त होने वाले तकनीकी तथा प्रशासनिक शब्दों का द्विभाषी संग्रह पूर्व में प्रकाशित केंद्र की 'संक्षेपिका' पुस्तिका में उपलब्ध है, जिसका अध्ययन अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा किया जाना चाहिए। उन्होंने ऐसी व्यावहारिक हिंदी कार्यशालाओं की उपयोगिता की चर्चा करते हुए कहा कि इसमें अधिकाधिक कर्मचारी भाग लेकर, अपनी व्यावहारिक कठिनाइयों का निदान कर सकते हैं।

इस एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला में अपराह्न 3 बजे से 5 बजे तक आयोजित सत्र में 'प्रसारण सामग्री में मानक हिंदी शब्दों व अंकों का प्रयोग' विषय पर श्री सुनील कुमार तिवारी, समाचार संपादक एवं प्रमुख, प्रादेशिक समाचार एकांश ने अपने विचार व्यक्त किए। इस दौरान उन्होंने भाषा की उत्पत्ति से लेकर वर्तमान में उपलब्ध विविध चैनलों की भाषा शैली की चर्चा करते हुए बताया कि किस प्रकार भाषा भिन्न-भिन्न समुदायों के लिए परिवर्तित होती रहती है। श्री तिवारी ने कहा कि हमें स्थानीय शब्दों के प्रयोग से भी परहेज नहीं करना चाहिए क्योंकि हिंदी एक नदी की तरह है जो भिन्न-भिन्न भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करते हुए बहते चलती है। उन्होंने पत्राचार की भाषा और प्रसारण की भाषा के अंतर को समझाया। साथ ही, राजभाषा, राष्ट्रभाषा और कार्यालयीन भाषा शैली की उदाहरण सहित चर्चा की। श्री तिवारी ने प्रशिक्षणार्थियों से अनुरोध किया कि वे सरकारी कामकाज में हिंदी के सरल शब्दों का प्रयोग करें क्योंकि हमारा मकसद आम जनता तक अपनी बात को पहुंचाना होता है। इसी प्रकार प्रसारण में यथासंभव अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप का प्रयोग किया जाना चाहिए क्योंकि हमारे देश में अलग-अलग प्रांतों की अपनी-अपनी राजभाषाएं हैं, किंतु एकरूपता की दृष्टि से संविधान में अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप ही मान्य किया गया है।

केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी, रांची-835202

कें.त.अ.व.प्र.सं., रांची में दिनांक 24-9-2011 को प्रशासनिक एवं तकनीकी कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में कुल 42 प्रशासनिक/तकनीकी कर्मचारी उपस्थित थे। कार्यशाला में यूनिकोड के विविध पहलुओं पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

यूनिकोड के संबंध में सुसंगत जानकारी संस्थान के सहायक निदेशक (राजभाषा) ने उपलब्ध कराई जबकि यूनिकोड को सक्रिय किए जाने, फोंट संस्थापित करने एवं ई-फाइल कनवर्सन आदि के संबंध में प्रशिक्षण संस्थान के कंप्यूटर प्रोग्रामर श्री अंशोक कुमार सैनी ने दिया।

इसके पूर्व कार्यशाला का उदघाटन संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक-डी डॉ. एम. के. सिन्हा ने किया। उन्होंने अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में कर्मचारियों को यूनिकोड पर ही कार्य करने का सुझाव दिया।

भारतीय डाक विभाग कार्यालय पोस्टमास्टर जनरल, इंदौर क्षेत्र, इंदौर-452001

पोस्टरमास्टर जनरल कार्यालय इंदौर में दिनांक 23-9-2011 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला कार्यालय में 14 से 28 सितंबर, 2011 तक मनाए गए हिंदी दिवस व हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित की गई। इसका उद्देश्य भारत सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन व राजभाषा कार्यान्वयन को और गति प्रदान करना तथा सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी में करने में कर्मचारियों की झिझक दूर करना था। प्रमुख वक्ता कार्यालय के सहायक निदेशक (द्वितीय) श्री पी. डी. वैरागी थे। प्रमुख वक्ता ने प्रारंभ में हिंदी कार्यशाला की महत्ता प्रतिपादित की। उन्होंने कहा कि हिंदी देश की भाषा है, और हिंदी का सर्वाधिक चलन है। उन्होंने आगे कहा कि कोई भी देश अपनी भाषा के बल पर ही तरक्की कर सकता है और बहुसंख्यक लोगों द्वारा बोली जाने के कारण ही हमारे संविधान निर्माताओं ने देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में 14 सितंबर, 1949 को स्वीकार किया था। प्रमुख वक्ता ने इस कार्यशाला में राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय नई दिल्ली द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2011-12 की विस्तृत जानकारी सभी को दी तथा इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हर संभव प्रयास करने पर जोर दिया। इसके अलावा हिंदी में मौलिक लेखन को बढ़ावा देने के लिए चलाई जा रही विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं और राजभाषा संबंधी विभिन्न नियमों/प्रावधानों की जानकारी सभी को दी। साथ ही उन्होंने परिमंडल कार्यालय, भोपाल से प्राप्त हिंदी कार्यशाला मॉडयूल और डाक निदेशालय, नई दिल्ली से प्राप्त डाक शब्दावली की जानकारी सभी को दी। हिंदी और अंग्रेजी भाषा के शब्दों वाक्यों और टिप्पणियों पर चर्चा करते हुए प्रतिभागियों को हिंदी में पत्र और टिप्पण लेखन का कुछ हद तक अभ्यास भी करवाया। इस कार्यशाला में 30 कर्मचारियों ने भाग लिया तथा उन्हें कार्यशाला प्रमाण पत्र भी प्रदान किए गए।

क्षेत्रीय तसर अनुसंधान केंद्र केंद्रीय रेशम बोर्ड : वस्त्र मंत्रालय शांती निवास जिला परिषद् चौक के पास तकिया वार्ड पो. बा. नं.-17 भंडारा-441904

क्षेत्रीय तसर अनुसंधान केंद्र भंडारा कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें केंद्रीय रेशम बोर्ड के तीन ईकाईयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथी श्री शशी कुमार वर्मा भंडारा जिला श्रमिक पत्रकार संघ के अध्यक्ष तथा हिंदी दैनिक लोकमत समाचार भंडारा के जिला प्रतिनिधि ने कहा कि हिंदी ही सही अर्थों में भारत की लोकभाषा है। समूचे भारत देश में यह बोली जाती है अत: जरूरी है कि इसे लोकभाषा का दर्जा दिलाने के प्रयास किए जाने चाहिए।

श्री शशीकुमार वर्मा जी ने कहा कि हिंदी को राष्ट्रभाषा, राजभाषा, संघभाषा, संपर्क भाषा, व्यवहार भाषा आदि संज्ञाओं से विभूषित किया गया है लेकिन यह वास्तविक रूप से भारत की लोकभाषा है और हमें अब इसे लोकभाषा के रूप में अपनाना होगा। पत्रकारिता में हिंदी भाषा का प्रयोग व सावधानियां इस विषय पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि ऐसी कार्यशालाओं के आयोजन से हिंदी भाषा को समझने व उसके लेखन में लाने का अवसर मिलेगा। श्री शशीकुमार वर्मा जी ने पत्रकारिता में हिंदी के प्रयोग व उसकी प्रयोग पद्धति पर विस्तृत रूप व्याख्यान दिया। साथ-साथ उन्होंने कहा कि सारी भारतीय भाषाओं में हिंदी सबसे आसान भाषा है जिसको एक बार अपनाने से सारे कार्य हिंदी में आसानी से किए जा सकते हैं।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, मुख्यालय, नई दिल्ली

वरिष्ठ अधिकारियों के लिए हिंदी कार्यशाला

कर्मचारी राज्य बीमा निगम मुख्यालय, नई दिल्ली के वरिष्ठ अधिकारियों को राजभाषा नीति की विस्तृत जानकारी देने एवं संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षणों के प्रति जागरुक करने के लिए दिनांक 24-9-2011 (शनिवार) को प्रात: 10.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक सूरजकुंड,

चित्र समाचार

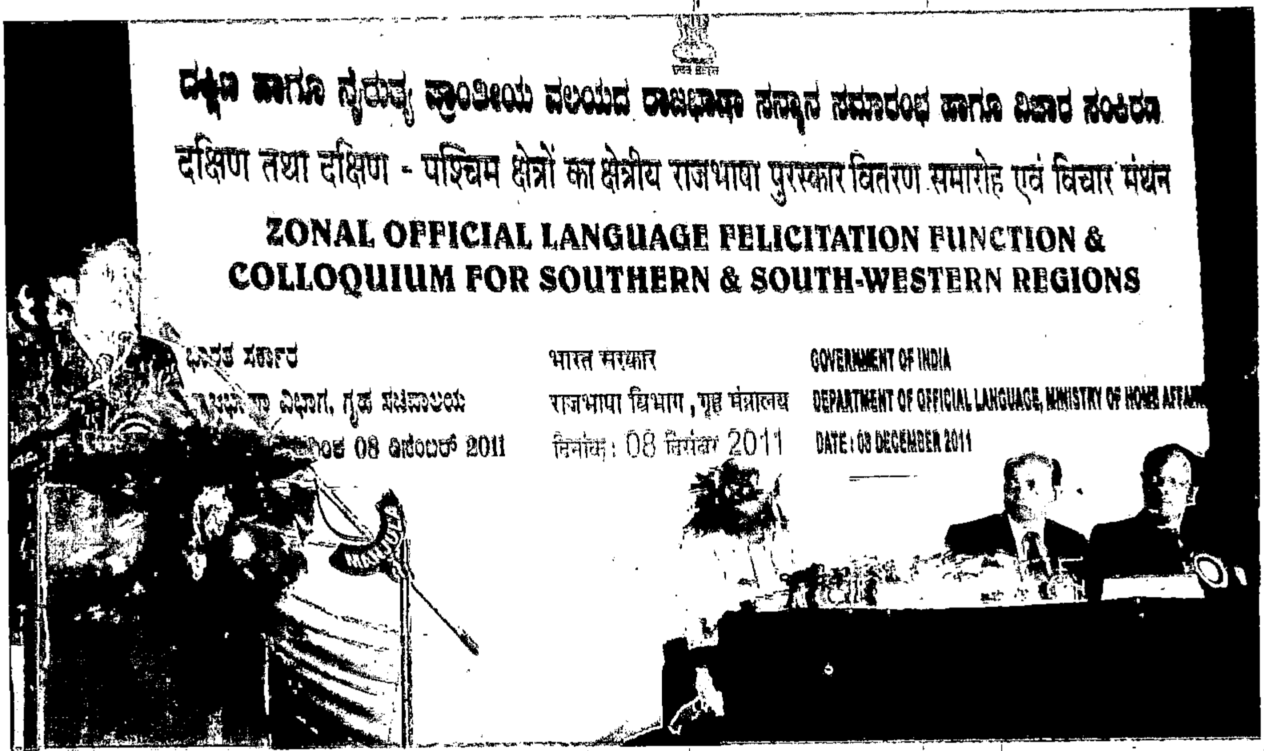

दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों का क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह एवं विचार मंथन में श्री एस. एन. बर्मन, निदेशक, भारतीय भाषा संस्थान एवं अध्यक्ष नराकास, मैसूर, भाषण देते हुए ।

दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्रों का क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह एवं विचार मंथन में जवाहर नवोदय विद्यालय, मैसूर के बाल कलाकारों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम की एक झलक ।

दिनांक 01-09-2010 को बैंक आफ इंडिया, नई दिल्ली अंचल के उप महाप्रबंधकों/सहायक महाप्रबंधकों हेतु आयोजित 'राजभाषा संगोष्ठी' के अवसर पर श्री डी. के. पाण्डेय, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार तथा उनके दाएं बैठे हैं–श्री अर्जुन पां. घुगल, महाप्रबंधक एवं आंचलिक प्रबंधक एवं बाएं ओर बैठे हैं–श्री सी. एम. भनोत, उप महाप्रबंधक तथा शाखाओं/कार्यालयों से आए उप महाप्रबंधक व सहायक महाप्रबंधक ।

दिनांक 28 सितंबर, 2011 को भारतीय स्टेट बैंक, रांची द्वारा आयोजित राजभाषा पारितोषिक तितरण समारोह में उपस्थित हैं–श्री पंकज वर्मा, उप महाप्रबंधक, श्री अशोक कुमार सिन्हा, सहायक महाप्रबंधक (प्रशासन), श्री विजय कुमार मिश्र, सहायक महाप्रबंधक (सी पी एम) एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण/तथा रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए श्री सुरेश कुमार, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) ।

इं. टी.डी. सी. मोहाली द्वारा आयोजित 'हिंदी दिवस' समारोह का उद्घाटन करते हुए सुश्री रविंद्र साही, निदेशक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, इं. टी.डी. सी. मोहाली ।

पश्चिम रेलवे-राजकोट मंडल द्वारा दिनांक 10-10-2011 को आयोजित हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह के दौरान आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती हुई कलाकार ।

दि ओरिएण्टल इंश्योरेन्स कंपनी लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय-1, नई दिल्ली में 'हिंदी दिवस' के अवसर पर सभी को संबोधित करते हुए श्री सी. एस. टण्डन, उप महाप्रबंधक प्रभारी, मंच पर उपस्थित हैं–श्री आर. एस. खीची, श्री नीलेश माथुर, श्री वी. के. गर्ग, सुश्री रीटा सिंह, क्षेत्रीय प्रबंधक ।

21 सितंबर को हिंदी पखवाड़ा के समापन कार्यक्रम पर मंचासीन (बाएं से) प्रो. यू. सी. बैनर्जी, संकायाध्यक्ष, प्रो. के. के. भूटानी, कार्यवाहक निदेशक, श्री अमित शर्मा, जनरल मैनेजर, हिंदुस्तान टाईम्स, चण्डीगढ़ तथा कुलसचिव विंग कमांडर पी. जे. पी. सिंह वड़ैच (सेवानिवृत्त) ।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, मुख्यालय, नई दिल्ली द्वारा आयोजित विशेष हिंदी कार्यशाला में भाग लेते अधिकारीगण ।

मध्य रेल पुणे मंडल द्वारा आयोजित राजभाषा पखवाड़े के दौरान आयोजित संगोष्ठी में बाएं से ए. के. गुप्ता, अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी, श्री विशाल अग्रवाल, मंडल रेल प्रबंधक, डॉ. दामोदर खड़से, साहित्यका तथा श्री विपिन पवार, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी ।

उ. रे. प्र. के., केंद्रीय रेशम बोर्ड कर्नाटक में आयोजित हिंदी दिवस/पखवाड़ा–2011 के अवसर पर स्वागत एवं अध्यक्ष भाषण देते हुए केंद्र के प्रमुख श्रीमती ई. राजलक्ष्मी, वैज्ञानिक-सी ।

दिनांक 14 सितंबर 2011 को रेलवे स्टाफ कालेज, वडोदरा में आयोजित हिंदी दिवस कार्यक्रम के अवसर पर दृश्यमान (दाएं) महानिदेशक महोदय श्री नीरज कुमार, उनके बाएं, मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं वरिष्ठ प्रोफेसर (सामग्री प्रबंधक) श्री भास्कर नारंग एवं उनके बाएं सेवानिवृत्त प्रोफेसर (राजभाषा) श्री अशोक कुमार उपाध्याय तथा कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री आर. पी. सारस्तव, प्रोफेसर (संरक्षा प्रबंधन) ।

गोला बारूद फैक्टरी, पुणे में वर्ष 2011 के दौरान हिंदी में सबसे अधिक कार्य करने वाले निधि/एन. पी. एस. अनुभाग को चल शील्ड प्रदान करते हुए श्री दिनेश चंद्र सिंह नेगी, भा.र.ले.से. नियंत्रक (फै)।

नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण, नर्मदा सदन, इन्दौर (म. प्र.) द्वारा आयोजित किए हिंदी पखवाड़ा समारोह में–श्री ओम प्रकाश वर्मा, हिंदी एवं अभिलेख अधिकारी हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित की जाने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं के बारे में बताते हुए मंच पर उपस्थित हैं। श्री चन्द्र शेखर श्रीवास्तव, सचिव, न.नि.प्रा. एवं श्री मुकेश कुमार चौहान, मुख्य अभियंता न.नि.प्रा।

केंद्रीय रेशम बोर्ड संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भंडारा द्वारा आयोजित हिंदी कार्यशाला का एक दृश्य ।

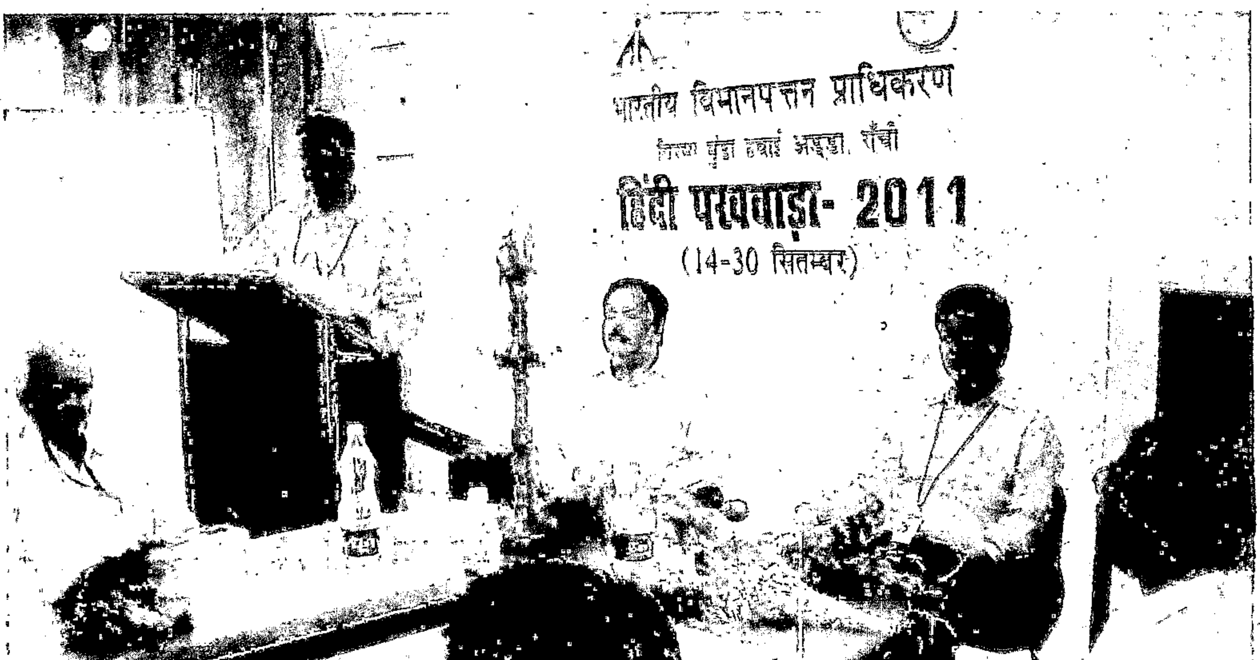

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण रांची द्वारा आयोजित हिंदी पखवाड़ा–2011 के समापन समारोह का एक दृश्य ।

हरियाणा में एक विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में मुख्यालय के संयुक्त निदेशक और उनसे ऊपर के कुल 30 अधिकारियों ने भाग लिया। इनके अतिरिक्त क्षेत्रीय निदेशक एवं अपर आयुक्त क.रा.बी. निगम दिल्ली क्षेत्र, क्षेत्रीय निदेशक हरियाणा, निदेशक उप क्षेत्रीय कार्यालय ओखला एवं प्रभारी संयुक्त निदेशक प्रभागीय कार्यालय नंद नगरी भी कार्यशाला में उपस्थित थे। बीमा आयुक्त के निर्देशानुसार पहली बार इस प्रकार की कार्यशाला में चिकित्सा स्कंध से भी 25 प्रतिशत चिकित्सकों को शामिल किया गया। प्रसन्नता की बात है कि मुख्यालय के वरिष्ठ चिकित्सकों ने राजभाषा के इस अनुष्ठान में बढ़-चढ़ कर उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यशाला में डॉ. पन्ना प्रसाद संयुक्त निदेशक (रा.भा.) ने सरकार की राजभाषा नीति, डॉ. विचारदास पूर्व निदेशक राजभाषा विभाग ने संसदीय समिति का निरीक्षण एवं अधिकारियों के दायित्व पर व्याख्यान दिए। श्री श्याम सुंदर कथूरिया, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने कंप्यूटर पर यूनिकोड संस्थापन के महत्त्व एवं प्रक्रिया पर प्रकाश डाला। व्याख्यान के अंत में सभी प्रतिभागियों ने फीड बैक के साथ निगम में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के संबंध में अपने सुझाव लिखकर दिए। सर्वोत्तम सुझाव पर बीमा आयुक्त द्वारा पुरस्कार देने की घोषणा की गई।

राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान 5, सी टी इस्टीटूशनल एरिया, हौज खास, नई दिल्ली-110016

संस्थान के अधिकारी/कर्मचारी अपना कामकाज हिंदी में सरलता से कर सकें, इसमें उन्हें सहायता देने के लिए संस्थान में निमित रूप से हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए 6 सितंबर, 2011 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला संस्थान में 1 से 14 सितंबर, 2011 तक आयोजित हिंदी पखवाड़े की एक गतिविधि के रूप में आयोजित की गई।

कार्यशाला के विषय को भाषण एवं अभ्यास पदधति द्वारा प्रतिपादित किया गया। श्रीमती रेखा जुनेजा, हिंदी अधिकारी ने सहभागियों को राजभाषा के मुख्य नियमों की जानकारी दी और शब्दों तथा टिप्पणियों पर विचार-विमर्श करते हुए सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने की प्रेरणा दी। सहभागियों को हिंदी में टिप्पण और प्रत्र लेखन का अभ्यास कराया गया। उन्हें राजभाषा नियमों से संबंधित सामग्री भी दी गई।

(घ) हिंदी दिवस

'ग' क्षेत्र

प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखा एवं हक.) असम मैदान गांव, बेलतला, गुवाहाटी-29

प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा), असम तथा प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) असम, गुवाहाटी दोनों कार्यालयों के संयुक्त प्रयास से 14-9-2011 से 28-9-2011 तक विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ हिंदी पखवाड़ा, 2011 का आयोजन किया गया। अपने स्वागत भाषण में उपमहालेखाकार (लेखा परीक्षा) ने कहा कि हिंदी भाषा सभी भारतीय भाषाओं से मिलती जुलती भाषा है तथा भारत की एकता के लिए राष्ट्रभाषा सीखना चाहिए।

उक्त पखवाड़े के दौरान कार्यालय में हिंदी के प्रचार प्रसार एवं लोगों के मन में हिंदी के प्रति रुचि बढ़ाने के उद्देश्य से हिंदी मसौदा एवं टिप्पणी, हिंदी निबंध लेखन, अनुवाद, आशुभाषण, प्रशनोत्तरी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई एवं बच्चों के लिए कविता व अंताक्षरी प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पाने वाले को नकद पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया।

पूर्वी आधार कर्मशाला (ग्रेफ) पिन-931 701 द्वारा 99 सेना डाकघर

1 सितंबर से 14 सितंबर, 2011 तक हिंदी दिवस/पखवाड़े का आयोजन किया गया। हिंदी दिवस/पखवाड़े का उद्घाटन इस कर्मशाला के कमाण्डेंट महोदय, श्री समरेन्द्र सेन, मुख्य अभियंता (वि एवं यां) ने दिनांक 2 सितंबर, 2011 को 11.30 बजे दीप जलाकर किया।

इस दौरान दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला, हिंदी तथा हिंदीतर भाषा (अन्य भाषा भाषी) कर्मचारियों के लिए हिंदी से संबंधित हिंदी निबंध, हिंदी नोटिंग/ड्राफ्टिंग, हिंदी टंकण एवं हिंदी भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कमांडेंट महोदय ने कहा कि "हिंदी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित करने का उद्देश्य हिंदी में काम को बढ़ाना है। हिंदी में सरकारी काम करने की लगन को पूरे साल बनाए रखें तभी इस प्रकार के आयोजनों को सफल माना जा सकेगा।"

खादी और ग्रामोद्योग आयुक्त कार्यालय राज्य कार्यालय, पोस्ट बाक्स नं. 362, एम. जे. रोड, गांधी भवन, हैदराबाद-500 001

खादी और ग्रामोद्योग आयुक्त कार्यालय, राज्य कार्यालय, हैदराबाद में दिनांक 14 से 21 सितंबर, 2011 तक 'हिंदी संप्ताह समारोह' मनाया गया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री के मोहन राव जी राज्य निदेशक ने सबसे पहले 'हिंदी दिवस' के अवसर पर सभी कर्मचारियों को शुभकामनाएं दीं। आगे उन्होंने कहा कि आज हिंदी मात्र भारत देश तक ही सीमित न रहकर पूरे विश्व में फैल गई है। उन्होंने कहा कि आज विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी को एक विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा है जो कि सराहनीय बात है।

मुख्य अतिथि श्री ओम प्रकाश शर्मा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज दक्षिण भारत में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन काफी तेजी से चल रहा है। उन्होंने कहा कि दक्षिण में हिंदी भाषा के प्रति लोगों में खास रुचि है जिसकी वजह से यहां हिंदी का प्रचार-प्रसार बढ़िया हो रहा है। हिंदी में प्रयोग किए जा रहे विभिन्न प्रकार के सॉफ्टवेयरों के बारे में उल्लेखित करते हुए उन्होंने बताया कि आज हिंदी में लगभग 42 सॉफ्टवेयर के पैकेज बाजार में उपलब्ध हैं तथा 9 पैकेज अभी विचाराधीन हैं। उन्होंने कहा कि इंग्लैण्ड जैसे देश में अंग्रेजी को राजभाषा स्वीकृत करने के लिए लगभग 483 साल लगे हैं जहां कि हमने मात्र 64 सालों में ही राजभाषा के संबंध में अच्छी प्रगति की है। अन्त में उन्होंने कहा कि कर्मचारियों के सहयोग से किसी भी कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन को आगे बढ़ाया जा सकता है।

दक्षिण मध्य रेलवे, प्रधान कार्यालय, सिकंदराबाद

दक्षिण मध्य रेलवे के मुख्यालय में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 5-9-2011 से 16-9-2011 तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

वर्ष के दौरान, हिंदी में सराहनीय काम करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों को महाप्रबंधक पुरस्कार योजना के अंतर्गत पुरस्कृत किया गया इसके बाद विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

श्री आर. विजय मोहन, अपर महाप्रबंधक ने कार्यक्रम के सफल व सुंदर आयोजन के लिए राजभाषा संगठन को बधाई दी और कहा कि इस प्रकार के आयोजनों से हिंदी के प्रयोग-प्रसार को अवश्य बढ़ावा मिलता है। श्री आर. विजय मोहन ने आशा व्यक्त की कि इन कार्यक्रमों से प्रेरित होकर हमारे अधिकारी व कर्मचारी अपना अधिकाधिक काम हिंदी में करेंगे। समारोह के अध्यक्ष, मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री महेश चंद्र ने अपने संबोधन में पखवाड़ा के दौरान आयोजित हिंदी गीत अंताक्षरी, सांस्कृतिक कार्यक्रम, नाटक-मंचन आदि की सराहना करते हुए कलाकारों को बधाई दी। उन्होंने अधिकारियों और कर्मचारियों से अपील की कि वे अपने सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें।

उप रेशमकीट प्रजनन केंद्र, केंद्रीय रेशम बोर्ड, कुन्नूर

विगत कई साल की भांति इस साल भी केंद्रीय रेशम बोर्ड, बैंगलूर से मुख्यालय द्वारा प्राप्त परिपत्र के अनुसार हिंदी दिवस समारोह एवं हिंदी पखवाड़ा 2011 का उद्घाटन 14 सितंबर को 3-1/2 प्र. के. में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। श्रीमति ई. राजलक्ष्मी वैज्ञानिक सी और प्रमुख ने अध्यक्ष स्थान पर रहें। केंद्र के सभी कर्मचारियों ने इसमें भाग लिया।

अपने अध्यक्ष भाषण में सितंबर महीने का महत्व एवं हिंदी राजभाषा संबंधी कार्यों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि उ.रे.प्र. के कुन्नूर को यह गौरव की बात है कि भारतीय राजपत्र में विज्ञापित होकर केंद्र को न.रा.का.स. द्वारा विशेष रूप में बधाइयां प्राप्त हुई हैं। रेशम बोर्ड द्वारा किए जा रहे कार्य और इस के क्षेत्र में प्राप्त सफलता पर जानकारी दी।

हिंदी दिवस/पखवाड़ा, 2011 का उद्घाटन किया और के.रे.बो. बेंगलूर से प्राप्त सदस्य सचिव (प्रभारी) महोदय का राजभाषा संदेश पढ़कर सुनाया। इस अवसर पर परिपत्र के अनुसार कर्मचारियों के लिए आयोजित होने वाले हिंदी प्रतियोगिताओं के बारे में परिपत्र जारी करके सबसे अनुरोध किया कि अवश्य हिंदी प्रतियोगिताओं में भाग लें और हिंदी पखवाड़ा, 2011 को सफल बनाने में सहयोग दें।

क्षेत्रीय निदेशक, वैमानिक गुणता आश्वासन का कार्यालय, वैमानिक गुणता आश्वासन महानिदेशालय, रक्षा मंत्रालय, हैदराबाद-42

क्षेत्रीय निदेशक, वैमानिक गुणता आश्वासन का कार्यालय, वैमानिक गुणता आश्वासन महानिदेशालय, रक्षा मंत्रालय, हैदराबाद-42 में 14 सितंबर, 2011 से 28 सितंबर, 2011 तक मनाया।

संपूर्ण हिंदी पखवाड़े के दौरान आशुभाषण, निबंध, अनुवाद, वाद-विवाद, कविता वाचन एवं नारा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय में कार्यरत सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रति वर्ष की तरह काफी उत्साह से भाग लिया।

हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह दिनांक 28 सितंबर, 2011 को सम्पन्न हुआ।

विंग कमांडर डी. जी. रेड्डी, क्षेत्रीय निदेशक ने अपने भाषण में कहा कि हिंदी भाषा को आप सभी केवल अनुष्ठानों तक सीमित न रखें अपितु उसमें कार्य करते रहिए तथा देखिए आपको इस भाषा से प्यार हो जाएगा तथा आप अपना कार्य स्वयं हिंदी में करना प्रसन्द करेंगे। इस प्रकार हिंदी का विकास स्वत: होते जाएगा।

इस समापन समारोह में कार्यालय द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका "प्रगति" के तेरहवां अंक का विमोचन मुख्य अतिथि, सम्मानित अतिथियों एवं विंग कमांडर डी.जी. रेड्डी, क्षेत्रीय निदेशक द्वारा किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री ए. एस. अग्रवाल, स्थानापन्न महाप्रबंधक, हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड, हैदराबाद ने अपने भाषण में बोलते हुए कहा कि "आपके कार्यालय में हिंदी भाषा के प्रति लोगों में काफी उत्साह है जिससे मुझे गर्व हो रहा है"। आगे उन्होंने कार्यालय में हो रहे हिंदी कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा भी की।

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन में दिनांक 6-9-2011 से दिनांक 14-9-2011 तक हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी सप्ताह समारोह का अयोजन किया गया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री आई. सेनगुप्ता ने हिंदी दिवस का महत्व बताते हुए कहा कि हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकारा गया है इसका सबसे महत्वपूर्ण कारण यह है कि यह हमें एक जुट में बांधती है और इससे हमारे देश की एकता भी बनी हुई है। उन्होंने कहा कि किसी भी भाषा को सीखना आसान नहीं है। लेकिन हिंदी एक सरल और सहज भाषा है जिसको बहुत ही आसानी से सीखी जा सकती है। उन्होंने बताया कि राजभाषा विभाग ने हिंदी को सीखने एवं हिंदी में काम करने के लिए अनेक प्रोत्साहन योजनाएं लागू किया है जिसका हमें लाभ उठाना चाहिए।

अंतरिक्ष विभाग, अंतरिक्ष भवन, न्यू बी. ई. एल. रोड, बैंगलूर-560094

बेंगलूर स्थित अन्तरिक्ष विभाग/इसरो मुख्यालय, के कार्यालयों के साथ-साथ एन्ट्रिक्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने मिलकर सितंबर 5, 2011 से सितंबर, 21, 2011 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं (कुल 14) जैसे हिंदी टिप्पण व प्रारूपण, नारा-लेखन, वर्गपहेली, स्मरण प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी, टंकण, अन्ताक्षरी, आशुभाषण, गायन, इत्यादि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें 191 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रत्येक प्रतियोगिता के लिए पांच-पांच पुरस्कार प्रदान किए गए। इन प्रतियोगिताओं में कुल 93 प्रतिभागियों ने पुरस्कार प्राप्त किए।

अन्तरिक्ष विभाग के संयुक्त सचिव श्री ए. विजय आनन्द ने समारोह की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि "सभी को अपना अधिकाधिक दैन-दिन कार्य हिंदी में करना चाहिए तभी हिंदी का अनुकूल वातावरण बन सकेगा और तब ही इस प्रकार के समारोहों का मनाने का उद्देश्य भी सफल होगा।"

एन्ट्रिक्स कार्पोरेशन लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, डॉ. वी. एस. हेगड़े ने सभा को संबोधित करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की कि इस बार एन्ट्रिक्स ने भी अन्तरिक्ष

भवन में आयोजित हिंदी पखवाड़े में सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्होंने भी सभी से कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने का अनुरोध किया।

क्षेत्रीय कार्यालय : आंध्र प्रदेश, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, 5-9-23, हिलफोर्ट, आदर्शनगर, हैदराबाद-063

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद में 1 सितंबर, 2011 से 14 सितंबर, 2011 तक राजभाषा पखवाड़ा के रूप में मनाया गया।

पखवाड़े के दौरान हिंदी के प्रति रुचि बढ़ाने के उद्देश्य से विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में अधिकारी एवं कर्मचारियों ने बड़े ही उत्साह एवं उमंग के साथ भाग लिया और अपनी प्रतिभाओं का प्रदर्शन करते हुए पुरस्कार प्राप्त किए।

दिनांक 14-9-2011 को 'हिंदी दिवस समारोह एवं राजभाषा पखवाड़ा समारोह' का समापन बड़े ही उल्लास-पूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ।

मुख्य अतिथि श्री रवि श्रीवास्तव, सहायक संपादक, हिंदी मिलाप, का परिचय डॉ. एन. एन. रेड्डी ने दिया। अपने संबोधन में मुख्य अतिथि ने सरल एवं सामान्य भाषा के प्रयोग पर बल देते हुए कहा कि संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग करना होगा। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी भाषा हमारी भलाई कर रही है, हम उसकी भलाई नहीं कर रहे। उन्होंने कहा कि पूर्व में वह भी ई.एस.आई. के बीमाकृत व्यक्ति थे। उन्होंने हिंदी को मधुर, सुगंधित, सुंदर एवं शिष्ट भाषा कहा और इसे प्रयोग करने का अनुरोध किया। हिंदी के प्रयोग पर अपना विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी कार्यालयों के अलावा समाज के भीतर भी जाना चाहिए। भाषा की ग्राह्यता की शक्ति न हो, वह भाषा समाज से अदृश्य हो जाएगी। भाषा समाज सापेक्ष होना चाहिए तथा भाषा से समाज को लाभ मिलना चाहिए।

श्री यू.एच. राव, अपर आयुक्त व क्षेत्रीय निदेशक ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद हिंदी कार्यान्वयन में ही नहीं, बल्कि योजना के कार्यान्वयन में भी अग्रणी है।

कर्मचारी चयन आयोग (उ.पू.क्षे.), क्षेत्रीय कार्यालय, रुकमीनि नगर, गुवाहाटी, असम-781006

इस क्षेत्रीय कार्यालय के राजभाषा कार्यान्वयन समिति की निर्णय के अनुसार दिनांक 14-9-2011 से 28-9-2011 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया।

हिंदी पखवाड़ा का दौरान दिनांक 28-9-2011 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिस में कुल 5 अधिकारी/कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि श्री राजेन्द्र कुमार राम, हिंदी प्राध्यापक, प्रोभिन्स कॉलेज, दिसपुर, गुवाहाटी ने राजभाषा हिंदी के प्रयोग संबंधी नीति नियमों का विस्तारित जानकारी दी एवं हिंदी पत्राचार के विविध रूपों से भी प्रतिभागियों को अवगत कराया।

इस क्षेत्रीय कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा का दौरान अधिकारी/कर्मचारियों के लिए हिंदी निबंध लिखन एवं आशु भाषण प्रतियोगिता आयोजन किया गया। यह दोनों प्रतियोगिताओं में अधिकारी/कर्मचारियों ने बड़े पैमाने पर भाग लिया।

ज्वार अनुसंधान निदेशालय, राजेन्द्र नगर, हैदराबाद-500030

ज्वार अनुसंधान निदेशालय में 7 सितंबर, 2011 को निदेशालय के प्रभारी निदेशक डॉ. एस वी राव के द्वारा हिंदी सप्ताह समारोह का उद्घाटन किया गया। इस सप्ताह के दौरान हिंदी में हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया, जिसमें सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने हिंदी में हस्ताक्षर करके कार्यक्रम को सफल बनाया। इस समारोह के दौरान हिंदी में विभिन्न प्रतियोगिओं जैसे–छोटे शब्दों एवं पदों का हिंदी में अनुवाद, प्रश्न-मंच, निबंध लेखन, श्रुतलेखन (शुद्ध लेखन), सोचो और लिखो, टिप्पण एवं आलेखन तथा निदेशालय में संचालित अनुसंधान आधारित विषयों पर हिंदी में पोस्टर प्रस्तुतीकरण का आयोजन किया गया। जिसमें वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक तथा अनुसंधान सहायक, शोध छात्रों आदि ने बड़े-ही उत्साह के साथ भाग लिया।

प्रो. कट्टिमणी ने कृषक संस्थानों पर जोर देते हुए बताया कि कृषक संस्थानों के कार्य केवल प्रयोगशाला उन्मुख न होकर कृषकोंन्मुख होने चाहिए। अर्थात् अनुसंधान कर्ताओं को अपनी बात कृषक की भाषा में ही सामने रखनी

चाहिए। तभी उनके कार्यों की सार्थकता है। आज भारत के जन-सामान्य में हिंदी का ही वर्चस्व है और हमें उसे स्वीकार करना चाहिए। निदेशक डॉ. पाटील ने अपने अध्यक्षीय भाषण में 'हिंदी की क्यूं?', को विश्लेषित करते हुए कहा कि यह तो सब जानते हैं कि भारत को 'विविधता में एकता' का देश कहा जाता है और इसका एक प्रमुख कारण जनभाषा हिंदी भी है जो विविध भाषा-भाषियों के एक सूत्र में बांधे हुए है। उन्होंने बताया कि इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए हिंदी को राजभाषा घोषित किया गया। अतः अब हमारा यह नैतिक दायित्व है कि हम राजभाषा हिंदी में कार्य करें और राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करें।

केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-1 तेजपुर असम

विद्यालय में हिंदी पखवाड़े का आयोजन दिनांक 14 सितंबर, 2011 से 28 सितंबर, 2011 तक किया गया। इस दौरान अनेक प्रतियोगिताएं एवं रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किए गए। सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों ने इस आयोजन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

इस अवसर पर श्री के. प्रसाद जी प्राचार्य के. वि. गेरुकामुख ने हरिवंश राय बच्चन की कविता 'दिया जलाना कब मना है'? प्रस्तुत की। मुख्य अतिथि महोदय ने इस अवसर पर प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए। मुख्य अतिथि ने सभी विद्यार्थियों को प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया तथा पुरस्कृत प्रतिभागियों को बधाई दी। कार्यक्रम का संचालन श्री आशीष कुमार, पी.जी.टी. -हिंदी और धन्यवाद ज्ञापन श्रीमती के. कांचना, पी.जी.टी.-अंग्रेजी द्वारा किया गया। इस प्रकार पूरे उत्साह एवं धूमधाम से विद्यालय में हिंदी पखवाड़ा समारोह संपन्न हुआ।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, चैन्नेई

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण निगमित मुख्यालय के निर्देशानुसार भा.वि.प्रा., चैन्नेई एयरपोर्ट में दिनांक 14-9-2011 से 30-9-2011 तक हिंदी पखवाड़े का भव्य आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़े के अवसर पर एयरपोर्ट निदेशक महोदय द्वारा हिंदी का ज्ञान रखने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों से अपने दैनिक कार्यों में सभी टिप्पणियां एवं मूल पत्राचार हिंदी में करने के निर्देश दिए गए। इस अवधि के दौरान कार्यालय के अधिकारियों/क़र्मचारियों ने हाजिरी रजिस्टरों में हिंदी में हस्ताक्षर किए एवं मसौदे लिखे जिससे हिंदी पत्राचार में काफी वृद्धि हुई।

दिनांक 20-9-2011 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें चैन्नेई एयरपोर्ट में कार्यरत लगभग 20 अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा भाग लिए गए। भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, दक्षिणी क्षेत्रीय कार्यालय से श्री सूर्यभान गौतम, उप महाप्रबन्धक (राजभाषा) एवं डॉ. इन्दिरा रानी थॉमस, प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा व्याख्यान दिए गए। परिचर्चा के माध्यम से अधिकारियों/कर्मचारियों की शंकाओं को दूर करने का प्रयास किया गया।

एन एच पी सी लिमिटेड, मानव संसाधन विभाग कार्यालय कार्यपालक निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में पहली सितंबर, 2011 से 15 सितंबर, 2011 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस पखवाड़े को मुख्यतः भाषाई सद्भाव व राजभाषा के प्रयोग के प्रति जागरूकता व प्रोत्साहन के रूप में मनाया गया।

श्री डॉ. विश्वनाथ झा, विशेष अतिथि ने हिंदी के विकास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी भाषा को हमारे देश के अधिकांश भागों में बोला जाता है। आज जब हम भारत वर्ष के हिंदी भाषी राज्यों को छोड़कर अन्य राज्यों में जाते हैं तो हिंदी भाषा का ही सहारा लेना पड़ता है। अगर हम हिंदी नहीं जानते हैं तो अहिंदी भाषी क्षेत्रों में जाकर अपने विचार नहीं रख पाएंगें। हिंदी भाषा ही एक भाषा है जिससे हमारे देश को एक सूत्र में बांधने का कार्य हुआ है।

हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह 15 सितंबर, 2011 को आयोजित किया गया। इस पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अभियंता-प्रभारी श्री अग्रवाल द्वारा पुरस्कार वितरित किया गया। समापन समारोह के अवसर पर अपने संबोधन में श्री अग्रवाल ने हिंदी पखवाड़े के सफल आयोजन हेतु सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के अपेक्षित सहयोग की सराहना करते हुए यह विश्वास व्यक्त किया कि आगे भी हम इसी तरह हिंदी में कार्य करते रहेंगे।

आकाशवाणी, हैदराबाद

आकाशवाणी, हैदराबाद में 8 से 22 सितंबर तक हिंदी पखवाड़ा हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

के. पी. श्रीनिवासन (उप-महानिदेशक कार्यक्रम) ने हिंदी पखवाड़े एवं हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए कहा कि हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन से अधिकारियों

एवं कर्मचारियों को हिंदी में काम करने के लिए प्रोत्साहन मिलता है। पखवाड़े के दौरान अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें आकाशवाणी कार्यालय के साथ-साथ परिसर में ही स्थित आकाशवाणी के अन्य कार्यालयों के 28 अधिकारियों/कर्मचारियों ने हिस्सा लिया। गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के स्थानीय हिंदी शिक्षण योजना से आमंत्रित सहायक निदेशकों/वरिष्ठ हिंदी प्राध्यापकों ने हिंदी में टिप्पण एवं मसौदा लेखन, प्रशासनिक शब्दावली, हिंदी व्याकरण आदि पर व्याख्यान दिए तथा अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा व्यावहारिक अभ्यास कराया गया। पखवाड़े के दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं-अनुवाद, वाक्, निबंध लेखन, हिंदी में सामान्य जानकारी 'अंत्याक्षरी' प्रश्नमंच तथा मल्टी टास्क फोर्स कर्मचारियों के लिए श्रुतलेखन/वाचन प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

हिंदी पखवाड़े के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह की अध्यक्षता में मोहम्मद खमरुद्दीन (उप-महानिदेशक (इं) एवं कार्यालयाध्यक्ष) ने की। यू. मोहम्मद खमरुद्दीन ने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई दी। इसके बाद विजेताओं को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। पी. राजा राव (उप-निदेशक, क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान (कार्यक्रम) ने कहा कि सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु कई प्रोत्साहन योजनाएं बनाई गई हैं, जिनका पूरा लाभ कर्मचारियों को उठाना चाहिए। समारोह में मोहम्मद बाखर मिर्जा (उप-निदेशक समाचार) ने राजभाषा हिंदी के प्रयोग की अनिवार्यता पर प्रकाश डाला।

मुख्य अभियंता (पूर्वी क्षेत्र), आकाशवाणी और दूरदर्शन, कोलकाता

मुख्य अभियंता (पूर्वी क्षेत्र), आकाशवाणी और दूरदर्शन, कोलकाता के कार्यालय में दिनांक 1-9-2011 से 14-9-2011 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया।

पखवाड़े के दौरान 5 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। दिनांक 1-9-2011 को हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 14-9-2011 को हिंदी पखवाड़ा का समापन तथा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया।

अध्यक्ष महोदय श्री बी.एल. कौल, अपर महा निदेशक (अभि. पूर्व) ने अपना भाषण प्रदान किया। उन्होंने कहा कि ''कार्यालय में पखवाड़ा उत्साहपूर्वक मनाया गया,यह खुशी की बात है। सारे वर्ष के दौरान भी हिंदी में कामकाजों को उत्साह सहित करना चाहिए ताकि हिंदी के प्रचार-प्रसार को अग्रगति मिल सकें इसके बाद श्री शेखर प्रसाद, उप महानिदेशक (अभि.) एवं कार्यालय अध्यक्ष ने कहा कि ''हिंदी पखवाड़ा सफलतापूर्वक मनाने के बाद में यह आशा करूंगा कि पूरे वर्ष में सभी कर्मचारी हिंदी में कार्यों को रुचिपूर्वक करेंगे और अगली बार ज्यगादा कर्मचारी इस पखवाड़ा में हिस्सा लेंगे तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार को आगे बढ़ाएंगे।'' इसके बाद श्री ब्रजेश कुमार, उप निदेशक अभियांत्रिकी (प्रशा.) ने कहा कि ''केवल हिंदी पखवाड़ा में हिस्सा लेकर हमें अपने कर्त्तव्य की प्रति इति नहीं मान लेनी चाहिए। कार्यालय के रोज़मर्रा के कामकाज में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देना अति आवश्यक है। सभी कर्मचारियों से आग्रह है कि वे अपने-अपने कार्यों में हिंदी का प्रयोग कर राजभाषा के कार्यों को अग्रगति प्रदान करें।''

उच्च शक्ति प्रेषित्र, आकाशवाणी, आलप्पुषा केंद्र

हिंदी पखवाड़ा समारोह सितम्बर, 2011 महीने की दूसरी भाग में, यानी 15-9-2011 से 30-9-2011 तक मनाया गया।

तारीख 30-9-2011 को अपराह्न 3.00 बजे समापन समारोह का आयोजन किया गया। श्री आई.आई. जार्ज, उप महानिदेशक (अभि.) एवं कार्यालयाध्यक्ष समारोह के अध्यक्ष रहे।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री आई.आई. जार्ज, उप-महानिदेशक (अभि.) एवं कार्यालयाध्यक्ष ने मुख्य अतिथि, सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। फिर कर्मचारियों को अवगत कराया कि प्रेषित के कामों के साथ ही साथ कार्यलयीन कामों जैसे हिंदी में टिप्पण एवं प्रारूप-लेखन में ज्यादा ध्यान दें। उन्होंने जोड़ दिया कि यह एक त्योहार जैसा है परन्तु इसमें सभी कर्मचारियों की भागीदारी होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि इस बार प्रतियोगिताओं में कर्मचारियों की भागीदारी में कमी हैं और अगले साल में ज्यादा कर्मचारियों को इसमें भाग लेने की कोशिश करना हैं।

अध्यक्ष भाषण के बाद मुख्य अतिथि ने अपने जोरदार भाषण में हिंदी की गरिमा, महिमा एवं आज की स्थिति में हिंदी सीखने की जरूरत पर, सभी को सजग रखने की कोशिश की। उन्होंने जोड़ दिया कि आजकल विदेश के विश्वविद्यालयों में भी हिंदी को एक विषय के रूप में चुन कर पढ़ाई होती है। हिंदी भाषी क्षेत्रों और अहिंदी-भाषी क्षेत्रों को जोड़ने का कार्य हिंदी ही करती हैं। हमें आत्मविश्वास के साथ हिंदी भाषा को पढ़ना और उसका प्रचार करना चाहिए।

फिर छः प्रतियोगिताओं में पहला, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त विजेताओं को मुख्य अतिथि द्वारा प्रमाण-पत्रों एवं नकद पुरस्कार की चैकों का वितरण किया गया। प्रतियोगिताओं में भाग लिए शेष सभी कर्मचारियों को सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

आकाशवाणी : अगरतला-799001

आकाशवाणी अगरतला में हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा अत्यंत हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाया गया। इस दौरान कार्यालय के दैनन्दिन कार्य में राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग करने की संकल्प लिया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन दिनांक 12-9-2011 को अपराह्न 3.00 बजे निदेशक अभियांत्रिकी श्री सुजित कुमार विश्वास की अध्यक्षता में किया गया। दिनांक 12-9-2011 को अपराह्न 3.00 बजे हिंदी वाद विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई। दिनांक 13-9-2011 को अपराह्न 3.00 बजे मसौदा एवं टिप्पणी लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 14-9-2011 को अपराह्न 3.00 बजे हिंदी निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। दिनांक 15-9-2011 को सुबह 11.00 बजे हिंदी टंकण प्रतियोगिता एवं अपराह्न 3.00 बजे हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई।

दिनांक 16-9-2011 को अपराह्न 3.00 बजे प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन सभी प्रतियोगिताओं में कार्यालय के काफी संख्यक अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

हिंदी दिवस/पखवाड़े का पुरस्कार वितरण एवं समापन्न समारोह दिनांक 22-9-2011 को आयोजित किया गया। सभी विजयी प्रतियोगियों को नगद राशी पुरस्कार के रूप में दी गई। तत्पश्चात् निदेशक अभियांत्रिकी श्री एस. के. विश्वास ने राजभाषा कार्यान्वयन की भूमिका में प्रशंसनीय कार्य करके हिंदी में कामकाज करने का संकल्प लिया और धन्यवाद ज्ञापन के साथ हिंदी पखवाड़े का समापन्न किया।

आकाशवाणी : अनंतपुर-515002

आकाशवाणी, अनंतपुर केंद्र में हिंदी दिनोत्सव और हिंदी पखवाड़ा का आयोजन 14 सितंबर से 29 सितंबर, 2011 तक आकाशवाणी के प्रांगण में बड़ी उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया।

सभा की अध्यक्षता श्री के. अरुणप्रभाकर ने किया है। उन्होंने अपने भाषाण में यह बताया कि हमारे संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में मान्यता प्रधान किए हैं। भारत सरकार ने हिंदी राजभाषा की विकास के लिए अनेक प्रोत्साहन योजनाएं भी दे रही है। भारत में अनेक धर्मावलंबियों में अनेक अंतर पाए जाते हैं, होने पर भी भारत अनेकता में एकता को साकार बनाकर, जीवन बिताने के लिए भाषा की भूमिका अत्यंत महत्व रखते हैं। अंत में उन्होंने सभी कर्मचारियों से यह दुहराया कि हिंदी का कार्य हर दिन किया जाए।

अतिथि महोदय श्री मुहम्मद खान, क्षेत्रीय प्रबंधक, आंध्रा प्रगति ग्रामीण बैंक ने अपने भाषण में यह बताया कि देश में हिंदी भाषा का प्रसार और प्रचार अधिक मात्रा में हो रहा है। केंद्र सरकार के अधीनस्थ कार्यालय के हर अधिकारियों/कर्मचारियों को देश के हर क्षेत्र में काम करना पड़ता है, इसीलिए हिंदी भाषा को सीखना जरूरी होता है। अंत में उन्होंने सभी उम्मीदवारों से यह निवेदन किया कि कार्यालय में टिप्पण व पत्रों को भेजते समय हिंदी का प्रयोग ज्यादा से ज्यादा किया जाए। इससे भाषा आसान से प्राप्त होती है।

आकाशवाणी : कडपा-516001

आकाशवाणी, कडपा केंद्र में हिंदी पखवाड़ा 14 सितंबर से 30 सितंबर तक आकाशवाणी के प्रांगण में बड़ी उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया। इस समारोह के उपलक्ष्य में 14 सितंबर, 2011 को हिंदी दिनोत्सव का उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया।

समारोह में श्री वी. वी. रमण राव उप-महानिदेशक व कार्यालय प्रमुख ने सभा की अध्यक्षता की। उन्होंने अपने भाषण में यह बताया कि भारत एक बहुभाषी देश है। वेश-भूषा, रहन-सहन में अनेक अंतर पाए जाते हैं लेकिन राष्ट्र की एकता के लिए एक भाषा होना अनिवार्य बताया है।

अंत में उन्होंने उपस्थित सभी कर्मचारियों से यह बताया कि हिंदी का कार्य हिंदी पखवाड़ा के दौरान ही नहीं पूरे साल भर किया जाए।

उपाध्यक्ष श्री एन. विजयसारथी, कार्यक्रम अध्यक्ष ने अपने भाषण में यह बताया कि केंद्र सरकार में काम करनेवाले अधिकारियों को देश के हर क्षेत्र में काम करना पड़ता है, इसलिए हिंदी भाषा को सीखना जरूरी होता है। कार्यालय में टिप्पण व पत्रों को भेजते समय हिंदी का प्रयोग ज्यादा से ज्यादा किया जाए। इससे भाषा आसान से प्राप्त होती है।

दूरदर्शन केंद्र : ईटानगर

दूरदर्शन केंद्र, ईटानगर में दिनांक 14 से 30 सितंबर, 2011 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। दिनांक 14-9-2011 को श्री पार्थे महाराज, सचिव, रामकृष्णमिशन अस्पताल, ईटानगर तथा श्री मनिबाबू सिंह, कार्यक्रम निष्पादक एवं केंद्र प्रभारी ने दीप प्रज्वलित कर हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन किया। केंद्र प्रभारी ने उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों से भारत सरकार की राजभाषा संबंधी नीतियों का गंभीरता से अनुपालन करने की अपील की। श्री पार्थे महाराज, श्री सी एल शर्मा सहायक अभियंता ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए।

पखवाड़ा के दौरान अधिकारियों/कर्मचारियों ने राजभाषा हिंदी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताएं की गईं। जिसमें लघु कथा, हिंदी टिप्पणी, तत्कालिक भाषण, कविता पाठ, गीत/संगीत पाठ, पत्र लेखन आदि थे।

आकाशवाणी, चैन्नई-4

हिंदी दिवस/पखवाड़ा आकाशवाणी चैन्नई में पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। यह कार्यक्रम दिनांक 14-9-2011 से 28-9-2011 तक चला। विभिन्न उत्साहवर्धक गतिविधियों का यह सिलसिला एक परिवारिक महौल सृजित करने में सफल रहा।

अपने अध्यक्षीय भाषण में केंद्र निदेशक श्री जे. कमलनाथन ने कहा कि हिंदी जितनी सरल भाषा है, उसे सीखना भी उतना ही आसान है। उन्होंने आगे कहा कि तमिल साहित्य को भी हिंदी के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाना चाहिए। प्रतीगिताओं में भाग लेने वाले सभी विजेताओं की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि सभी को इससे प्रेरणा लेते हुए दैनिक कार्यों में हिंदी का प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने मुक्त भाव से राजभाषा कक्ष की प्रशंसा की।

मुख्य अतिथि डॉ. शेषन ने आकाशवाणी चेन्नै में हिंदी के प्रचार प्रसार की दिशा में सभी सदस्यों के सहयोगात्मक प्रयास की भूरी-भूरी प्रशंसा की। उन्होंने अपने अभिभाषण में तमिल साहित्य के प्रचार-प्रसार को भी बल देते हुए कहा कि तमिल साहित्य का इतिहास बहुत ही प्राचीन है। हिंदी के माध्यम से अनुवाद आदि विधाओं के जरिए इसकी महत्ता को जन-जन तक पहुंचाया जा सकता है। परम्परा आदान-प्रदान से ही भाषा का विकास संभव है। हिंदी की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि सभी भारतीय भाषाएं एक दूसरे के साथ जुड़ी हुई हैं, तमिल संस्कृति और साहित्य को हिंदीके माम से भारत के कोने-कोने तक पहुंचाना है। हिंदी वह माध्यम है जिसके द्वारा भारत की संस्कृति का सम्पूर्ण प्रचार-प्रसार किया जा सकता है।

दूरदर्शन केंद्रः कोलकाता

दूरदर्शन केंद्र, कोलकाता में दिनांक 14-9-2011 को हिंदी दिवस का पालन किया गया। केंद्राध्यक्ष श्री रजत बोस, उपमहानिदेशक (अ.) की अध्यक्षता में कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

अपने भाषण में केंद्राध्यक्ष श्री रजत बोस ने कहा हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है, राजभाषा है। इसे हम सहज रूप से स्वीकार कर अपने नित के कार्यालयीन कार्यों में बढ़ावा देना होगा ताकि हम अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे। इसके साथ ही उन्होंने प्रतिभागियों को बढ़कर भाग लेने पर उत्साहित किया।

इस अवसर पर केंद्र द्वारा एक परिचर्चा का आयोजन किया गया जिसका विषय था-हिंदी दिवस एवं राजभाषा पखवाड़ा एवं इसका सीधा प्रसारण दिनांक 19-9-2011 को पूर्वाह्न 10.25 से 10.50 तक किया गया।

आकाशवाणी : गांतोक

आकाशवाणी गांतोक में हिंदी पखवाड़ा धूमधाम से मनाया गया। पहली सितंबर से चौदह सितंबर यानि हिंदी दिवस तक आयोजित इस पखवाड़े के दौरान हुई विभिन्न प्रतियोगिताओं में कार्यालय प्रमुख सहित प्राय: सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने भाग लिया। सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि रही केंद्र की प्रथम हिंदी पत्रिका 'आकाशभारती' का विमोचन। आशु कविता, पाठ, नारा, लेखन, आशु, भाषण, टिप्पणी

लेखन, प्रश्नोत्तरी और अंताक्षरी प्रतियोगिताओं में हिंदीतर और हिंदी वर्ग के कर्मचारियों की भागीदारी उत्साहजनक थी।

इस अवसर पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए हिंदी दैनिक 'अनुभामिनी के संपादक श्री सत्येंद्र नाथ सिंह ने हिंदी भाषा की उपयोगिता के बारे में चर्चा करते हुए प्रतिभागियों के उत्साह और हिंदी के स्तर की सराहना की।

पत्रकार सुश्री नीता निराश ने आकाशवाणी गांतोक में अधिकारियों तथा कर्मचारियों के हिंदी भाषा के प्रति प्रेम को भाषा के विकास के लिए सकारात्मक कदम बनाया।

चौदह सितंबर, हिंदी दिवस के अवसर पर पखवाड़े का समापन, पुरस्कार वितरण समारोह के साथ हुआ। समारोह के आरंभ में कार्यालय प्रमख श्री जीतेन कुमार राय ने उपस्थित लोगों का स्वागत करने के साथ ही हिंदी दिवस के अवसर पर आकाशवाणी के महानिदेशक श्री लीलाधर मंडलेर्ड का संदेश पढ़कर सुनाया।

इस के बाद विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि पत्र सूचना कार्यालय (पी. आई. बी.) गांतोक के निदेशक (संचार तथा माध्यम) श्री सी. के. दोर्जी ने पुरस्कार वितराण किया।

'ख' क्षेत्र

मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, राजभाषा अनुभाग पुणे

मध्य रेल के पुणे मंडल पर दिनांक 14 से 28 सितंबर तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया जा रहा है इस परिप्रेक्ष्य में दिनांक 20 सितंबर को 'राजभाषा की सांविधिक स्थिति तथा वर्तमान परिदृश्य' विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें केंद्रीय हिंदी समिति तथा रेलवे हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य, महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष, सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. दामोदर खडसे प्रमुख वक्ता के रूप में अपने व्याख्यान में कहा कि हिंदी दिवस या राजभाषा पखवाड़ा मनोवैज्ञानिक रूप से राजभाषा का माहौल बनाने का एक अवसर होता है और हमें इस अवसर का लाभ उठाना चाहिए। देश के विभिन्न रेल कार्यालयों का निरीक्षण दौरा करने के अपने अनुभवों का उल्लेख करते हुए आपने बताया कि रेलवे एक प्रवाह है, जो अनेक चीजों के साथ ही संपूर्ण देश में भाषा को भी प्रवाहित करता है, इस दृष्टिकोण से रेलवे हिंदी का सबसे बड़ा प्रचारक है। गत दिनों माननीय प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में संपन्न केंद्रीय हिंदी समिति की बैठक में हुए विचार-विमर्श का हवाला देते हुए आपने कहा कि राजभाषा सहज, सरल एवं स्वाभाविक है और आर्थिक विकास के साथ ही हिंदी भाषा का भी तेजी से विकास हुआ है एवं यह देश काल की सीमाओं से परे पहुंच गई है। आज देश में जिस अंग्रेजी भाषा को बोलकर लोग मिथ्या गर्व का अनुभव कर रहे हैं, उस अंग्रेजी भाषा का इतिहास बताते हुए आपने कहा कि इंग्लैण्ड में ही अंग्रेजी की बड़ी दुर्दशा थी, प्रशासनिक शब्दों को अभाव था, सारा कामकाज फ्रैंच में होता था, अंग्रेजी का भी इस मुकाम तक पहुंचने के लिए काफी संघर्ष का सामना करना पड़ा है।

एस टी क्यू सी निदेशालय, इलैक्ट्रॉनिकी परीक्षण तथा विकास केंद्र, बी-108, औद्योगिक क्षेत्र, फेज-8, मोहाली-160071

भारत सरकार, संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, सूचना प्रौद्योगिकी विभाग की मोहाली, स्थित प्रयोगशाला इलेक्ट्रानिकी परीक्षण तथा विकास केंद्र में हिंदी माह 2011 का आयोजन किया गया। इस दौरान हिंदी शब्द ज्ञान, हिंदी निबंध एवं हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिताएं आयेजित की गई। कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने इनमें उत्साहपूर्वक भाग लिया।

निदेशक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ई.टी.डी.सी., मोहाली सुश्री रविंद्र साही ने मुख्य समारोह में विजेताओं एवं प्रतिभागियों के साथ-साथ वर्ष भर में हिंदी में बढ़िया कार्य करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कार वितरित किए। निदेशक महोदया ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि वर्ष 2009-2010 के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चण्डीगढ़ द्वारा ई.टी.डी.सी. मोहाली को चण्डीगढ़, पंचकूला, मोहाली स्थित केंद्र सरकार के 87 कार्यालयों की रिर्पोटों के मूल्यांकन के आधार पर प्रथम पुरस्कार के लिए चयन किया गया है। यह सब केंद्र के प्रत्येक अधिकारी/कर्मचारी के द्वारा राजभाषा के प्रति प्रदान किए गए अंशदान के कारण संभव हुआ है।

भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण, मुरगांव जोनल बेस, सूक्ष्मतरंग केंद्र के सामने, मुरगांव, गोवा-403803

भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण, मुरगांव बेस, गोवा में 14 से 28 सितंबर, 2011 तक हिंदी पखवाड़ा 2011 मनाया गया। 15 दिवसीय आयोजन के दौरान हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु टिप्पण-आलेखन, राजभाषा प्रश्नावली, भाषण एवं तत्काल भाषण जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

समारोह का समापन कार्यक्रम 1 अक्तूबर, 2011 को रखा गया। श्री राजेन्द्र पी पैबीर, सचिव, मुरगांव पत्तन न्यास कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। अपने संक्षिप्त संबोधन में श्री पैबीर ने भारतीय मात्स्यि की सर्वेक्षण द्वारा हिंदी कार्यान्वयन के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की तथा एमपीटी की गतिविधियों से उपस्थिति को अवगत कराया। उन्होंने पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया।

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नाशिकरोड

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय में दिनांक 14-9-2011 से 28-9-2011 तक भाषाई सौहार्द पखवाड़ा बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। हिंदी पखवाड़ा के उपलक्ष्य में हिंदी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, हिंदी शब्द ज्ञान प्रतियोगिता, हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता, रंगोली प्रतियोगिता, नाम और विषय लेखन प्रतियोगिता (फाईलों/रजिस्टरों पर), राजभाषा पुरस्कार प्रतियोगताओं का आयोजन किया गया।

दिनांक 3-10-2011 को शाम 4.30 बजे हिंदी पखवाड़ा समापन और पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री एस एन लाहिडी, महाप्रबंधक भारत प्रतिभूति मुद्रणालय ने की। इन सभी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार महाप्रबंधक, उप महाप्रबंधक, कार्य प्रबंधक, मुख्य अभियंता के करकमलों से दिए गए।

ग्रेफ केंद्र, दिघी कैंप, पुणे-411015

ग्रेफ सेंटर एवं अभिलेख कार्यालय में दिनांक 1 सितंबर, 2011 से 14 सितंबर, 2011 तक हिंदी दिवस मनाया गया जिसके दौरान हिंदी संबंधी विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ हिंदी निबंध प्रतियोगिता के साथ किया गया। हिंदी भाषियों एवं हिंदीतर भाषियों के लिए अलग-अलग निबंध प्रतियोगिता एवं हिंदी नोटिंग/ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिताओं का संचालन निर्णायक मण्डलों के तत्वाधान में किया गया। ग्रेफ केंद्र एवं अभिलेख कार्यालय के कार्मिकों ने उत्साहपूर्वक बढ़-चढ़कर इन प्रतियोगताओं में भाग लिया।

दिनांक 22 सितंबर, 2011 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता कर्नल जी मुत्तुकुमार, सेना मेडल, कमान्डेन्ट, ग्रेफ सेंटर एवं प्रभारी अधिकारी अभिलेख, पुणे ने की। अध्यक्ष महोदय कर्नल जी मुत्तुकुमार, सेना मेडल, कमांडेंट, ग्रेफ सेंटर ने अपने भाषण में कहा कि हमारा समारोह मनाना तभी सार्थक होगा जब हम स्वेच्छा से इसे अपनाएं और रोजमर्रा के कामों में अधिक से अधिक प्रयोग कर दूसरों को भी इसके प्रयोग के लिए प्रेरित करें। हमारा देश प्रजातांत्रिक देश है। और किसी देश में प्रजातंत्र की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि उस देश का राजकाज उसकी राष्ट्र भाषा में हो ताकि राष्ट्रीयता का प्रकटीकरण समूचे भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में हो।

कार्यालय, वित्त एवं लेखा नियंत्रक (फै.) लेखा कार्यालय, गोला बारुद फैक्टरी, खड़की, पुणे-411003

लेखा कार्यालय, गोला बारूद फैक्टरी, खड़की, पुणे में दिनाक 14-9-2011 से 30-9-2011 के दौरान हिंदी पखवाड़ा बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। दिनांक 30-9-2011 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में सफल 26 कर्मचारियों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

नियंत्रक महोदय ने अपने भाषण में सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से हिंदी में अधिकाधिक काय करने की तथा राजभाषा अधिनियम/नियमों के अनुपालन की सराहना की। हिंदी पत्राचार तथा अन्य अधिकांश मदों के बारे में वार्षिक कार्यक्रम में उल्लिखित लक्ष्य प्राप्त करते हुए सराहनीय कार्य इस कार्यालय द्वारा किया जा रहा है, जिसके लिए प्रधान कार्यालय कोलकाता द्वारा इस कार्यालय को वर्ष, 2009-10 एवं 2010-11 के अखिल भारतीय रक्षा लेखा विभाग फैक्टरी संगठन स्तर पर प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया है।

रेलवे स्टाफ कालेज, लालबाग, वड़ोदरा

रेलवे स्टाफ कालेज, वड़ोदरा में दिनांक 14-9-2011 से 30-9-2011 तक राजभाषा पखवाड़ा का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत संकाय सदस्यों, मेहमान अधिकारियों तथा कर्मचारियों के लिए अनेक प्रतियोगिता/कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

दिनांक 29-9-2011 को डॉ. शैलजा भारद्वाज, हिंदी विभागाध्यक्ष, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वड़ोदरा

द्वारा भूमंडलीकरण के दौर में भारतीय भाषाओं के समक्ष चुनौतियां एवं उनका समाधान विषय पर व्यावहारिक एवं सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया गया, जिसकी सभी के द्वारा प्रशंसा की गई।

दिनांक 30-9-2011 को श्री नीरज कुमार, महानिदेशक महोदय की अध्यक्षता में आयोजित राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में महानिदेशक महोदय द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विजेता अधिकारियों तथा कर्मचारियों को नकद पुरस्कार तथा प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गए।

श्रम एवं रोजगार मंत्रालय/खान सुरक्षा महानिदेशालय/अहमदाबाद क्षेत्र/नं. 30, सहजानन्द विला-II, न्यू सी.जी. रोड, चाँदखेडा अहमदाबाद-382 424

खान सुरक्षा महानिदेशालय के अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय में दिनांक 01-9-2011 से 15-9-2011 तक हिंदी पखवाड़ा पूर्ण उत्साह के साथ मनाया गया। अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय में अधिकांश कार्य हिंदी में किए जाते हैं फिर भी इस पखवाड़े के दौरान सभी टिप्पणी, प्रारूपण, फाईलों पर नाम, विषय, प्राप्त पत्रों का उत्तर तथा अन्य लेखन कार्य हिंदी में किए गए। ऐसे वैज्ञानिक एवं तकनीकी पत्र जिनका हिंदी रूपांतरण तत्क्षण संभव नहीं है उसका अग्रसण पत्र हिंदी में भेजा गया तथा भविष्य में भी सभी कार्य हिंदी में करने का संकल्प लिया गया।

हिंदी पखवाड़े में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय के सभी कर्मचारियों ने बडे उत्साह से भाग लिया। प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतियोगियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

पश्चिम रेलवे, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, कोठी कंपाउंड, राजकोट-360001

14 सितंबर, 2011 को मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, राजकोट के सभाकक्ष में हिंदी दिवस की शुरुआत की गई। इस अवसर पर राजभाषा अधिकारी श्री पी. बी. सिंह ने मंरेप्र एवं अमंरेप्र का पुष्पगच्छ से स्वागत किया और सभी अधिकारियों को राजभाषा के बारे में विस्तृत जानकारी दी। मंरेप्र महोदय ने सभी अधिकारियों से पखवाड़े के दौरान अपना संपूर्ण कार्य हिंदी में करने हेतु निवेदन किया तथा अमंरेप्रजी ने सभी अधिकारियों को हिंदी में कार्य करने हेतु प्रेरित किया। तत्पश्चात् श्री वेदपाल, मंडल रेल प्रबंधक द्वारा महाप्रबंधकजी, रेलमंत्री तथा गृहमंत्री के संदेशों का वाचन किया गया तथा श्री दयानंद गाँधी, अपर मंडल रेल प्रबंधक द्वारा मंरेप्र के संदेश का वाचन किया गया।

इसी अवसर पर श्री वेदपाल, मंडल रेल प्रबंधक के करकमलों द्वारा "राजभारती" के 11वें अंक का विमोचन कर उपस्थितों में इसका वितरण किया गया।

तदुपरांत गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की 20,000 शब्दों की डायरी योजना में भाग लेने वाले कर्मचारियों को मंडल रेल प्रबंधक के करकमलों द्वारा पुरस्कृत किया गया।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला, खड़कवासला, पुणे-411024

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला, खड़कवासला, पुणे (भारत सरकार, जल संसाधन मंत्रालय) में 14 सितंबर 2011 को हिंदी दिवस समारोह मनाया गया। इस अवसर पर अनुसंधान शाला के निदेशक डॉ. ईश्वर दत्त गुप्ता, मुख्य अतिथि द्वारा हिंदी गृह पत्रिका "जलवाणी" के अठारहवें अंक का विमोचन किया गया। हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी निबंध, वाद-विवाद, वार्तालाप, प्रश्नमंच, प्रस्तुतिकरण, टंकण, तकनीकी शब्दों का हिंदी अनुवाद, तकनीकी लेख और हिंदी में मूल रूप से टिप्पण आलेखन योजना में पुरस्कार प्राप्त कर्मचारियों को मुख्य अतिथि द्वारा नकद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र देकर प्रोत्साहित किया गया।

डॉ. ईश्वर दत्त गुप्ता जी ने अपने संबोधन में अनुसंधान शाला के अधिकारियों द्वारा प्रस्तुत काव्यपाठ की सराहना की एवं हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं में विजेता कर्मचारियों को बधाई देकर प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि अनुसंधान शाला में हिंदी का कामकाज संतोषजनक है लेकिन हमें इसमें ही संतोष नहीं करना चाहिए। हिंदी के प्रचार प्रसार के साथ-साथ स्वयं ही कार्यालयीन कामकाज में पत्राचार बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। अनुसंधान शाला के अधिकारियों को हिंदी में पुस्तक लिखने हेतु प्रेरित किया। उन्होंने सुझाव दिया कि

तकनीकी लेखों को आम लोगों की भाषा में लिखने का प्रयास किया जाए, साथ ही उन्होंने हिंदी में इ-मेल भेजने पर जोर दिया क्योंकि यह आज का सबसे अधिक प्रयोग में आने वाला माध्यम है ।

राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, सैक्टर-67, एस. ए. एस. नगर, पंजाब-162062

राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (नाईपर), एस.ए.एस. नगर (मोहाली) में 07 से 21 सितंबर तक राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । हिंदी पखवाड़ा के आयोजन का मुख्य उद्देश्य, संस्थान में हिंदी भाषा को अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना है ।

07 सितंबर से आरंभ हुए हिंदी पखवाड़ा के दौरान 06 विभिन्न प्रतियोगिताओं में 150 से अधिक प्रतिभागियों ने अपनी सहभागिता निभाई ।

21 सितंबर 2011 को आयोजित हिंदी पखवाड़ा के समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अमित शर्मा, जनरल मैनेजर, हिन्दुस्तान टाईम्स, चण्डीगढ़ थे । उन्होंने कहा कि हिंदी एक सरल और सहज भाषा है जिसे आसानी से समझा जा सकता है । उन्होंने आगे कहा कि हिंदी देश की भाषा है । बेशक नाईपर एक वैज्ञानिक संस्थान है और यहां वैज्ञानिक काम हिंदी में करने के कठिनाई होगी, लेकिन हमें हिंदी को जन मानस में बसाने का प्रयास करना है । हिंदी का ज्ञान पठन-पाठन से प्राप्त नहीं हो सकता, हममें हिंदी सीखने की लगन होनी चाहिए ।

प्रो. के. के. भूटानी, कार्यवाहक निदेशक, नाईपर ने अपने विचार रखते हुए कहा कि भाषा विचार प्रकट करने का एक माध्यम है । हमें अपनी भाषा में ऐसे सरलतम शब्दों का प्रयोग करना चाहिए जिससे की अधिक से अधिक आम जन परिचित हो ।

डॉ. यू.सी. बैनर्जी, डीन, नाईपर ने कहा कि हमारे देश में विभिन्न बोलियां बोली जाती है लेकिन सब को समझ आने वाली भाषा हिंदी है । संस्थान की प्रशंसा करते हुये कहा कि एक वैज्ञानिक संस्थान होने के बावजूद संस्थान में जितना हिंदी का संवर्धन होना चाहिए, उसे कहीं अधिक हो रहा है । संस्थान में राजभाषा के विकास के लिए हमें एकजुट होकर प्रयास करना होगा । इसके साथ ही उन्होंने राजभाषा के क्षेत्र में कार्य कर रहे कर्मचारियों की भी सराहना की ।

उप क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, 'पंचदीप भवन', गणेशपेठ, नागपुर

निगम के उप क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर तथा इसके अधीनस्थ शाखा कार्यालयों में 01 सितंबर से 14 सितंबर, 2011 तक राजभाषा पखवाड़े का आयोजन किया गया ।

निगम कार्मिकों के मन में हिंदी के प्रयोग, प्रचार व प्रसार के प्रति अभिरुचि पैदा करने के लिए इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । इन प्रतियोगिताओं में पर्याप्त संख्या में कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया ।

मुख्य अतिथि डॉ. वीणा दाढे, ने भी इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुये कहा कि हिंदी जन-जन की भाषा है । उन्होंने कहा कि हिंदी को राजभाषा बनाने का श्रेय स्वतंत्रताकाल से ही सभी भारतवासियों को ही जाता है । अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिंदी में जारी शोध कार्यों में बढोतरी हो रही है । आज हिंदी के जानकारों को पत्रकारिता, मीडिया के क्षेत्र में काफी अवसर प्राप्त हो रहे है, हिंदी के विकास में इसकी सर्वग्राही प्रवृति का अत्यंत योग दान रहा है, हमें इसमें मराठी, लोकबाणियों के प्रयोग को स्वाभाविक रूप से बढावा देना चाहिए । हिंदी देश की संपर्क भाषा और संघ की राजभाषा तो है ही राष्ट्रीय अस्मिता, स्वाधीनता और स्वाभिमान का प्रतीक भी है । राजकाज में इसका प्रयोग संकोच और झिझक का नहीं गर्व और गौरव का विषय होना चाहिए ।

14 सितंबर, 2011 को समापन समारोह में अपने अध्यक्षीय भाषण में निगम के कर्मचारियों को संबोधित करते हुए श्री एस. सी. भारद्वाज, प्रभारी संयुक्त निदेशक ने कहा कि सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग सभी सरकारी कार्मिकों का नैतिक व सांविधिक दायित्व है । सरकार की राजभाषा नीति का हवाला देते हुए श्री भारद्वाज ने कहा कि सरकारी कामकाज सरल, सहज तथा आम बोल-चाल की भाषा में निपटाया जाना चाहिए । उन्होंने उप क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर को मुख्यालय द्वारा 'ख' क्षेत्र में हिंदी में सराहनीय कार्य करने पर प्रथम पुरस्कार तथा नराकास, नागपुर द्वारा प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त करने पर राजभाषा विभाग, उ. क्षे.

कार्यालय, नागपुर की भूरि-भूरि प्रशंसा की एवं सभी अधिकारियों/कर्मचारियों की सराहना करते हुए यह कहा कि वे अपना अधिकाधिक काम स्वाभाविक रूप से हिंदी में ही निपटाने का प्रयत्न करें ।

राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान, पो. बाक्स 2031, मेघाणी नगर, अहमदाबाद-380016

संस्थान में हिंदी दिवस के अवसर पर दिनांक 7 सितंबर 2011 को सुबह 11.30 से 12.30 बजे तक अक्षर से शब्द लेखन प्रतियोगिता तथा अपरान्ह 2.30 से 3.30 बजे तक हिंदी श्रुत लेखन प्रतियोगिता, दिनांक 8 सितंबर 2011 को सुबह 11.00 से 12.00 बजे तक "हिंदी निबंध प्रतियोगिता" व "हिंदी मौलिक कविता प्रतियोगिता" एवं दिनांक 12 सितंबर 2011 को सुबह 11.00 से 12.00 बजे तक "हिंदी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के हिंदी और हिंदीत्तर भाषी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया । तत्पश्चात् दिनांक 14 सितंबर 2011 को 2.45 बजे "राजभाषा उद्योग" नामक विषय पर एक रोचक व्याख्यान का आयोजन किया गया । साथ ही "हिंदी गांधी और गुलामी" नामक हिंदी टेली फिल्म भी दिखाई गई ।

मुख्य अतिथि डॉ किशोर वासवानी ने बताया कि हिंदी दिवस एक कानूनी दिवस है क्योंकि हिंदी को आज ही के दिन 14 सितंबर 1949 को यह निर्णय लिया गया था कि हिंदी ही पूरे देश की राष्ट्रभाषा होगी और केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों में हिंदी में कार्य किया जाएगा । सन् 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना हुई और तब से इसी विभाग के निदेशानुसार राजभाषा हिंदी का कार्य सभी केंद्रीय कार्यालयों में होता आ रहा है । आपने बताया कि धारा 3 (3) के तहत सभी कार्यालयों में कार्यालय परिपत्र, कार्यालय ज्ञापन, कार्यालय आदेश, करार, अधिसूचना इत्यादि द्विभाषी रूप में जारी किए जाने चाहिए । साथ ही आपने बताया कि नियमानुसार किसी भी कार्यालय में 150 से अधिक कर्मचारीगण हैं तो वहाँ हिंदी कक्ष का निर्माण अलग से होना चाहिए तथा हिंदी अधिकारी, हिंदी अनुवादक व हिंदी सहायक जैसे पदों का सृजन होना चाहिए ।

डॉ. सुनील कुमार ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि राजभाषा हिंदी के विकास और समृद्धि के लिए पूर्ण मन से हिंदी में निष्ठापूर्वक काम करना हम सबकी राष्ट्रीय जिम्मेदारी हैं ।

हिंदी में काम करना आसान है और यह हमारी राष्ट्रीय अस्मिता की पहचान भी है । यह भारतीय आत्मा की अमर वाणी है । इसलिए हमें अपने अधिकाधिक कामकाज हिंदी में ही करने का प्रयत्न करना चाहिए और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करना चाहिए । इस गौरवपूर्ण अवसर पर आपने संस्थान के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपना अधिकाधिक कामकाज हिंदी में करने की अपील की ।

राष्ट्रीय विषाणु विज्ञान संस्थान, 20ए, डॉ. अंबेडकर मार्ग, पो. बाक्स-11, पुणे-411001

दिनांक 9 सितंबर, 2011 को "हिंदी सप्ताह तथा संगोष्ठी समारोह" का उद्घाटन डॉ. ए. सी. मिश्रा, निदेशक की अध्यक्षता तथा डॉ. जी. सी. मिश्रा, भूतपूर्व निदेशक, राष्ट्रीय कोशिका विज्ञान केन्द्र, पुणे की प्रमुख अतिथि तथा संस्थान के श्री आर. लक्ष्मीनारायण्न, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी की उपस्थिति में उनके करकमलों द्वारा दीप-प्रज्वलीत करके किया गया ।

हिंदी सप्ताह के समापन समारोह में संस्थान के श्री आर. लक्ष्मीनारायण्न वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि संस्थान में पहली बार भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद शताब्दि समारोह के उपलक्ष्य में पश्चिमी क्षेत्र संस्थानों के कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी संगोष्ठी का आयोजन किया गया और उसमें राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान, मुंबई, राष्ट्रीय व्यावसायिक स्थास्थ्य संस्थान, अहमदाबाद तथा राष्ट्रीय विषाणु विज्ञान संस्थान, पुणे के कर्मचारियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लेकर अलग-अलग विषयों पर स्लाईड दिखाकर प्रस्तुतिकरण किया ।

राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान, नेहरू मार्ग, नागपुर-440020

संस्थान द्वारा दिनांक 6-20 सितंबर, 2011 तक 'हिंदी पखवाड़ा' का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत

हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं दैनिक कार्य में हिंदी के प्रयोग में वृद्धि संबंधी प्रयास किए गए । हिंदी पखवाड़ा का विधिवत् शुभारंभ कवि सम्मेलन से किया गया तथा हिंदी टिप्पण व आलेखन, हिंदी निबंध, हस्तलिपि, पंचलाइन, प्रतीक-चिह्न, सामान्य ज्ञान, हिंदी अनुवाद एवं तात्कालिक टीम प्रतियोगिता और प्रशासनिक/तकनीकी/वैज्ञानिकों हेतु हिंदी कार्यशाला आदि का आयोजन भी किया गया ।

दिनांक 20 सितंबर, 2011 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन किया गया ।

अध्यक्षीय भाषण में डॉ. चलपति राव ने संस्थान में हुई हिंदी की गतिविधियों, उपलब्धियों एवं हिंदी पखवाड़ा के दौरान हुई हिंदी के कार्यक्रमों/प्रतियोगिताओं/हिंदी कार्यशालाओं की जानकारी दी तथा हिंदी कार्यान्वयन से संबंधित अपने विचार भी प्रस्तुत किए ।

इस समारोह के दौरान मुख्य अतिथि श्री मणिकांत सोनी संपादक दैनिक भास्कर ने अपने अभिभाषण में कहा कि जिस तरह अंग्रेजी डिक्शनरी में अंग्रेजी के नए-नए शब्दों को सम्मिलित कर अद्यतन किया जाता है ठीक उसी तरह हिंदी डिक्शनरी में भी हिंदी के नए-नए शब्दों को सम्मिलित कर अद्यतन किया जाना चाहिए । राष्ट्रध्वज के अपमान होने पर जनता एकत्रित होकर अपना विरोध प्रदर्शित करते हैं, इसी तरह राष्ट्रभाषा का अपमान होने पर भी एकत्रित होने चाहिए ।

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, सैक्टर-19ए, मध्य मार्ग, चण्डीगढ़

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चण्डीगढ़ में दिनांक 01.09.2011 से 14.09.2011 तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया ।

दिनांक 14.09.2011 को क्षेत्रीय निदेशक श्री भारत भूषण पुरी की अध्यक्षता में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया । हिंदी दिवस समारोह की पृष्ठ भूमि पर प्रकाश डालते हुए श्री रमेश लाल वर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने कहा कि 14 सितंबर, 1949 की संविधान सभा ने सर्वसम्मति से देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को संघ सरकार की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया था । उन्होंने कहा कि संविधान सभा का यह निर्णय प्रजातांत्रिक प्रणाली, प्रभुता संपन्न राष्ट्र, और जन भावनाओं को ध्यान में रखकर लिया गया था उन्होंने कहा कि सरकारी कार्यालयों में काम-काज विदेशी भाषाओं में किया जाना किसी भी प्रकार से उचित नहीं है । उन्होंने हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिए जाने की दिशा में सरकार द्वारा किए जा रहे उपायों की जानकारी दी और कहा कि कार्यालयों में शत-प्रतिशत कार्य हिंदी में किए जाने की स्थिति में उल्लेखनीय प्रगति हो रही है ।

जवाहर लाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट, प्रशासन भवन, शेवा, तालुका-उरण, नवीं मुंबई-400707

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में हिंदी दिवस के अवसर पर दिनांक 14 सितंबर, 2011 से दिनांक 28 सितंबर, 2011 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया । इस दौरान हिंदी अनुवाद एवं शब्दावली, हिंदी टंकण (आशुलिपिक वर्ग), हिंदी टंकण (अन्य वर्ग), हिंदी कहानी लेखन, हिंदी भाषण, रोचक प्रसंग कथन, वर्ग पहेली, हिंदी निबंध लेखन, शुद्ध हिंदी लेखन, हिंदी कविता पाठ, गीत गायन, हिंदी अंताक्षरी और हिंदी भाषाज्ञान की कुल मिलाकर 13 प्रतियोगिताएं आयोजित की गई ।

समारोह की अध्यक्षता कर रहे उपाध्यक्ष, श्री एन. एन. कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि यूँ तो हमारे देश में कई भाषाएँ बोली जाती हैं किंतु उनमें हिंदी का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है । यह आवश्यक है कि हम अपनी संस्कृति एवं भाषा को विशेष सम्मान दें जो कि राष्ट्र के विकास के लिए बहुत आवश्यक है । मुख्य अतिथि अध्यक्ष, श्री एल. राधाकृष्णन ने अपने सम्बोधन में कहा कि सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी की जैसी प्रगति होनी चाहिए वैसी नहीं हुई है । इसके लिए आवश्यक है कि जिस स्तर पर हम पहुँच गए है उस पर कायम रहें और नवीन तकनीकी द्वारा भी हिंदी के विकास के लिए कार्य करें ।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, क्षेत्रीय कार्यालय पंचदीप भवन, ई.डी.सी. प्लॉट नं. 23, पाटो, पणजी, गोवा-403001

दिनांक 14 सितंबर 2011 को हिंदी दिवस मनाते हुए हिंदी पखवाड़े का आरंभ किया गया और दिनांक 14 सितंबर 2011 से 28 सितंबर 2011 तक की अवधि में राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया । दिनांक 28 सितंबर 2011

को 'हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह' आयोजित किया गया। पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय निदेशक श्री आर.एस. राव ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि हिंदी विश्व में अधिकतम लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं में दूसरे स्थान पर है। आज लोग जर्मनी, जापान आदि देशों की भाषा सीख रहे हैं। हिंदी भी बाहर देश के लोगों द्वारा सीखी जा रही हैं। हिंदी हमारी संस्कृति की पहचान है। इमें पूरा सम्मान देना चाहिए। उन्होंने कहा कि सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने में कर्मचारी राज्य बीमा निगम का महत्वपूर्ण योगदान है। हमारा प्रयास रहा है कि हम देश की जनता से जनता की भाषा में बात करें ताकि सामाजिक सुरक्षा एवं विकास के सारे लाभ आम आदमी तक पहुंच सके। हिंदी में काम करने के प्रति हम प्रतिबद्ध हैं।

समारोह में राजभाषा में राजभाषा पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं-हिंदी निबन्ध लेखन, प्रश्न-पत्र के आधार पर हिंदी टिप्पण/आलेखन, हिंदी अन्ताक्षरी के विजेताओं को नकद पुरस्कार, प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिह्न प्रदान किए गए। राजभाषा हिंदी में सर्वाधिक काम करने के लिए वित्त एवं लेखा शाखा को क्षेत्रीय निदेशक के कर-कमलों से राजभाषा चल-शील्ड प्रदान की गई।

दूरदर्शन केंद्र : नागपुर

दूरदर्शन केंद्र, नागपुर में दिनांक 2 से 16 सितंबर, 2011 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़े के दौरान अधिकारियों/कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में कार्य काने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। दिनांक 16 सितंबर को हिंदी दिवस तथा हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह मनाया गया जिसकी अध्यक्षता निदेशक (अभि.) श्री अधीर गड़पाले ने की। इस अवसर पर निदेशक (अभि.) महोदय ने माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार द्वारा हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में भेजे गये संदेश को पढ़कर सुनाया। इसी प्रकार दूरदर्शन के महानिदेशक माननीय श्री त्रिपुरारि शरण द्वारा हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर भेजी गई अपील को श्री राजीव गायकवाड़, कार्यक्रम निष्पादक द्वारा पढ़ कर सुनाया गया। समापन समारोह के अवसर पर हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को निदेशक महोदय तथा मंच पर उपस्थित अधिकारियों के शुभ हस्ते नकद पुरस्कार तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गए।

आकाशवाणी नागपुर

दिनांक 14 सितंबर, 2011 को हिंदी दिवस मनाया गया तथा दिनांक 15-09-2011 से 29-09-2011 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन क्रिया गया। सुप्रसिद्ध नागपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग प्रमुख, श्रीमती विणा दाढ़े प्रमुख अतिथि हिंदी दिवस के उद्घाटन के अवसर पर कहा कि कार्यालयीन भाषा सरल होनी चाहिए जिसे कोई भी आसानी से समझ सकें, वही भाषा सफल होती है, हमारी राजभाषा हिंदी एक ऐसी भाषा है जो जिस तरह बोली जाती है, उसी तरह लिखी भी जाती है इससे और सरल भाषा शायद कोई नहीं हैं।

उपनिदेशक (कार्यक्रम) श्री दिगंबर पिंपलघरे ने अपने अभिभाषण में कहा कि, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्य शत-प्रतिशत कार्य हिंदी में किये जाने के निर्देश हैं। हमारे केंद्र में निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के पूर्णत: प्रयास किये जा रहे हैं तथा सभी अधिकारी एवं कर्मचारी मिसिलों पर हिंदी में लिख रहे हैं।

इस अवसर पर निदेशक (अभियांत्रिकी) श्री रमेश घरडे ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि, शासकीय कार्य करते समय अंग्रेजी शब्दों के हिंदी पर्याय नहीं मालूम होने पर देवनागरी में वहीं शब्द लिखकर आगे बढ़ें यह रुकावट नहीं बल्की भाषा की लवचीकता है कि सभी भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करते हुए राजभाषा में कार्य करना आसान हैं बस हमें अपनी मानसिकता में परिवर्तन करने की आवश्यकता है।

मुख्य अतिथि महोदय तथा कार्यालय अध्यक्ष ने हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र प्रदान किये।

आकाशवाणी : भुज-कच्छ

आकाशवाणी भुज की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के द्वारा दिनांक 01 सितंबर से 14 सितंबर तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस पक्ष के दौरान कार्यालय के सभी कार्य राजभाषा में किये गये। इसके अलावा प्रसारणों में समय-समय पर राष्ट्रभाषा हिंदी के बारे में सूत्रों का प्रसारण किया गया।

दिनांक 14.09.2009 को राजभाषा पखवाड़ा का समापन समारोह का आयोजन किया गया । पखवाड़े के दौरान विविध प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार पाने वालों को समारंभ के अतिथि विशेष के हाथों पुरस्कार अर्पण किये गए ।

आकाशवाणी एवं दूरदर्शन, मुंबई

अपर महानिदेशक (अभि.0 प. क्षे. आकाशवाणी एवं दूरदर्शन, मुंबई के कार्यालय द्वारा "दिनांक 14 सितंबर 10 को हिंदी दिवस व 14 से 29 सितंबर, 2011 तक हिंदी पखवाड़ा" मनाया गया । इस हिंदी पखवाड़े में निबंध, टंकण, टिप्पणी एवं आलेखन, तत्कालिक-भाषण, शुद्ध-लेखन, शब्दावली, कविता-पाठ, सामान्य-ज्ञान आदि स्पर्द्धाएं आयोजित की गई । पुरस्कार समारोह के मुख्य अतिथि और आकाशवाणी एवं दूरदर्शन में पश्चिम क्षेत्र के अपर महानिदेशक (अभि.) श्री राजेन्द्र प्रसाद जी ने विजेताओं को पुरस्कार दिए । इस अवसर पर उन्होंनें कहा कि अंगर सब लोग पूरे साल हिंदी में सरकारी कामकाज करें तो इस आयोजन को सही अर्थों में सार्थक माना जाएगा ।

आकाशवाणी : अहमदाबाद

आकाशवाणी एवं विज्ञापन प्रसारण सेवा में 'हिंदी दिवस' राजभाषा पर्व के रूप में मनाया गया । 'हिंदी दिवस' एवं हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन दिनांक 14 सितंबर दोपहर 12.00 बजे दीप प्रजवलित करते हुए हुआ । इस शुभ अवसर पर भूतपूर्व केंद्र निदेशक श्रीमती साधना भट्ट मुख्य अतिथि ने सभी उपस्थित सदस्यों को हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ दी एवं कहा कि हिंदी एक सरल भाषा है और सभी को अपना सरकारी कामकाज हिंदी में ही करना चाहिए ।

श्रीमती मीनाक्षी सिंघवी, उपनिदेशक (अभि.) ने सभी सदस्यों को 'हिंदी दिवस' की शुभकामनाएँ देते हुए बताया कि हरेक को अपने विचार व्यक्त करने के लिए एक भाषा की जरुरत पड़ती है तो हिंदी एक सरल-सहज भाषा है, जिसमें विचार व्यक्त करना आसान है । अब तो हिंदी राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय भाषा बन चुकी है । ब्लोग, इमेल, वेबसाईट हिंदी में बनने लगे हैं । आगे उन्होंने बताया कि अब तो आप इन्टरनेट द्वारा पूरे विश्व में हिंदी में बातचीत कर सकते हैं ।

'क' क्षेत्र

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, हेहल, राँची-834005

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, हेहल, राँची में हिंदी दिवस सह पखवाड़ा का आयोजन दिनांक 14.09.2011 से 29.09.2011 तक किया गया । दिनांक 14.09.2011 को हिंदी दिवस सह पखवाड़े का उद्घाटन किया गया तथा साथ ही हिंदी दिवस भी मनाया गया । पखवाड़े का उद्घाटन द्वीप प्रज्वलित करके मुख्य अतिथि श्री बी. एम. के. सिंह, संयुक्त निदेशक (सेवानिवृत्त), केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी, राँची एवं केंद्र के वैज्ञानिक डी डॉ. पी. एन. मिश्रा ने किया । कार्यक्रम में क्षे.रे.उ.अ.के., राँची के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी ने सक्रिय रूप से भाग लिया । मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी एक समृद्ध भाषा है जो भारत में सर्वत्र बोली एवं समझी जाती है । उन्होंने हिंदी पखवाड़ा मनाये जाने के परिपेक्ष्य में विशेष तौर पर प्रकाश डाला तथा कर्मचारियों का उत्साहवर्धन करते हुए शत्-प्रतिशत् कार्य हिंदी में करने पर बल दिये । केंद्र के प्रभारी डॉ. पी. एन. मिश्रा, वैज्ञानिक-डी के द्वारा केंद्रीय रेशम बोर्ड के माननीय अध्यक्ष एवं सदस्य सचिव का संदेश भी पढ़ा गया । अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रभारी ने केंद्र के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा लगातार शत्-प्रतिशत् हिंदी में किये जा रहे कार्यों की प्रशंसा की तथा भविष्य में भी राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ठ कार्य करते रहने का आह्वान किया । केंद्र के वैज्ञानिक-सी डॉ. ए.एच. नकवी ने हिंदी दिवस सह पखवाड़ा पर विशेष तौर पर प्रकाश डालते हुये राजभाषा के विकास पर बल दिया । उन्होंने तकनीकी कार्यों में हिंदी में शत्-प्रतिशत् कार्य करने एवं लक्ष्य पाने को प्रेरित किया ।

आकाशवाणी : राँची

हिंदी पखवाड़ा वर्ष 2011 दिनांक 14 से 29 सितंबर तक मनाया गया । आकाशवाणी राँची ने अपने सभागार में अपराह्न 3.00 बजे हिंदी पखवाड़ा 2011, हिंदी दिवस के रूप में मनाया । प्रारंभ में, माननीय गृह मंत्री श्री पी. चिदम्बरम द्वारा लिखित राजभाषा हिंदी के पाँच विशेष पहलुओं पर आधारित हार्दिक मंगलकामनाओं की घोषणाएँ की गईं तथा महानिदेशक श्री लीलीधर मडलोई की अपील भी पढ़ी

गई। आकाशवाणी कार्यालय के कलाकार श्री श्यामानन्द झा के गायन तथा संदीप चटर्जी के तबला वादन से लोगों का स्वागत किया। कार्यालय प्रमुख श्री डी.सी. हेम्ब्रम ने हिंदी दिवस में उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए हिंदी दिवस की महत्ता तथा कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी के प्रयोग हेतु बल दिया।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण बिरसा मुंडा हवाई अड्डा, राँची

14.09.2011 को हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा 2011 का उद्घाटन समारोह श्री राघवेंद्र कुमार राजू, विमानपत्तन निदेशक की अध्यक्षता में दिनांक 14.09.2011 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया एवं 30 सितंबर, 2011 तक चलने वाला हिंदी पखवाड़ा 2011 का भी उद्घाटन किया गया। पखवाड़े के दौरान भाषण, निबंध लेखन, टंकण, अनुवाद एवं प्रारूप-टिप्पण लेखन प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। 34 अधिकारियों/कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

श्री राघवेंद्र कुमार राजू, विमानपत्तन निदेशक की अध्यक्षता में दिनांक 30.09.2011 को दोपहर 15.30 बजे हिंदी पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, केंद्रीय रेशम बोर्ड, 342-347, ए-विंग (द्वितीय तल) अगस्त क्रांति भवन, भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली-110066

कार्यालय में दिनांक 14.9.2011 से 20.09.2011 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया।

हिंदी सप्ताह का शुभारंभ सुबह 11.00 बजे कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में किया गया। शुभारंभ का डा. आर.डी. सिंह, उप सचिव (तक.) ने क्षेत्रीय कार्यालय, केंद्रीय रेशम बोर्ड, नई दिल्ली के सभी उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर डॉ. आर.डी. सिंह, उप सचिव (तक.) ने सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को 14 सितंबर, 2011 को कार्यालय में हिंदी दिवस के अवसर पर कर्मचारियों एवं अधिकारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए विशेष बल दिया।

20 सितंबर को हिंदी सप्ताह का समापन समारोह आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता डॉ. आर.डी. सिंह, उप सचिव (तक.) ने की तथा प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरुस्कृत किया।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, राजेन्द्र भवन, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली-110008

क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली में 01 से 14 सितंबर 2011 तक राजभाषा पखवाड़े का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय कार्यालय में 14-9-2011 को अपराह्न 3 बजे हिंदी दिवस समारोह का आयोजन बड़े उत्साह पूर्वक ढंग से किया गया। समारोह की अध्यक्षता अपर आयुक्त-व-क्षेत्रीय निदेशक श्री ए.के. वर्मा ने की।

श्री ए.के. वर्मा अपर आयुक्त-व-क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में मुख्य अतिथि का आभार व्यक्त किया। उन्होंने अपने अनुभवपूर्ण विचारों से समारोह में उपस्थित जनों का मार्गदर्शन किया। उन्होंने हिंदी की अनिवार्यता पर बल देते हुए कहा कि कार्यालय में पदस्थ लगभग सभी कर्मचारियों की मातृभाषा हिंदी है। अत: ऐसे में कार्यालयीन हिंदी का प्रयोग उन्हें नि:संकोच रूप से करना चाहिये।

दूरदर्शन केंद्र, देहरादून

दूरदर्शन केंद्र, देहरादून में दिनांक 14.9.2011 से 29.09.2011 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 29.09.11 को किया गया जिसमें कार्यक्रम प्रमुख श्री हरीश करमचंदाणी महोदय द्वारा मुख्य अतिथि श्री बाल्मीकी जी का स्वागत किया गया तथा अपने विचारों से अवगत भी कराया गया, श्री बाल्मीकी जी ने बताया कि वैसे तो हम एक क्षेत्र से है, हमें हिंदी पखवाड़ा मनाने की आवश्यकता नहीं है लेकिन फिर भी काफी लोग जिनके मन में हिंदी के प्रति हिचकिचाहट रहती है उसको बहार आने का मौका मिलता है, साथ ही हिंदी के विकास को भी बल मिलता है। साथ ही हिंदी दिवस एवं पखवाड़ा मनाने से हम अपनी भाषा एवं राष्ट्र के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं। उनकी उपस्थिति में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार प्रदान किया गया।

मुख्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, पंचदीप भवन, सी.आई.सी. मार्ग, नई दिल्ली-110002

कर्मचारी राज्य बीमा निगम मुख्यालय द्वारा दिनांक 14.09.2011 को विष्णु दिगंबर मार्ग स्थित हिंदी भवन में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. रमेश मेहता, प्रो., दिल्ली विश्वविद्यालय के अतिरिक्त डॉ. सी.एस. केदार महानिदेशक, श्री बी.के. साहू, बीमा आयुक्त, श्री ए.के. सिंह मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री टी.के. भट्टाचार्य आयुक्त (का. एवं प्रशा.) और डॉ. पन्ना प्रसाद, संयुक्त निदेशक (रा.भा.) मंच पर विराजमान थे। सर्वप्रथम मंचस्थ अधिकारियों द्वारा पंचदीप प्रज्जवलित किया गया। श्री श्याम सुंदर कथूरिया, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने वर्ष 2010-11 की हिंदी प्रगति की आख्या प्रस्तुत करते हुए 'मुख्यालय की राजभाषा शाखा बीमा आयुक्त के निर्देशन में मुख्यालय के साथ-साथ भारत के विभिन्न प्रदेशों में विस्तीर्ण निगम कार्यालयों मे हिंदी के विकास के लिए प्रयासरत है। इस संबंध में मुख्यालय के अधिकारियों द्वारा समय-समय पर दिया गया सहयोग प्रशंसनीय है। डॉ. पन्ना प्रसाद, संयुक्त निदेशक (रा. भा.) ने हिंदी दिवस के ऐतिहासिक महत्व को रेखांकित करते हुए कार्यालय में सरल हिंदी के प्रयोग पर बल दिया।

मुख्य अतिथि, महानिदेशक एवं मंचस्थ अधिकारियों द्वारा विभागीय हिंदी पत्रिका ''पंचदीप भारती'' के दिवतीय अंक का विमोचन किया गया। महानिदेशक मज़ोदय ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए अपने रूस प्रवास के दौरान रूसी भाषा न जानने के कारण आई परेशानियों के अनुभव सुनाए। उन्होंने कहा, ''भाषा से हमारा संबंध मजबूत होता है, इसलिए आइ.पी. से आप उनकी भाषा में बात करें। हिंदी में बात कर हम उनके नजदीक जा सकते हैं।''

बीमा आयुक्त ने अपने संबोधन में कहा कि यह पहली बार हुआ है कि मुख्यालय की ओर से विभिन्न समाचार पत्रों में हिंदी दिवस का शुभकामना संदेश प्रकाशित हुआ है। उन्होंने कार्यालयी व्यवहार में बोलचाल के सरल शब्दों का अपनाने का सुझाव दिया।

दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय-1, 10वां तल, हंसालय बिल्डिग, 15 बाराखंबा रोड, नई दिल्ली-110001

दिनांक 14-09-2011 को दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड के नई दिल्ली क्षेत्रीय कार्यालय-1 द्वारा हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उपस्थित कार्मिक वृन्द को क्षेत्रीय कार्यालय-1 के प्रभारी उप महाप्रबंधक श्री सी.एस. टण्डन ने संबोधित किया। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने संविधान में उल्लिखित सभी राष्ट्रीय भाषाओं में हिंदी को मुख्य राष्ट्र-भाषा बताया। उनके अनुसार हिंदी दिवस को 14 सितंबर, 2011 को मनाने और याद करने के साथ-साथ पूरे वर्ष के शेष दिनों में भी हिंदी को यथोचित महत्व दिया जाना चाहिए। श्री टण्डन के अनुसार हमें बिना औपचारिकता मे बंधे प्रतिदिन न्यूनतम एक पत्र हिंदी में लिखना चाहिए। उन्होंने सभी कार्मिकों से अपना अधिकतम कार्यालयी कार्य हिंदी मे करने का अनुरोध किया। श्री टण्डन ने यह संकेत किया कि चूंकि हमारी कंपनी सेवा-दात्री कंपनी है और हमारा कार्यालय ''क'' क्षेत्र के अन्तर्गत आता है इसलिए अपने संभावित ग्राहक से सरल, सहज एवं सुगम संप्रेषण के लिए हिंदी भाषा से उत्तम कोई माध्यम नहीं हो सकता। उन्होंने हिंदी की विश्व-स्तरीय उपस्थिति का जिक्र करते हुए हिंदी को एक दूसरे के साथ जोड़ने वाली महत्वपूर्ण कड़ी कहा।

श्री वी. के. गर्ग, क्षेत्रीय प्रबंधक ने श्री प्रणव मुखर्जी, माननीय वित्त मंत्री, भारत सरकार द्वारा जारी किए गए हिंदी संदेश का वाचन किया। उन्होंने हिंदी की वैश्विक महत्ता का उल्लेख करते हुए यह बताया कि सभी बहु-राष्ट्रीय कंपनियां अपने व्यावसायिक हितों के पोषण के लिए अपने ग्राहकों से जुड़ने हेतु हिंदी भाषा को माध्यम बना रही हैं। उन्होंने बताया कि टी.वी. के माध्यम से व्यवसाय के साथ भाषा को जोड़ते हुए आजकल सारे टी.वी. प्रोग्राम अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में भी दिखाए जा रहे हैं। उन्होंने सभी कार्मिकों से वर्ष भर अपना कार्यालयी कार्य हिंदी में करने के लिए श्री एन. एन. माथुर, क्षेत्रीय प्रबंधक ने डा. आर.के. कौल द्वारा जारी किए गए हिंदी संदेश का वाचन किया। सभा को श्री एन. एन. माथुर, क्षेत्रीय प्रबंधक ने संबोधित करते हुए कहा कि

जिस तरह से बोलचाल की भाषा में हम हिंदी का प्रयोग करते हैं, उसी तरह से सरल भाषा में हिंदी में लिखते हुए काम हो सकता है । शुरू में कुछ दिक्कत आएगी लेकिन धीरे-धीरे सब सहज हो जाएगा । हम सब हिंदी प्रदेश से हैं । उन्होंने राजभाषा हिंदी के प्रयोग के संबंध में सभी कार्मिकों से यह अनुरोध किया कि वे हिंदी पखवाड़े के दिनों के दौरान अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करें । उन्होंने यह इच्छा व्यक्त की कि क्षेत्रीय कार्यालय के साथ-साथ मंडलीय एवं शाखा कार्यालयों में भी शेष कम्प्यूटरों पर हिंदी सॉफ्टवेयर को लोड किया जाए ।

तत्पश्चात सुश्री रीटा सिंह, क्षेत्रीय प्रबंधक ने श्री पी चिदंबरम, माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार द्वारा जारी किए गए हिंदी संदेश का वाचन किया । सुश्री रीटा सिंह ने हिंदी भाषा का उल्लेख करते हुए संप्रेषण के उद्देश्य से सरलता और सहजता पर बल दिया । उन्होंने कहा कि हम जिस स्तर पर कार्यरत हैं, वहीं से हिंदी में काम करना शुरू कर दें । हमें रोजमर्रा के कार्यालयी कार्यों में हिंदी के सरल और सहज शब्दों का प्रयोग करना चाहिए और दूसरी भाषाओं के शब्दों को भी सहज भाव से अंगीकार करना चाहिए ।

इस सभा में राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री आर एस खींची, ने संबोधित करते हुए यह व्यक्त किया कि चूंकि हमारा क्षेत्रीय कार्यालय ''क'' क्षेत्र के अंतर्गत आता है, इसलिए राजभाषा हिंदी संबंधी सभी अपेक्षाओं का पूर्ण रूप से अनुपालन होना चाहिए । इसके साथ-साथ उन्होंने सभी कार्मिकों से हिंदी पखवाड़े के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय के राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित की जाने वाली हिंदी प्रतियोगिताओं में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेने का आहवान किया ।

केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी, रांची

केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रांची में दिनांक 14-09-2011 से 27-09-2011 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । इस दौरान अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

दिनांक 14-09-2011 को हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन एवं हिंदी दिवस का आयोजन किया गया । इस अवसर पर संस्थान के सभी वैज्ञानिक/अधिकारी एवं कर्मचारिगण उपस्थित थे । डॉ. बी. सी. प्रसाद, निदेशक ने मंगलदीप प्रज्जवलित कर हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम का उदघाटन किया । कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ. बी. सी. प्रसाद, निदेशक ने कहा कि भारत विश्व का सबसे बड़ा प्रजातांत्रिक देश है । इस विशाल देश में कई भाषाएं बोली जाती हैं । सांस्कृतिक रूप से भी इतनी विविधता कम देशों में पाई जाती है । विविधता ही हमारी शक्ति एवं पहचान है । हिंदी राष्ट्र की एक ऐसी भाषा है जो पूरे राष्ट्र को जोड़कर रखती है । स्वतंत्रता काल में हिंदी की भूमिका का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा बेमिसाल है । हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी भाषा की सरलता एवं सुग्राह्यता तथा संपर्क भाषा के रूप में देश में इसकी भूमिका को देखते हुए से केंद्र सरकार की राजभाषा का दर्जा दिया । उन्होंने अन्य संवैधानिक प्रावधानों की तरह राजभाषा संबंधी प्रावधानों का भी पालन सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से करने का आह्वान किया उन्होंने हर्ष प्रकट किया कि एक वैज्ञानिक संस्थान होने के बावजूद केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रांची में प्रशासनिक कार्यों के अलावा तकनीकी कार्यों में भी हिंदी का बखूबी प्रयोग किया जाता रहा है ।

नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण, नर्मदा सदन, सैक्टर-बी, विजय नगर, इंदौर-452010

नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण में 14 सितंबर से 28 सितंबर, 2011 के दौरान हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया । हिंदी दिवस को आयोजित किए समारोह के दौरान न. नि. प्रा. में हिंदी में किए जा रहे कार्यों की संक्षिप्त जानकारी दी गई ।

14 सितंबर से 28 सितंबर, 2011 के दौरान आयोजित होने वाली हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता, प्रश्न मंच, काव्य पाठ, हिंदी निबंध, अहिंदी भाषियों हेतु प्रतियोगिता, वाद-विवाद, तात्कालिक विषयानुरूप हिंदी भाषण एवं अनुभागीय राजभाषा कार्यान्वयन अभियान प्रतियोगिताओं को आयोजित किये । हिंदी पखवाड़े का पुरस्कार विवरण समारोह 29 सितंबर, 2011 को आयोजित किया गया । इस अवसर पर न. नि. प्रा. के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद थे । हिंदी पखवाड़े की विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी हुए विजेताओं को नगद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र न. नि. प्रा. के सदस्य (विद्युत), सचिव एवं मुख्य अभियन्ता के कर-कमलों

द्वारा वितरित किए गए । न. नि. प्रा. द्वारा चलाई गई योजनान्तर्गत सितंबर 2010 से सितंबर 2011 के दौरान अधिकाधिक शासकीय काम-काज राजभाषा में किए जाने पर चल वैजयन्ती शील्ड न. नि. प्रा. के पुनर्वास विंग को सदस्य (विद्युत), न. नि. प्रा. द्वारा प्रदान की गई ।

लोक कार्यक्रम और ग्रामीण प्रौद्योगिकी विकास परिषद्, भारत पर्यावास केंद्र, जोन-5ए, कोर सी, द्वितीय तल, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003

14 सितंबर, 2011 को हिंदी दिवस के अवसर पर कपार्ट की महानिदेशक महोदया ने अपना हिंदी दिवस का संदेश पढ़ते हुए कहा कि हिंदी इतनी सरल और पारदर्शी भाषा है कि इसे आसानी से सीखा जा सकता है । कपार्ट के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से भी यह अपेक्षा की कि वह 2011-12 में कार्यालय कार्यों में राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें तथा निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करें । कपार्ट को राजभाषा हिंदी के उपयोग की दृष्टि से भी अग्रगामी संस्था के रूप में जाना जाए, ऐसा हम सबका लक्ष्य होना चाहिए ।

हिंदी दिवस के दौरान उप महानिदेशक ने कहा कि हिंदी भाषा ने अपनी जगह खुद बना ली है, हिंदी देश को जोड़ने वाली भाषा के रूप में आई है । देश भर में हिंदी बोलने वालों की संख्या सबसे अधिक है । हिंदी दिवस समारोह में उप महानिदेशक महोदय ने माननीय ग्रामीण विकास मंत्री जी का हिंदी दिवस का संदेश पढ़ा ।

हिंदी दिवस के कार्यक्रम का संचालन डॉ. ओम प्रकाश ने किया । हिंदी दिवस के दौरान हिंदी पखवाड़े के दौरान सरकारी काम-काज में हिंदीं/टिप्पण/आलेखन के लिये नकद पुरस्कार का आयोजन किया गया है ।

नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन, शहरी विकास मंत्रालय, ई ब्लाक, विकास भवन, आई.पी. एस्टेट, नई दिल्ली

नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन, शहरी विकास मंत्रालय में 01 सितंबर, 2011 से 30 सितंबर, 2011 तक हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन मास का आयोजन किया गया । इस दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई व 43 अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पुरस्कार के लिए चुना गया । इसमें अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पुरस्कृत करने के लिए 17 अक्तूबर, 2011 को आजाद भवन सभागार में पुरस्कार वितरण समारोह एवं कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया । इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री अरुण गोयल जी, अध्यक्ष (टी.सी.पी.ओ.) एवं संयुक्त सचिव (शहरी विकास), शहरी विकास मंत्रालय थे ।

मुख्य अतिथि महोदय ने सभी पुरस्कार विजेताओं को प्रशस्तिपत्र एवं नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया । पुरस्कार वितरण के पश्चात् मुख्य अतिथि महोदय ने अपने संबोधन में सभी पुरस्कार विजेताओं को धन्यवाद दिया और उन्हें अपना अधिक से अधिक काम हिंदी में करने को प्रेरित किया । साथ ही उन्होंने सरकारी काम में सरल हिंदी का प्रयोग करने को कहा । उन्होंने हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन मास (सितंबर, 2011) के समापन समारोह के अवसर पर नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन द्वारा कवि सम्मेलन का आयोजन करने पर अपनी खुशी जाहिर की ।

कार्यालय क्षेत्रीय आयुक्त, कोयला खान भविष्य निधि, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

दिनांक 14-09-2011 से 21-09-2011 तक हिंदी सप्ताह पूरे उत्साह के साथ मनाया गया जिसमें राजभाषा नीति और राजभाषा संबंधित नियमों के कार्यान्वयन में आने वाली कठिनाइयों पर विचार एवं हिंदी कार्य शाला का आयोजन किया गया तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया । आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में इस कार्यालय के अधिकांश कर्मचारियों द्वारा भाग लिया गया । प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया । अन्य प्रतियोगियों को प्रोत्साहन हेतु उन्हें सांत्वना पुरस्कार दिया गया ।

दिनांक 21-09-2011 को हिंदी सप्ताह के "समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह" समारोह की अध्यक्षता करते हुए श्री आर.के. सिन्हा, सहायक आयुक्त-द्वितीय (प्रभारी) ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कार्यालय के कर्मचारियों को हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में सहभागी होकर हिंदी के प्रति अपनी रूचि एवं उत्साह प्रदर्शित करने के लिए धन्यवाद दिया एवं कार्यालय का अधिकाधिक कार्य सहज एवं सुगम तरीके से हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया । उन्होंने कहा की हमारे कार्यालय के कार्य का संबंध

कोयला कर्मियों से है जिनकी मुख्य भाषा हिंदी है । इस हेतु भी हिंदी में ही पत्र व्यवहार किया जाना आवश्यक है ताकि अपनी बात उन तक आसानी से पहुंचाया जा सके ।

सीमा सुरक्षा बल महानिदेशालय (प्रशासन निदेशालय-राजभाषा अनुभाग) ब्लाक-10, केंद्रीय कार्यालय परिसर, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003

सीमा सुरक्षा बल महानिदेशालय में दिनांक 14 सितंबर, 2011 को 11.00 बजे हिंदी दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया गया । इस अवसर पर हिंदी पखवाड़े (01 सितंबर से 15 सितंबर तक) के दौरान आयोजित हिंदी निबंध, हिंदी प्रश्नोत्तरी, हिंदी नोटिंग व वाद विवाह प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर आए कार्मिकों को श्री रमन श्रीवास्तवा, महानिदेशक, सीमा सुरक्षा बल ने नगद पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया । श्री अशोक कुमार महानिरीक्षक (प्रशासन) ने सीमा सुरक्षा बल में किए जा रहे हिंदी के कार्यों के बारे में विस्तृत जानकारी दी । इस अवसर पर वर्ष 2010-11 के दौरान हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने पर सीमान्त मुख्यालय शिलांग सी एस डब्ल्यू टी, इन्दौर और वायु खण्ड को राजभाषा शील्ड प्रदान की गई । हिंदी में डिक्टेशन देने व मूल रूप से हिंदी में कार्य करने की प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत क्रमशः दो अधिकारियों व 10 कार्मिकों को भी नगद पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए ।

खान सुरक्षा महानिदेशालय ग्वालियर क्षेत्र, कार्यालय पता : मकान नं. 23ए, नेहरू कॉलोनी, ठाठीपुर, ग्वालियर (म.प्र.)

दिनांक 01-09-2011 से 15-09-2011 तक हिंदी पखवाड़ा पूर्ण उत्साह के साथ मनाया गया । पखवाड़े के दौरान सभी कार्य हिंदी में करने की अपील जारी की गई तथा हिंदी में कार्य करने में आने वाली कठिनाईयों पर विचार किया गया । वैसे तो ग्वालियर क्षेत्रीय कार्यालय में अधिकांश कार्य हिंदी में किए जाते हैं फिर भी इस पखवाड़े के दौरान सभी टिप्पणी, प्रारूपण, फाईलों पर नाम, विषय, प्राप्त पत्रों का उत्तर तथा अन्य लेखन कार्य हिंदी में किए गए । ऐसे वैज्ञानिक एवं तकनीकी पत्र जिनका हिंदी रूपांतरण तत्क्षण संभव नहीं है उसका अग्रसण पत्र हिंदी में भेजा गया तथा भविष्य में भी सभी कार्य हिंदी में करने का संकल्प लिया गया ।

हिंदी पखवाड़े में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय के सभी कर्मचारियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया । प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया ।

नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, ब्लाक-14, केंद्रीय कार्यालय परिसर, लोदी रोड, नई दिल्ली

14-28 सितंबर, 2011 के दौरान हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । इस पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे हिंदी निबंध (कर्मचारी वर्ग), हिंदी नोटिंग और ड्राफ्टिंग, प्रश्नोत्तरी, हिंदी निबंध (अधिकारी वर्ग), हिंदी आशुलिपि, हिंदी टंकण, भाषण एवं कविता पाठ आदि का आयोजन किया गया । हिंदी पखवाड़े के समापन पर पुरस्कार वितरण समारोह बड़ी धूमधाम से आयोजित किया गया और विजेताओं को मंत्रालय की आर्थिक सलाहकार सुश्री सुनन्दा शर्मा के कर-कमलों से नकद पुरस्कार तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए ।

सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार सूचना भवन, सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003

फिल्म प्रभाग, नई दिल्ली कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन दिनांक 14 सितंबर, 2011 से 28 सितंबर, 2011 तक किया गया । इस अवधि में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में कामकाज करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अनेक हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । श्री सुन्दर सिंह, उप महानिदेशक (प्रभारी) की अध्यक्षता में पखवाड़ा के मुख्य समारोह का आयोजन दिनांक 28 सितंबर, 2011 को किया गया ।

भारत-तिब्बत सीमा पुलिस बल महानिदेशालय खण्ड-2, केंद्रीय कार्यालय परिसर, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003

महानिदेशालय में ''हिंदी पखवाड़ा'' का शुभारंभ 14 सितंबर, 2011 को हुआ जिसमें बल प्रमुख महानिदेशक

श्री रणजीत सिन्हा, भा.पु.से. की ओर से एक अपील जारी की गई । अपील में उन्होंने आज के युग में सूचना-प्रौद्योगिकी के विकास, कंप्यूटरों पर हिंदी के बढ़ते प्रयोग, हिंदी की भूमिका, योगदान तथा 'हिंदी दिवस' के बारे में प्रकाश डाला । उन्होंने भातिसी पुलिस में हिंदी के बढ़ते प्रयोग की ओर संकेत कर इस क्षेत्र में सदैव आगे रहने का आह्वान किया । उन्होंने महानिदेशालय में 14 से 28 सितंबर तक 'हिंदी पखवाड़ा' मनाएं जाने एवं अपने शासकीय कार्यों में हिंदी का अधिकतम प्रयोग करने का आग्रह किया । ''हिंदी पखवाड़े'' के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं, प्रोत्साहन योजनाओं में पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं और विभागीय राजभाषा चलशील्ड में विजेताओं को सम्मानित करने के लिए दिनांक 28 सितंबर, 2011 को ''पुरस्कार वितरण समारोह'' आयोजित किया गया ।

औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग, संयुक्त निदेशक (रा.भा.) कार्यालय उद्योग भवन, नई दिल्ली

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के औद्योगिक नीति और संवर्धन विभाग की ओर से 2 से 16 सितंबर, 2011 तक 'हिंदी पखवाड़ा' आयोजित किया गया जिसके अंतर्गत हिंदी-निबंध-लेखन, स्वरचित-कविता पाठ, वाद-विवाद, हिंदी टंकण/आशुलिपि, वरिष्ठ अधिकारियों (समूह क) के सामान्य हिंदी ज्ञान की प्रतियोगिता तथा प्रश्न मंच प्रतियोगिताएं आयोजित की गई । इन प्रतियोगिताओं में अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया ।

28 सितंबर, 2011 को माननीय वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया की अध्यक्षता में आयोजित 'पुरस्कार वितरण समारोह' में मंत्री महोदय के कर-कमलों से उपर्युक्त प्रतियोगिताओं के 56 प्रतियोगियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय व प्रोत्साहन पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया । इस अवसर पर मंत्री महोदय द्वारा विभाग की पत्रिका 'सुगंधि' 2011-(द्वितीय अंक) का लोकार्पण भी किया गया ।

समारोह के आरंभ में श्रीमती शुभ्रा सिंह, संयुक्त सचिव एवं राजभाषा प्रभारी ने माननीय मंत्री जी का पुष्पाभिनंदन किया । समारोह में श्री तल्लीन कुमार, संयुक्त सचिव तथा श्री चैतन्य प्रसाद, संयुक्त सचिव भी उपस्थित थे ।

इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय संबोधन में माननीय मंत्री महोदय ने कहा कि ''हिंदी हमारी राजभाषा है और हिंदी में अधिक से अधिक काम करेंगे तो यह हमारी भावी पीढियों के लिए भी एक महत्वपूर्ण योगदान होगा ।'' उन्होंने यह भी कहा कि ''अगर मेरे पास फाइलें और पत्र आदि हिंदी में अधिक से अधिक भेजे जाएं तो हिंदी में काम करने में मुझे खुशी होगी ।'' इस अवसर पर बड़ी संख्या में अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे ।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग, टेक्नोलॉजी भवन, नई दिल्ली-16

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग एवं वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान विभाग में संयुक्त रूप से हिंदी पखवाड़े का अयोजन किया गया । इस निमित्त गठित हिंदी पखवाड़ा आयोजन समिति के तत्वाधान में 14 सितंबर से 28 सितंबर, 2011 तक हिंदी पखवाड़ा आयोजित करने का निर्णय लिया गया एवं विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई ।

मंत्रालय में 14 सितंबर से 28 सितंबर, 2011 तक आयोजित हिंदी पखवाड़े के दौरान कुल मिलाकर 10 प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थी ।

28 सितंबर, 2011 को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में सभी विजेताओं को नकद पुरस्कारों से सम्मानित किया गया । इस अवसर पर क्विज प्रतियोगिता में नकद पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों के अलावा 72 विजेताओं को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गए ।

संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति कोयला खान भविष्य निधि कार्यालय, रांची

हिंदी दिवस 2011 के अवसर पर राजभाषा पखवाड़ा समारोह कोयला खान भविष्य निधि के रांची स्थित तीनों क्षेत्रीय कार्यालय में संयुक्त रूप से 9 से 23 सितंबर, 2011 तक मनाया गया । पखवाड़ा के पूरी अवधि में कार्यालय के अधिकतर कार्य राजभाषा हिंदी में ही संपन्न किए गए । कार्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों के लिए पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजन की गई, जिसमें तीनों क्षेत्रीय कार्यालयों के कर्मचारियों ने बड़े उत्साह से हिस्सा लिया ।

समापन समारोह में श्री पी.एल.के. रेड्डी, क्षेत्रीय आयुक्त, क्षेत्र-एक ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस के आयोजन का मुख्य उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कहा कि जिस प्रकार अहिंदी भाषा बड़ी गंभीरतापूर्वक सीखते हैं उसी तरह हिंदी भाषियों को भी अन्य भाषाएं अपनानी चाहिए तभी हम हिंदी के विकास में अपने योगदान सार्थक कर पायेंगे ।

श्री ए.के. सिन्हा, क्षेत्र-एक, ने अपने अध्यक्षीय भावपूर्ण भाषण में संबोधित करते हुए कहा कि विश्व के 35 देशों में स्थित 150 विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा की पढ़ाई हो रही है । जार्ज बुश ने माना था कि यदि अमेरिकन भारतीय भाषा हिंदी का समुचित ज्ञान नहीं रखते तो वैश्वीकरण की होड़ में पिछड़े भी हो सकते हैं ।

मुख्य पोस्टमास्टर जनरल कार्यालय, हरियाणा सर्किल, अम्बाला-133001

दिनांक 14 सितंबर को हिंदी दिवस और दिनांक 14 सितंबर से 28 सितंबर, 2011 तक हिंदी पखवाड़ा विधिवत मनाया गया । अधिकारियों व कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा इसके प्रति जागरूकता लाने के मद्देनजर हिंदी पखवाड़े के दौरान दिनांक 14 सितंबर से 28 सितंबर, 2011 तक कार्यक्रमों के दौरान बहुत सारी प्रतियोगिताएं, जैसे निबंध लेखन, श्रुतलेखन, टिप्पण एवं आलेखन, कविता-पाठ, आशु भाषण, प्रश्नोत्तरी (क्विज़) तथा गायन प्रतियोगिताएं, आयोजित की गई जिसमें कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया ।

दिनांक 30 सितंबर, 2011 को ''पुरस्कार वितरण एवं हिंदी पखवाड़ा, 2011 का समापन समारोह'' का आयोजन किया गया जिसमें प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में अध्यक्षा सुश्री इन्दु गुप्ता, मुख्य पोस्टमास्टर जनरल, हरियाणा सर्किल, अम्बाला ने सभी विजयी प्रतिभागियों को हार्दिक बधाई दी । राजभाषा हिंदी पर चर्चा करते हुए उन्होंने आग कहा कि हिंदी एक सरल, व सुबोध तथा एक अति वैज्ञानिक भाषा है । इसी वैज्ञानिकता के कारण हिंदी में कामकाज करना बहुत आसान है । उन्होंने उपस्थित सभी अधिकारियों व कर्मचारियों का आह्वान किया और सभी से आग्रह किया कि वे अपना सभी संपूर्ण कार्यालयीन कामकाज हिंदी में करते हुए राजभाषा हिंदी में संबंधित संवैधानिक दायित्वों का पालन करें ।

भारतीय खान ब्यूरो, क्षेत्रीय खान नियंत्रक कार्यालय, 318/बी, रोड नं. 3, अशोक नगर, रांची

रांची क्षेत्रीय कार्यालय में मुख्यालय से प्राप्त निर्देशानुसार दिनांक 1-9-2011 से दिनांक 15-9-2011 तक हिंदी पखवाड़ा का सफलतापूर्वक आयोजन श्री आर. पुरोहित, क्षेत्रीय खान नियंत्रक के दिशानिर्देश में किया गया । दिनांक 1-9-2011 को हिंदी पखवाड़ा का शुभारंभ करते हुए क्षेत्रीय खान नियंत्रक श्री आर. पुरोहित अपने उद्घाटन भाषण में सभी कार्मिकों से उत्साहपूर्वक हिंदी पखवाड़ा में भाग लेने की अपील की तथा हिंदी कार्यों में निरंतरता बनाए रखने के बात बताई ताकि राजभाषा हिंदी संबंधी केंद्रीय सरकार की उद्देश्य पूरी हो सकें । उन्होंने कार्मिकों को पखवाड़ा के दौरान राजभाषा नीति के पालन के साथ-साथ सभी कार्यालीय कार्य हिंदी में करने का आह्वान किया ।

पखवाड़ा के दौरान अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । जिनमें हिंदी निबंध, वाद-विवाद, श्रुतिलेख, टिप्पण-प्रारूपण, कविता पाठ आदि प्रमुख हैं । क्षेत्रीय खान नियंत्रक के दिशानिर्देशन में सभी प्रतियोगताओं एवं कार्यक्रमों के सफल संचालन हेतु अलग-अलग संचालक बनाए गए । अध्यक्षीय संबोधन में क्षेत्रीय खान नियंत्रक महोदय ने हिंदी पखवाड़ा को और प्रभावी तथा रोचक बनाने पर जोर दिए जिसका लाभ कार्यालय में दिखाई पड़े । उन्होंने हिंदी पखवाड़ा के सफल क्रियान्वयन पर सहयोग के लिए सभी कार्मिकों को बधाई दी ।

कार्यालय पोस्टमास्टर जनरल इन्दौर क्षेत्र, इन्दौर-452001

14-09-2011 से 28-09-2011 तक हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । दिनांक 14 सितंबर 2011 को हिंदी दिवस मनाया गया ।

कार्यालय के लगभग सभी कर्मचारियों ने प्रतियोगिताओं में बड़े जोश और उत्साह के साथ भाग लिया । प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता सर्वाधिक प्रतिसाद मिला । इसमें कुल 31 कर्मचारियों ने भाग लिया । विभिन्न

प्रतियोगिताओं के 14 विजेताओं को माननीय पोस्टमास्टर जनरल श्री एस. आर. मीना ने नकद पुरस्कार व प्रमाण-पत्र से सम्मानित किया ।

माननीय पोस्टमास्टर जनरल श्री एस. आर. मीना ने अपने उद्बोधन में विजेताओं को अपनी बधाई दी तथा विभाग में नए भर्ती हुए कर्मचारियों को उन्होंने विशेष रूप से अपनी बधाई दी और कहा, कि वे अगली बार प्रतियोगिता में और तैयारी करके आएंगे । साथ ही हिंदी पखवाड़ा के सफल आयोजन हेतु सभी को बधाई दी । उन्होंने आगे कहा कि भारत एक विशाल देश है । यहां विभिन्न भाषा और बोलियां बोली जाती है । उन्होंने कहा कि हिंदी पखवाड़ा के दौरान 'ग' क्षेत्र में विभिन्न प्रतियोगिताओं में कर्मचारी बढ़ चढ़कर भाग लेते हैं । इसके अलावा हिंदी प्रोत्साहन योजना में भी दक्षिण भारत में कर्मचारी उत्साह से भाग लेते हैं, और हिंदी में किए गए कामकाज का विधिवत् रेकॉर्ड भी रखते हैं । हमारे कार्यालय में भी और अधिक कर्मचारियों द्वारा यह रेकॉर्ड रखा जाना चाहिए । संसदीय राजभाषा समिति अपने निरीक्षण में इसका आकलन जरूर करती है । उन्होंने नए भर्ती हुए कर्मचारियों से कहा कि वे अच्छी टिप्पणी फाइलों में लिखें ताकि फाइल में कोई कमी ना रहें । उन्होंने आगे कहा कि प्रत्येक भाषा की अपनी महत्ता होती है । आजकल लोग नौकरी पाने के लिए कई विदेशी भाषाएं भी सीख रहे हैं ।

कर्मचारी चयन आयोग, ब्लाक 12, केंद्रीय कार्यालय परिसर लोदी रोड, नई दिल्ली

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने एवं कर्मचारियों में इसके प्रति रुचि उत्पन्न करने के उद्देश्य से कर्मचारी चयन आयोग (मुख्यालय) में दिनांक 14 से 28 सितंबर, 2011 के दौरान हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया ।

हिंदी पखवाड़े का मुख्य समारोह दिनांक 28 सितंबर, 2011 को कर्मचारी चयन आयोग (मुख्यालय) के चतुर्थ तल पर स्थित सम्मेलन कक्ष में अपराह्न 4.00 बजे आयोजित किया गया । इस अवसर पर आयोग (मुख्यालय) के सभी उच्च अधिकारी भी मौजूद थे । हिंदी पखवाड़े के सभी विजेताओं को पुरस्कार कर्मचारी चयन आयोग के अध्यक्ष श्री एन. के. रघुपति के कर कमलों से दिए गए । इसके अतिरिक्त सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी में काम करने की योजना के अंतर्गत विजेताओं को भी नकद पुरस्कार प्रदान किए गए ।

आकाशवाणी : इंदौर

केंद्र में हिंदी पखवाड़े का आयोजन 1 से 14 सितंबर तक किया गया । पखवाड़े के दौरान गत वर्ष की भाँति एक राजभाषा (पत्रिका) प्रदर्शनी भी आयोजित की गई । इस प्रदर्शनी में आकाशवाणी और दूरदर्शन केंद्रों के अलावा अन्य केंद्रीय कार्यालयों, बैंकों, उपक्रमों आदि की गृह पत्रिकाएँ अवलोकनार्थ रखी गई थीं । 14 सितंबर के दिन 'हिंदी दिवस' के साथ-साथ हिंदी पखवाड़ा समापन तथा पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न हुआ ।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए श्री जोगिन्दरसिंह जी ने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हमारे देश के राष्ट्राध्यक्ष अपने विचार हिंदी में व्यक्त नहीं करते, जबकि दूसरे देशों के प्रतिनिधि यहाँ आकर उनकी भाषा में विचार-विमर्श करते हैं । उन्होंने कहा कि कम से कम एक भाषा तो देश में संपर्क भाषा के रूप में अपनायी जानी चाहिए और वह भाषा हिंदी की हो सकती है ।

कार्यालयाध्यक्ष श्री सुधीर सोधिया, उप महानिदेशक (अभियांत्रिकी) ने अपने उध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि आकाशवाणी केंद्र में इस पखवाड़े के दौरान अधिकांश अधिकारियों व कर्मचारियों ने काफी उत्साह से विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेकर हिंदी के प्रति अपनी रुचि और लगन को प्रदर्शित किया है, जोकि सराहनीय है । उन्होंने कहा कि इसे वर्ष भर बनाएं रखना चाहिए और सदैव अपना कामकाज राजभाषा हिंदी में ही करना चाहिए ।

आकाशवाणी : जबलपुर

आकाशवाणी जबलपुर में दिनाक 14 सितंबर 2011 से 29 सितंबर 2011 तक हिंदी पखवाड़ा किया गया । आकाशवाणी जबलपुर में दिनांक 14 सितंबर, 2011 को हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा का विधिवत् उद्घाटन किया गया । डॉ स्मृति शुक्ल, प्रोफेसर हिंदी विभाग शासकीय मानकुंवर बाई कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थी ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ स्मृति शुक्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि हिंदी आज विश्व के अनेक

देशों में फैली हुई है जिसका कारण उसका सरल सहज होना है। हिंदी हमें एकसूत्र में बांधती है और कोई भी जनआंदोलन हिंदी के बिना नहीं हो सकता। आपने आगे कहा कि हिंदी के बिना नहीं हो सकता। आपने आग कहा हिंदी राष्ट्र की भाषा है और प्रेम बांटना और लेना भी जानती है।

उपमहानिदेशक (अभि.), श्री राकेश कुमार नेमा ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह हिंदी की ताकत का ही प्रमाण है अंतरराष्ट्रीय कंपनियां भी अपने उत्पादों के विज्ञापन के लिए हिंदी पर निर्भर हैं और चोटी के समाचार पत्रों में आज हिंदी के समाचार पत्र अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। आपने आगे कहा कि कानून, इंजीनियरिंग तथा चिकित्सा की पढ़ाई में हिंदी को लाया जाना आवश्यक है।

आकाशवाणी, लखनऊ

आकाशवाणी, लखनऊ में दिनांक 14-09-2011 से 30-09-2011 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान विभिन्न हिंदी कार्यक्रम यथा हिंदी प्रतियोगिताएँ, हिंदी कार्यशाला, हिंदी पखवाड़ा-उद्घाटन एवं हिंदी पखवाड़ा-समापन एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

आकाशवाणी, लखनऊ के सभाकक्ष में दिनांक 14-09-2011 को पूर्वाह्न 11.30 बजे वरिष्ठ साहित्यकार एवं मुख्य अतिथि श्री शंभुनाथ, आई.ए.एस. (से.नि.) ने दीप प्रज्जवलित कर हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़े का पारंपरिक उद्घाटन किया। उन्होंने इस सअवसर पर सभाकक्ष में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के चित्र का अनावरण और गृह पत्रिका 'अवधवाणी' के 16वें अंक का विमोचन किया।

प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में कहा कि हिंदी दिवस उत्सव दिवस है। मां, मातृभूमि और मातृभाषा का अलग ही विशेष महत्व है। हिंदी हमारी माँ है। उन्होंने आगे कहा कि हिंदी एक प्रगतिशील भाषा है, वह देश देशान्तर में बोली जाती है। आकाशवाणी ने हिंदी को बढ़ाने में महत्वपूर्ण काम किया है।

डॉ. कृष्णनारायण पाण्डेय, पूर्व संयुक्त निदेशक (राजभाषा) ने 'राजभाषा हिंदी और उसका प्रगामी प्रयोग'' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। हिंदी अधिकारी ने हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं/कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया।

भारतीय स्टेट बैंक
राजभाषा अनुभाग, प्रशासनिक कार्यालय, कोर्ट कम्पाउण्ड, राँची-834001

प्रशासनिक कार्यालय, राँची में राजभाषा मास का सफल आयोजन किया गया। इस उपलक्ष्य में सितंबर माह के दौरान कार्यालय में 7 हिंदी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। इनमें वरिष्ठ अधिकारियों के लिए 1, अन्य अधिकारियों के लिए 1, सहायकों के लिए 1, संदेशवाहकों के लिए1, अंचल स्तरीय 1 एवं सभी स्टाफ सदस्यों के लिए 2 प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। इन सभी प्रतियोगिताओं में कुल 137 सहभागियों ने भाग लिया।

राजभाषा मास के दौरान कार्यालय में कंप्यूटर पर यूनिकोड सक्रिय करने तथा उसके माध्यम से हिंदी प्रयोग करने के लिए स्टाफ सदस्यों को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया गया।

दिनांक 28 सितंबर, 2011 को प्रशासनिक कार्यालय में राजभाषा पारितोषिक वितरण समारोह का आयोजन किया गया। श्री पंकज वर्मा, उप महाप्रबंधक (परिचालन एवं साख) तथा सहायक महाप्रबंधकों के कर-कमलों से पारितोषिक वितरण संपन्न हुआ। ■

अगर हमें हिंदुस्तान को एक राष्ट्र बनाना है तो राष्ट्रभाषा हिंदी ही हो सकती है।

—महात्मा गांधी

राष्ट्रभाषा का प्रचार करना मैं राष्ट्रीयता का एक अंग मानता हूं।

—डॉ. राजेंद्र प्रसाद

राजभाषा विभाग द्वारा मैसूर में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन व पुरस्कार समारोह

8 सितंबर, 2011 को मैसूर में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों बैंकों, वित्तीय संस्थाओं व नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में उल्लेखनीय प्रगति के लिए राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न हुआ । भारत सरकार के सचिव श्री ए.एन.पी. सिन्हा ने समारोह की अध्यक्षता की । नराकास, मैसूर के अध्यक्ष एवं भारतीय भाषा संस्थान के निदेशक श्री आई.सी. बर्मन, मुख्य अतिथि तथा भारतीय भाषा संस्थान के सर्व कार्यकारी प्रो. आई.सी. बोरकर ने विशिष्ट अतिथि के रूप में भाग लिया । इसके अतिरिक्त दक्षिण व दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र के विभिन्न सरकारी कार्यालयों, उपक्रमों, राष्ट्रीयकृत बैंकों के वरिष्ठ अधिकारीगण व हिंदी अधिकारीगण, सम्मेलन में बेहद उत्साह से सम्मिलित हुए ।

इस अवसर पर उपस्थित तमाम हिंदी प्रेमियों के बीच एक नई चेतना का संचार करते हुए अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री ए.एन.पी. सिन्हा, सचिव, भारत सरकार ने कहा कि राजभाषा हिंदी हमारे राष्ट्र की पहचान है, यह भारत की जनभाषा होने के कारण पूरे देश की संपर्क भाषा भी है जो समग्र राष्ट्र को एकता के सूत्र में जोड़ती है । हिंदी का व्यवहार और प्रयोग एक राष्ट्रीय आवश्यकता है, साथ ही देश की अन्य सभी भाषाओं को भी वैसे ही सबल और सशक्त बनाना है जैसा कि संविधान के अनुच्छेद 351 में निर्दिष्ट किया गया है । संविधान द्वारा संघ सरकार को सौंपे गए उत्तरदायित्व को पूरा करना हम सभी का परम कर्तव्य है । उन्होंने आगे कहा कि राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए राजभाषा विभाग अनेक योजनाएं चलाई जा रही हैं । इसी क्रम में संघ के राजकीय कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग में उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार और राजीव गांधी राष्ट्रीय ज्ञान-विज्ञान, मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार तथा क्षेत्रीय स्तर पर राजभाषा पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं । राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा उनमें काम करने का वातारण बनाने के लिए विभाग द्वारा देश के कोने-कोने में सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है । राजभाषा विभाग सरकारी कार्यालयों आदि में हिंदी का प्रयोग तथा प्रचार-प्रसार बढ़ाने के लिए सक्रिय रूप से प्रयत्नशील है ।

अपने स्वागत भाषण में राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय में संयुक्त सचिव श्री डी. के. पाण्डेय ने कहा कि कंप्यूटर के माध्यम से हिंदी भाषा का प्रशिक्षण तथा कंप्यूटर की सहायता से हिंदी में काम करने के लिए विभाग ने लीला, मंत्र राजभाषा, श्रुतलेखन, राजभाषा वाचांतर राजभाषा साफ्टवेयर बनवाए हैं साथ ही, ई-महाशब्द कोश भी अब उपलब्ध है । तकनीकी दृष्टि से हिंदी अंग्रेजी से पीछे न रहे, इसके लिए राजभाषा विभाग और सूचना प्रौद्योगिकी विभाग निरंतर प्रयत्नशील हैं । उन्होंने आगे कहा कि आज के प्रौद्योगिकी युग में जनसाधारण की भाषा को सामान्य भावों और स्थापित परंपरा की कल्पनाओं के अलावा हमें नये ज्ञान के प्रसार का माध्यम भी बनाना होगा । हिंदी को विज्ञान से जुड़े नए विचारों और वैज्ञानिक शब्दों को ग्रहण करना होगा । हिंदी को विश्व की एक प्रमुख भाषा बनाना है तो इसे आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का माध्यम बनाना होगा । उन्होंने पुरस्कार ग्रहण करने वाले प्रतिभागियों को बधाई देते हुए कहा कि इससे अन्य कार्यालय आदि प्रेरणा लेकर भविष्य में पुरस्कार प्राप्त करने के प्रयास करेंगे और कार्यालयों आदि में हिंदी में काम करने का वातावरण तैयार करेंगे ।

इस अवसर पर भारत सरकार के सचिव श्री ए.एन. पी. सिन्हा ने दक्षिण व दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों में स्थित निम्नलिखित कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए वर्ष 2010-11 के लिए पुरस्कार प्रदान किए गए ।

वर्ष 2010-11 के लिए दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र के लिए क्षेत्रीय पुरस्कार कार्यालय ।

1. कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुवनन्तपुरम — प्रथम
2. राष्ट्रीय कैडेट कोर निदेशालय, केरल और लक्षद्वीप, तिरुवनन्तपुरम — द्वितीय
3. कॉर्डाइट निर्माणी, अरुवनकाडु — तृतीय

उपक्रम

1. बी.पी.सी.एल. कोच्चि रिफाइनरी अम्बलमुगल, कोचिन — प्रथम
2. बी.एस.एन.एल., प्रधान
3. महाप्रबंधक दूरसंचार का कार्यालय, कोचिन — द्वितीय
4. नेशनल टेक्स्टाइल कारपोरेशन लिमिटेड, दक्षिण क्षे.का., कोयंबतूर — तृतीय

बैंक

1. बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, चेन्नै — प्रथम
2. यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय कोचिन — द्वितीय
3. इंडियन ओवरसीज़ बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै — तृतीय

न.रा.का.स.

1. कोचिन (बैंक) — प्रथम
2. चेन्नै (बैंक) — द्वितीय
3. कोचिन (उपक्रम) — तृतीय

वर्ष 2010-11 के लिए दक्षिण क्षेत्र के लिए क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार कार्यालय :

1. रक्षा लेखा नियंत्रक (अनुसंधान एवं विकास) कार्यालय, हैदाराबाद — प्रथम
2. केंद्रीय रेशम प्रौद्योगिक अनुसंधान संस्थान, केंद्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूर — द्वितीय
3. अंतरिक्ष विभाग, सचिवालय, बेंगलूर — तृतीय

उपक्रम

1. पावरग्रिड कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लि., दक्षिण क्षेत्र पारेषण प्रणाली-2, मुख्यालय, बैंगलूर — प्रथम
2. पावरग्रिड कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लि., दक्षिण क्षेत्र पारेषण प्रणाली-1, मुख्यालय, सिकंदराबाद — द्वितीय
3. एन.टी.पी.सी.लि., रामगुण्डम — तृतीय

बैंक

1. यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद — प्रथम
2. सिंडिकेट बैंक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन (नगर), हैदराबाद — द्वितीय
3. सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूर — तृतीय

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

1. भद्रावती-शिमोगा (का.) — प्रथम
2. बेंगलूर (का.) — द्वितीय
3. हैदराबाद (बैंक) — तृतीय

बैंक ऑफ इंडिया
नई दिल्ली अंचल, जीवन भारती, लेवल-5, टावर-1, 124, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली-110001

दिनांक 01 सितंबर, 2010 को आंचलिक कार्यालय के सभाकक्ष में अंचल के उप महाप्रबंधकों एवं सहायक महाप्रबंधकों हेतु 'राजभाषा संगोष्ठी' का आयोजन किया गया, संगोष्ठी का विषय था : 'वित्तीय समावेश-बैंकों में कारोबार बढ़ाने के अवसर या सामाजिक दायित्व'।

उक्त संगोष्ठी की अध्यक्षता महाप्रबंधक एवं आंचलिक प्रबंधन श्री अर्जुन पां. घुगल ने की । संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में श्री डी.के. पांडे, संयुक्त सचिव, राजभाषा, गृह मंत्रालय, भारत सरकार सादर आंमत्रित थे । उन्होंने कार्यपालकों को भारत सरकार की राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी उपेक्षाओं एवं सांविधिक अपेक्षाओं के अनुपालन को सुनिश्चित करने बाबत् सूचित किया । श्री डी.के. पांडे ने बैंक ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित ऐसी राजभाषा संगोष्ठी की सराहना करते हुए कहा कि इससे प्रत्येक स्तर से ही राजभाषा में कार्य करने का सकारात्मक संदेश जाएगा । इस अवसर पर समस्त कार्यपालकों से हिंदी में लेख मंगवाये गये थे, जिन्हें संकलित कर पुस्तक रूप में 'हिंदी दिवस' पर

प्रकाशित करवाया जाना है । श्री विनोद कुमार शर्मा, उपनिदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित मदों पर चर्चा करते हुए उपस्थित कार्यपालकों को हिंदी में कार्य करने एवं स्टाफ सदस्यों से हिंदी में कार्य कराने के लिए प्रेरित किया । श्री प्रेम सिंह, संयुक्त निदेशक, भारत सरकार ने व्यावहारिक उद्धरणों द्वारा हिंदी में कार्य करने हेतु प्रेरित किया ।

राजभाषा संगोष्ठी के उपरांत उप महाप्रबंधकों एवं सहायक महाप्रबंधकों के बीच 'हिंदी टिप्पण एवं नोटिंग प्रतियोगिता' का आयोजन भी किया गया था ।

पश्चिम रेलवे, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, कोठी कंपाउन्ड, राजकोट-360001 मुंशी प्रेमचंद की जयंती के अवसर पर प.रे. राजकोट मंडल पर साहित्यिक संगोष्ठी का आयोजन

अमर साहित्यकार उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद पर मंडल रेल प्रबंधक राजकोट के कार्यालय में एक साहित्यिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया । संगोष्ठी में साहित्यिक अभिरुचि रखने वाले रेलवे के कर्मचारी/अधिकारी उपस्थित हुए । संगोष्ठी की अध्यक्षत मंडल रेल प्रबंधक, श्री वेद पाल ने की तथा संचालन राजभाषा अधिकारी श्री पी. बी. सिंह ने किया ।

संगोष्ठी में एक व्याख्यान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । कुल मिलाकर छः लोगों ने भिन्न-भिन्न साहित्यकारों पर अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए । श्री गोवर्धन शर्मा तथा श्री नोरंगलाल ने मुंशी प्रेमचंद पर व्याख्यान दिया । डॉ. राजीव मिश्रा ने मैथिलीशरण गुप्त पर, श्रीमती अवनी ओझा ने डॉ. राम दरश मिश्र पर, श्री एस. पी. सिंह ने तुलसीदास पर तथा श्रीमती अपर्णा मिश्रा ने डॉ. हरिवंश राय बच्चन पर व्याखान दिया । निर्णायक मंडल में दो सदस्य थे । श्री गिरीश त्रिवेदी सेवा निवृत हिंदी प्राध्यापक-सौराष्ट्र विश्वविद्यालय तथा श्री दीपक पंड्या - राजभाषा अधिकारी - बीएसएनएल - राजकोट ।

संगोष्ठी के प्रारंभ में मंचस्थ महानुभावों ने माँ सरस्वती को दीप प्रज्जवलन किया । उसके बाद राजभाषा अधिकारी श्री पी. बी. सिंह ने बदलते परिवेश में साहित्य और साहित्यकार के उद्देश्य की ओर संकेत करते हुए राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की निम्नलिखित पंक्तियां उद्धृत कीं :

1. हम कौन थे क्या हो गये और क्या होंगे अभी ।
   आओं विचारें मिलकर ये समस्यायें सभी ।।
2. केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए ।
   उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए ।।

उसके बाद व्याख्यान प्रतियोगिता शुरू हुई । कुल छः प्रतिभागियों ने अपने-अपने विषय कर व्याख्यान दिए । तत्पश्चात मुख्य अतिथि महोदय ने प्रतिभागियों के व्याख्यानों पर अपना निष्कर्ष दिया । उसके बाद निर्णायक मंडल ने प्रतियोगिता के परिणाम की घोषणा की । डॉ. राजीव मिश्रा को प्रथम, श्री एस. पी. सिंह को द्वितीय और श्री नारंगलाल को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ तथा अन्य को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया ।

बाद में मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद पाल ने अध्यक्षीय उद्बोधन किया । उन्होंने वक्ताओं के व्याख्यानों की बहुत प्रशंसा की । उन्होंने कहा कि हम भारतीय रेलवे परिवार के लोग रेल संचालत गतिविधियों एवं अपने कार्यालय के विभिन्न कार्यों को निपटाने में सदा व्यस्त रहते हैं । इस तरह के आयोजनों में भाग लेने पर हमें बड़ा सुकून मिलता है । इस अवसर पर उन्होंने स्व रचित कविता का पाठ भी किया जिसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की गई ।

अंत में राजभाषा अधिकारी श्री पी. बी. सिंह ने संगोष्ठी को सफल बनाने के लिए उपस्थित व्यक्तियों का आभार व्यक्त किया एवं कार्यक्रम समापन की घोषणा की । ■

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का स्रोत है ।

—सुमित्रानंदन पंत

प्रतियोगिता/पुरस्कार

पंजाब नैशनल बैंक को इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड योजना के अंतर्गत पंजाब नैशनल बैंक को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है। भारत सरकार द्वारा विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित हिंदी दिवस समारोह में भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटील से पीएनबी के कार्यपालक निदेशक श्री राकेश सेठी ने पुरस्कार स्वरुप शील्ड एवं प्रमाणपत्र ग्रहण किया। वित्तीय वर्ष 2009-10 में राजभाषा हिंदी का बैंकिंग कार्यों में सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन सुनिश्चित करने हेतु पीएनबी को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ है। समारोह की अध्यक्षता केंद्रीय गृह मंत्री श्री पी. चिदम्बरम ने की। केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री जितेंद्र सिंह और श्री एम. रामचंद्र सहित श्री आर. के. सिंह गृह सचिव और सुश्री वीणा उपाध्याय सचिव, राजभाषा विभाग भी उपस्थित थीं बैंक की ओर से सुश्री उषा अनन्तसुब्रह्मण्यन कार्यपालक निदेशक तथा महाप्रबंधक श्री जी. एस. चौहान एवं श्री वी. के. खन्ना, उपमहाप्रबंधक श्री वी. मनोहरन तथा राजभाषा विभाग के मुख्य प्रबंधक श्री श्रीलाल प्रसाद उपस्थित थे ।

राजभाषा विभाग-राजकोट मंडल-प. रे. द्वारा पुरस्कार वितरण समारोह एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

राजभाषा विभाग, राजकोट मंडल, प. रे. द्वारा श्री वेद पाल, मंडल रेल प्रबंधकज़ी की अध्यक्षता में दि. 10-10-11 को अपराह्न 3.30 बजे हिंदी पुरस्कार वितरण समारोह एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया ।

समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता अधिकारियों/कर्मचारियों, निर्णायकों, सहयोगियों एवं हिंदी में अधिकाधिक व प्रशंसनीय कार्य करने वाले कर्मचारियों को अध्यक्षा-परेमससे समिति, मंडल रेल प्रबंधक और अपर मंडल रेल प्रबंधक महोदय के करकमलों द्वारा पुरस्कृत किया गया ।

श्रीमती अलका शर्मा, अध्यक्षा-परेमससे समिति ने उपस्थित श्रोताओं को याद दिलाया हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है, हमें स्वत: प्रेरित होकर हिंदी को अपनाना चाहिए । श्री वेद पाल, मरेप्र ने प्रासंगिक उद्बोधन में कहा कार्यक्रम की प्रस्तुति अत्यंत सराहनीय रही, ऐसे कार्यक्रमों से अनेक प्रतिभाएं हमारे सामने आती हैं । श्री दयानंद गांधी, अमरेप्र ने सभी उपस्थित श्रोताओं को कार्यक्रम में उपस्थित होने के लिए धन्यवाद दिया तथा प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत सभी को बधाई दी और आशा व्यक्त की कि हिंदी कार्य में भविष्य में और बढ़ोत्तरी होगी ।

दक्षिण मध्य रेलवे पर क्षेत्रीय हिंदी नाटक प्रतियोगिता संपन्न

दक्षिण मध्य रेलवे पर दिनांक 28-9-2011 और 29-9-2011 को क्षेत्रीय हिंदी नाटक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया इस प्रतियोगिता में प्रधान कार्यालय की टीम के साथ-साथ सिकंदराबाद, विजयवाडा तथा नांदेड मंडलों तथा तिरुपति कारखाना की टीमों ने भाग लिया कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री आर विजय मोहन, अपर महाप्रबंधक थे तथा इसकी अध्यक्षता श्री महेश चंद्र, मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं भंडार नियंत्रक ने की ।

कार्यक्रम के आरंभ में इस रेलवे के उप महाप्रबंधक (राजभाषा), श्रीमती मंगला अभ्यंकर ने दक्षिण मध्य रेलवे पर राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार के लिए हो रहे विभिन्न गतिविधियों के बारे में उल्लेख करते हुए इस नाटक प्रतियोगिता में मंचित किए जाने वाले नाटकों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी उन्होंने कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिता के आयोजन का उद्देश्य हिंदी के प्रयोग-प्रसार को बढ़ावा देना है ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री आर. विनय मोहन, अपर महाप्रबंधक द.म. रेलवे ने अपने संबोधन में कहा कि दक्षिण मध्य रेलवे हमेशा से हिंदी के प्रयोग-प्रसार में अग्रणी रही है और नाटक प्रतियोगिता जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से हिंदी के प्रयोग-प्रसार को एक नया आयाम मिलता है, उन्होंने इस बात पर हर्ष व्यक्त किया कि हिंदीतर भाषा-भाषी कलाकारों ने नाटकों के मंचन में हिंदी संवादों का बहुत ही स्पष्ट और सहज रूप से उच्चारण किया ।

समारोह के अध्यक्ष श्री महेश चंद्र, मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं भंडार नियंत्रक ने कार्यक्रम के पुरस्कार वितरण व समापन समारोह के अवसर पर कहा कि नाटक एक ऐसा माध्यम है । जो हिंदी के प्रयोग-प्रसार को बढ़ावा देने में सहायक है । ■

प्रशिक्षण

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली का दिनांक 11 नवंबर, 2011 का पत्र सं. 19011/24/2011/के.हि.प्र.सं/अल्प.ग.प्रशि./1297 से 3296

विषय– संघ सरकार के मंत्रालयों/विभागों तथा उनके नियंत्रणाधीन संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्रों के उपक्रमों/सांविधिक निकायों/उद्यमों/अभिकरणों/निगमों तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि के कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए संस्थान द्वारा आयोजित गहन हिंदी कार्यशालाओं का विवरण-वर्ष 2012

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा भारत सरकार के मंत्रालयों/विभागों तथा उनके नियंत्रणाधीन संबद्ध अधीनस्थ कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्रों के उपक्रमों/सांविधिक निकायों/उद्यमों/अभिकरणों/निगमों तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के लिए गहन हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है । इन कार्यशालाओं में सभी कार्यालयों के अधिकारी/कर्मचारी भाग लेते हैं ।

वर्ष 2012 में आयोजित की जाने वाली **गहन हिंदी कार्यशालाओं का विवरण तिथियों सहित अनुलग्नक-1** में दिया जा रहा है, ताकि सभी संबंधित कार्यालय प्रतिभागियों की सुविधा को ध्यान में रखकर कार्यशाला के वार्षिक कैलेंडर के अनुसार पूरे वर्ष के लिए उन्हें एक साथ नामित कर सकें ।

प्रशिक्षण की संक्षिप्त जानकारी

क्र. सं.	कार्यक्रम का नाम	उद्देश्य	अवधि	भारत सरकार के कार्यालय जिनके लिए प्रशिक्षण अनिवार्य है
1.	गहन हिंदी कार्यशाला	(क) विभागीय अधिकारियों/ कर्मचारियों को सरकारी कार्य हिंदी में करने के लिए अभिप्रेरित करना (ख) विभागीय अधिकारियों/कर्म-चारियों द्वारा कार्यालयीन काम को हिंदी में करने की झिझक को दूर करना । (ग) कार्यालयीन कार्य को करने की दक्षता (लेखन कौशल) प्रदान करना । (घ) राजभाषा विभाग द्वारा विकसित यांत्रिक उपकरणों (साफ्टवेयरों) की जानकारी प्रदान करना ।	पाँच पूर्ण कार्य दिवसीय	संघ सरकार के मंत्रालय/विभाग तथा उनके नियंत्रणाधीन संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालय, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम/सांविधिक निकाय/उद्यम/ अभिकरण/निगम तथा राष्ट्रीयकृत बैंक आदि ।

पात्रता

- राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन के लिए सभी कार्यालयों से कहा गया है कि उन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालयीन हिंदी का प्रशिक्षण दिया जाए, जिन्हें हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान या प्रवीणता प्राप्त है ।
- हिंदी में प्रवीणता प्राप्त उसे कहा जाएगा जिस कर्मचारी ने :-
- मैट्रिक परीक्षा या उसके समतुल्य या उससे उच्चतर कोई अन्य परीक्षा हिंदी माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है ।

या

- स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा के समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिंदी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया था ।

या

- यदि वह राजभाषा नियम, 1976 के साथ संलग्न फार्म में यह घोषणा करता है कि उसे हिंदी में प्रवीणता/ कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है ।
- हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त उसे कहा जाएगा जिस कर्मचारी ने :-
- मैट्रिक परीक्षा या समतुल्य या उससे उच्चतर कोई अन्य परीक्षा हिंदी विषय के साथ उत्तीर्ण की है ।

या

- केंद्र सरकार की हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत आयोजित प्राज्ञ अथवा सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के संबंध में उस योजना के अंतर्गत वांछित परीक्षा उत्तीर्ण की है ।

या

- केंद्र सरकार द्वारा उसके निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है ।

या

- यदि वह राजभाषा नियम, 1976 के साथ संलग्न फार्म में यह घोषणा करता है कि उसने कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उसके बारे में यह कहा जाएगा कि उसे हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है ।
- जो हिंदीतर भाषा-भाषी अधिकारी/कर्मचारी गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षण ले चुके हैं, परंतु जिन्हें हिंदी में कार्यालय का कार्य करने में अभी कठिनाई होती है, उन्हें भी इन कार्यशालाओं में भेजा जा सकता है ।
- उन अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रवेश में प्राथमिकता दी जाएगी, जिन्होंने अभी तक संस्थान द्वारा संचालित हिंदी कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया है ।

नामांकन विधि एवं प्रपत्र

- **प्रशिक्षण केंद का पता :** अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, 2-ए, पृथवीराज रोड, (जे एंड के हाउस के सामने/राजस्थान भवन के नजदीक) नई दिल्ली-110011

- उपर्युक्त प्रशिक्षण के लिए नामित किए जाने वाले प्रशिक्षकों के ब्यौरे अनुलग्नक '2' में दिए गए प्रपत्र में यथा समय इस कार्यालय को अवश्य भिजवा दिए जाएं।
- कार्यशालाओं का समय सुबह 9.30 बजे से सायं 6.00 बजे तक निर्धारित है।
- नामांकन निर्धारित प्रपत्र में ही भेजा जाए ताकि पत्राचार में किसी प्रकार की कोई कठिनाई न हो।
- प्रशिक्षण के लिए नामित अधिकारी को अलग से यथासमय पुष्टि पत्र भेजा जाएगा।
- केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा पुष्टि दिए जाने के उपरांत ही नामित अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यक्रम में प्रवेश दिया जाएगा।

विशेष

- गहन हिंदी कार्यशालाओं के वार्षिक विवरण के लिए अनुलग्नक '1' देखें।
- सभी मंत्रालयों, विभागों, उपक्रमों, बैंकों, निगमों आदि के प्रशासनिक प्रमुखों से अनुरोध है कि इस परिपत्र को सभी संबद्ध कार्यालयों/इकाइयों/शाखाओं में शीघ्र परिचालित करवाने का कष्ट करें।
- यात्रा/दैनिक भत्ता आदि जो भी देय होगा वह नामित प्रतिभागी के कार्यालय/संगठन द्वारा ही वहन किया जाएगा, इस संस्थान द्वारा नहीं।
- कृपया यह सुनिश्चित करने का कष्ट करें कि इस कार्यक्रम में जिन अधिकारियों के नामों की पुष्टि इस कार्यालय द्वारा भेजी जाती है उन्हें अवश्य कार्यमुक्त किया जाए। यदि किसी कारणवश उन्हें छोड़ना संभव न हो तो उनके स्थान पर किसी अन्य अधिकारी को भेज सकते हैं। नामित अधिकारी को ऐसे ही किसी अगले कार्यक्रम में भिजवाने की व्यवस्था करना भी सुनिश्चित करें।
- प्रशिक्षण पूरा करने के उपरांत प्रत्येक प्रतिभागी को प्रमाण-पत्र तथा कार्यमुक्ति आदेश दिया जाएगा।
- प्रशिक्षण से संबंधित अन्य वांछित जानकारी के लिए संबंधित प्रभारी सहायक निदेशक से फोन नं. 011-23793521 पर संपर्क करें।

संपर्क सूत्र

(1)	(2)
निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, सातवाँ तल, पर्यावरण भवन, सी. जी. ओ. कॉम्पलैक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003 दूरभाषा-011-24361852 फैक्स-011-24361852 ई-मेल dirchti-dol@nic.in	प्रभारी सहायक निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक, 2-ए, पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली दूरभाषा-011-23793521 फैक्स-011-23018740

प्रशिक्षण केंद्र तथा हॉस्टल का पता तथा उनके बस रूट

प्रशिक्षण केंद्र	हॉस्टल
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक 2-ए, पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली-110011 दूरभाषा-011-23793521 बस रूट-नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से संघ लोक सेवा आयोग, शाहजहाँ रोड तक बस नं.-एम-13,56 पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से पृथ्वीराज रोड बस नं.-502 अ.रा.बस. अड्डे से पृथ्वीराज रोड तक बस नं-501, 503, 533, 621	वार्डन (हॉस्टल), केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, फ्लैट नं. 2 गवर्नमेंट हॉस्टल, तीसरा तल, देवनगर, करोल बाग के पास, नई दिल्ली-110005 दूरभाष 011-28716509 बस रूट-नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से खालसा कॉलेज बस नं. 181 पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से लिबर्टी सिनेमा बस नं. 926 हॉस्टल से संघ लोक सेवा आयोग, शाहजहाँ रोड तक (पृथ्वीराज रोड) बस नं, 450, 181

अनुलग्नक-1

प्रशिक्षण कार्यक्रम कलैंडर-वर्ष 2012

गहन हिंदी कार्यशालाएँ

(पाँच पूर्ण कार्य दिवसीय)

क्रम संख्या	कार्यशाला सं.	प्रशिक्षण-अवधि
1.	371	06-02-2012 से 10-02-2012
2.	372	12-03-2012 से 106-03-2012
3.	373	09-04-2012 से 13-04-2012
4.	374	23-04-2012 से 27-04-2012
5.	375	07-05-2012 से 11-05-2012
6.	376	21-05-2012 से 25-05-2012
7.	377	04-06-2012 से 08-06-2012
8.	378	02-07-2012 से 06-07-2012
9.	379	23-07-2012 से 27-07-2012
10.	380	17-09-2012 से 21-09-2012
11.	381	08-10-2012 से 12-10-2012
12.	382	05-11-2012 से 09-11-2012
13.	383	19-11-2012 से 23-11-2012
14.	384	03-12-2012 से 07-12-2012
15.	385	17-12-2012 से 21-12-2012

प्रपत्र

अधिकारी/कर्म. का नाम	पदनाम	मातृभाषा	वर्तमान तैनाती का स्थल	शैक्षिक/ तकनीकी अर्हता	हिंदी का ज्ञान	टेलीफोन नं. (कार्यालय/मोबा.)	ई मेल आई डी

प्रायोजक अधिकारी के हस्ताक्षर ....

पदनाम ....

संस्थान/कार्यालय का पूरा पता ....

टेलीफोन नं. .... फैक्स नं. ....

ई मेल आई डी ....

(पृष्ठ 34 का शेष)

5. प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन सामान्य तौर पर 800 से 850 लीटर जल का उपयोग (शहरों) में करता है जो कि उसकी दैनिक आवश्यकता से कहीं अधिक है। हम अपने जीवनयापन के तरीकों में बदलाव लाकर इस खपत को 70-80 लीटर पर लाकर लगभग 600-700 लीटर जल की बचत प्रतिदिन कर सकते हैं।

उपसंहार :

जल का संरक्षण करके जल की बचत नहीं की गई तो एक अनुमान के अनुसार सन् 2025 तक दुनियाँ के दो तिहाई भाग देशों में जनता को पीने के पानी के लिए तरसना पड़ेगा और भविष्य में जल के लिए लाले पड़ जायेंगे तथा स्थिति को नहीं संभाला गया तो हो सकता है कि तीसरा महायुद्ध पानी के लिए लड़ा जायेगा। इस खतरे से निबटने के लिए प्रत्येक व्यक्ति, समाज, देश को चाहिए की पानी की यथासंभव भविष्य के लिए बचत की जाये। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार आजकल संसार में 2 विलियन लोग पानी के लिए मर रहे हैं जो मानव सभ्यता के लिए एक विलक्षण अभिशाप है। भविष्य के लिए जल की बचत के कार्यक्रमों के अंतर्गत न केवल जल की खपत का नियंत्रण हो बल्कि जल के संसाधनों का दक्षतायुक्त प्रबंधन, पानी के संचय की प्रणालियों का पालन और पानी की बढ़ती मांग पर नियंत्रण आदि अन्य कई गतिविधियाँ शामिल हैं। आलेख को समाप्त करने के पूर्व इस प्रसंग में एक कवि की दो पंक्तियाँ याद करने योग्य हैं :

हो गई है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई और गंगा निकलनी चाहिए।
मत कहो आकाश में कुहरा घना है,
यह किसी की व्यक्तिगत आलोचना है।
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि भविष्य के लिए जल
बचत की सूरत बदलनी चाहिए। ■

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली का दिनांक 11 नवंबर, 2011 का पत्र सं. 19011/25/2011/के.हि.प्र.सं/अल्प.ग.प्रशि./5297 से 7296

विषय- संघ सरकार के समस्त मंत्रालय/विभागों/सरकारी उपक्रम/बैंक/निगम/निकाय/लोक उद्यम/संगठन आदि के प्रबंधक (राजभाषा), संयुक्त/उप/सहायक निदेशक (राजभाषा)/हिंदी अधिकारियों के लिए 5 पूर्ण कार्य दिवसीय अभिमुखी कार्यक्रम का आयोजन वर्ष-2012

भारत सरकार तथा सार्वजनिक क्षेत्रों के हिंदी अधिकारियों के लिए केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा अभिमुखी कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। वर्ष 1999 से 2011 तक कुल 43 (तैंतालीस), अभिमुखी कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके हैं।

यह देखा गया है कि उक्त कार्यक्रम के लिए नामित अनेक अधिकारी प्रशासनिक, व्यक्तिगत या आकस्मिक कारणों से इसमें शामिल नहीं हो सके, साथ ही अभी भी ऐसे अधिकारियों की संख्या काफी अधिक है जिन्हें किसी भी प्रशिक्षण कार्यक्रम में नामित नहीं किया गया है। प्रशिक्षण की अनिवार्यता को देखते हुए तथा राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन में राजभाषा अधिकारी अपनी भूमिका का सफलतापूर्वक निर्वाह कर सकें इसीलिए वर्ष 2012 में भी दो अभिमुखी कार्यक्रम आयोजित किया जा रहे हैं। आपसे अनुरोध है कि अपने अधीनस्थ राजभाषा अधिकारियों को उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में नामित करने का कष्ट करें।

प्रशिक्षण की संक्षिप्त जानकारी

क्र. सं.	कार्यक्रम का नाम	उद्देश्य	अवधि	नामित अधि. की पात्रता/पदनाम	भारत सरकार के कार्यालय जिनके लिए प्रशिक्षण अनिवार्य है।
1.	अभिमुखी कार्यक्रम	राजभाषा हिंदी की अद्यतन जानकारी देना। राजभाषा संबंधी दायित्वों से परिचित कराना। राजभाषा नीति का सफल कार्यान्वयन करना	19-03-2012 से 23-03-2012 तक पाँच पूर्ण कार्य दिवसीय	भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन/अनुवाद से जुड़े संयुक्त/उप/सहा निदेशक (रा.भा.) हिंदी अधिकारी, उप-सहायक	भारत सरकार के मंत्रालय, विभाग अधीनस्थ/कार्यालय बैंक/उपक्रम/निगम निकाय/ बीमा कंपनी लोक-उद्यम आदि।
2.	-वही-	-वही-	15-10-2012 से 19-10-2012 तक	-वही-	-वही-

नामांकन विधि एवं प्रपत्र

- **प्रशिक्षण केंद्र का पता :** अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय, 2-ए, पृथ्वीराज रोड (जे एंड के हाउस के सामने/राजस्थान भवन के नजदीक) नई दिल्ली-110011
- कार्यक्रम का समय सुबह 9.30 बजे से सायं 6.00 बजे तक निर्धारित है।
- उक्त प्रशिक्षण के लिए नामित किए जाने वाले अधिकारी के ब्यौरे अनुलग्नक में दिए गए प्रपत्र में भरकर यथासमय इस कार्यालय को अवश्य भिजवाएं।

- नामांकन निर्धारित प्रपत्र में ही किया जाए तथा नामित करने वाले अधिकारी का नाम, कार्यालय का पूरा पता टेलीफोन नं., फैक्स नं. पता ई-मेल आई डी का प्रपत्र में स्पष्ट उल्लेख किया जाए ताकि पत्राचार में किसी प्रकार की कोई कठिनाई न हो ।
- इस कार्यक्रम के लिए नामित अधिकारियों के नामों की पुष्टि यथा समय रहते इस कार्यालय द्वारा भेजी जाएगी ।
- केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा पुष्टि दिए जाने के उपरांत ही नामित अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यक्रम में प्रवेश दिया जाएगा ।

विशेष

- सभी मंत्रालयों, विभागों, उपक्रमों, बैंकों, निगमों आदि के प्रशासनिक प्रमुखों से अनुरोध है कि इस परिपत्र को सभी संबद्ध कार्यालयों/इकाइयों/शाखाओं में शीघ्र परिचालित करवाने का कष्ट करें ।
- कार्यक्रम में भाग लेने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को यात्रा/दैनिक भत्ता आदि जो भी देय होगा वह नामित प्रतिभागी के कार्यालय/संगठन द्वारा ही वहन किया जाएगा, इस संस्थान द्वारा नहीं ।
- कृपया यह सुनिश्चित करने का कष्ट करें कि इस कार्यक्रम में जिन अधिकारियों के नामों की पुष्टि इस कार्यालय द्वारा भेजी जाती है उन्हें अवश्य कार्यमुक्त किया जाए। यदि किसी कारण वश उन्हें छोड़ना संभव न हो तो उनके स्थान पर किसी अन्य अधिकारी को भेज सकते हैं । नामित अधिकारी को ऐसे ही किसी अगले कार्यक्रम में भिजवाने की व्यवस्था करना भी सुनिश्चित करें ।
- प्रशिक्षण पूरा करने के उपरांत प्रत्येक प्रतिभागी को प्रमाण-पत्र तथा कार्यमुक्ति आदेश दिया जाएगा ।
- प्रशिक्षण से संबंधित अन्य वांछित जानकारी के लिए संबंधित एकक के प्रभारी सहायक निदेशक से फोन नं. 011-23793521 पर संपर्क करें ।

संपर्क सूत्र

(1)	(2)
निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, सातवाँ तल, पर्यावरण भवन, सी. जी. ओ. कॉम्पलैक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003 दूरभाषा-011-24361852 फैक्स-011-24361852 ई-मेल dirchti-dol@nic.in	प्रभारी सहायक निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक, 2-ए, पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली-110011 दूरभाषा-011-23793521 फैक्स-011-23018740

प्रशिक्षण केंद्र तथा हॉस्टल का पता तथा उनके बस रूट

प्रशिक्षण केंद्र	हॉस्टल
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक 2-ए, पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली-110011 दूरभाषा-011-23793521	वार्डन (हॉस्टल), केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, फ्लैट नं. 2 गवर्नमेंट हॉस्टल, तीसरा तल, देवनगर, करोल बाग के पास, नई दिल्ली-110005 दूरभाष 011-28716509

बस रूट- नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से संघ लोक सेवा आयोग, शाहजहाँ रोड तक बस नं.-एम-13, 56 पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से पृथ्वीराज रोड बस नं.-502 अ.रा. बस. अड्डे से पृथ्वीराज रोड तक बस नं-501, 503, 533, 621	बस रूट-नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से खालसा कॉलेज बस नं. 181 पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से लिबर्टी सिनेमा बस नं. 926 हॉस्टल से संघ लोक सेवा आयोग, शाहजहाँ रोड तक (पृथ्वीराज रोड) बस नं, 450, 181

प्रपत्र

अधिकारी का नाम	पदनाम	मातृभाषा	वर्तमान तैनाती का स्थल	शैक्षिक/ तकनीकी अर्हता	हिंदी का ज्ञान	टेलीफोन नं. (कार्यालय/मोबा.)	ई मेल आई डी

प्रायोजक अधिकारी के हस्ताक्षर

पदनाम

संस्थान/कार्यालय का पूरा पता ....

टेलीफोन नं. .... फैक्स नं. ....

ई मेल आई डी ....

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली का दिनांक 11 नवंबर, 2011 का पत्र सं. 19011/26/2011/के.हि.प्र.सं/अल्प.ग.प्रशि./3297 से 5296

विषय—भारत सरकार के विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों के प्रशिक्षकों द्वारा हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण देने के संबंध में-पांच पूर्ण कार्य-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन वर्ष-2012

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा भारत सरकार के विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों के प्रशिक्षकों के लिए हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। वर्ष 2011 तक इस संस्थान द्वारा 37 (सैंतीस) प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके हैं। कार्यालयों/प्रशिक्षण संस्थानों में अभी भी ऐसे संकाय सदस्यों (Faculty Members) की संख्या काफी है, जिन्हें हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण दिया जाना शेष है इसलिए इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों को 2012 में भी चलाने का निर्णय लिया गया है ।

अत: आपसे अनुरोध है कि अपने अधीनस्थ कार्यालयों के प्रशिक्षकों को उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में नामित करने का कष्ट करें ।

प्रशिक्षण की संक्षिप्त जानकारी

क्र. सं. कार्यक्रम का नाम	उद्देश्य	अवधि	नामित अधि. की पात्रता/पदनाम	भारत सरकार के कार्यालय जिनके लिए प्रशिक्षण अनिवार्य है
1. प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम	विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों के प्रशिक्षकों द्वारा अंग्रेजी तथा क्षेत्रीय भाषाओं के साथ-साथ हिंदी भाषा के माध्यम से भी अनिवार्य रूप से प्रशिक्षण देना । उनकी हिंदी भाषा की अभिव्यक्ति को अधिक सशक्त बनाना ।	14-05-2012 से 18-05-2012 तक पाँच पूर्ण कार्य दिवसीय	ऐसे संकाय सदस्य (Faculty Members) जो अंग्रेजी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में प्रशिक्षण दे रहे हैं पर जिन्हें हिंदी भाषा के माध्यम से प्रशिक्षण देने में कठिनाई हो रही है ।	भारत सरकार के विभिन्न प्रशिक्षण संस्थान, मंत्रालय, विभाग, सरकारी उपक्रम, बैंक, निगम, सांविधिक निकाय, लोक उद्यम, संगठन आदि ।

नामांकन विधि एवं प्रपत्र

- **प्रशिक्षण केंद्र का पता :** अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय, 2-ए, पृथ्वीराज रोड (जे एंड के हाउस के सामने/राजस्थान भवन के नजदीक) नई दिल्ली-110011
- उपर्युक्त प्रशिक्षण के लिए नामित किए जाने वाले प्रशिक्षकों के ब्यौरें अनुलग्नक 'क' में दिए गए प्रपत्र में यथा समय इस कार्यालय को अवश्य भिजवा दिए जाएं ।
- कार्यक्रम का समय सुबह 9.30 बजे से सायं 6.00 बजे तक निर्धारित है ।
- नामांकन निर्धारित प्रपत्र में ही भेजा जाए ताकि पत्राचार में किसी प्रकार की कोई कठिनाई न हो ।
- प्रशिक्षण के लिए नामित अधिकारी को अलग से यथासमय पुष्टि पत्र भेजा जाएगा ।
- केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा पुष्टि दिए जाने के उपरांत ही नामित अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यक्रम में प्रवेश दिया जाएगा ।

विशेष

- सभी मंत्रालयों, विभागों, उपक्रमों, बैंकों, निगमों आदि के प्रशासनिक प्रमुखों से अनुरोध है कि इस परिपत्र को सभी संबद्ध कार्यालयों/इकाइयों/शाखाओं में शीघ्र परिचालित करवाने का कष्ट करें ।
- यात्रा/दैनिक भत्ता आदि जो भी देय होगा वह नामित प्रतिभागी के कार्यालय/संगठन द्वारा ही वहन किया जाएगा, इस संस्थान द्वारा नहीं ।
- कृपया यह सुनिश्चित करने का कष्ट करें कि इस कार्यक्रम में जिन अधिकारियों के नामों की पुष्टि इस कार्यालय द्वारा भेजी जाती है उन्हें अवश्य कार्यमुक्त किया जाए। यदि किसी कारण वश उन्हें छोड़ना संभव न हो तो उनके स्थान पर किसी अन्य अधिकारी को भेज सकते हैं । नामित अधिकारी को ऐसे ही किसी अगले कार्यक्रम में भिजवाने की व्यवस्था करना भी सुनिश्चित करें ।
- प्रशिक्षण पूरा करने के उपरांत प्रत्येक प्रतिभागी को प्रमाण-पत्र तथा कार्यमुक्ति आदेश दिया जाएगा ।
- प्रशिक्षण से संबंधित अन्य वांछित जानकारी के लिए संबंधित प्रभारी सहायक निदेशक से फोन नं. 011-23793521 पर संपर्क करें ।

संपर्क सूत्र

(1)	(2)
निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, सातवाँ तल, पर्यावरण, भवन, सी. जी. ओ. कॉम्पलैक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003 दूरभाषा-011-24361852 फैक्स-011-24361852 ई-मेल dirchti-dol@nic.in	प्रभारी सहायक निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक, 2-ए, पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली -11..11 दूरभाषा-011-23793521 फैक्स-011-23018740

प्रशिक्षण केंद्र तथा हॉस्टल का पता तथा उनके बस रूट

प्रशिक्षण केंद्र	हॉस्टल
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक 2-ए, पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली-110011 दूरभाषा-011-23793521 बस रूट- नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से संघ लोक सेवा आयोग, शाहजहाँ रोड तक बस नं.-एम-13,56 पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से पृथ्वीराज रोड बस नं.-502 अ.रा.बस. अड्डे से पृथ्वीराज रोड तक बस नं-501, 503, 533, 621	वार्डन (हॉस्टल), केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, फ्लैट नं. 2 गवर्नमेंट हॉस्टल, तीसरा तल, देवनगर, करोल बाग के पास, नई दिल्ली-110005 दूरभाष 011-28716509 बस रूट-नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से खालसा कॉलेज बस नं. 181 पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से लिबर्टी सिनेमा बस नं. 926 हॉस्टल से संघ लोक सेवा आयोग, शाहजहाँ रोड तक (पृथ्वीराज रोड) बस नं, 450, 181

प्रपत्र

प्रशिक्षक का नाम	पदनाम	मातृभाषा	वर्तमान तैनाती का स्थल	शैक्षिक/ तकनीकी अर्हता	हिंदी का ज्ञान	टेलीफोन नं. (कार्यालय/मोबा.)	ई मेल आई डी

प्रायोजक अधिकारी के हस्ताक्षर

पदनाम

संस्थान/कार्यालय का पूरा पता ....

टेलीफोन नं. .... फैक्स नं. ....

ई मेल आई डी ....

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली का दिनांक 10 अक्तूबर, 2011 का पत्र सं. 19013/1/2011/के.हि.प्र.सं/अल्प.ग.प्रशि./569 से 1268

विषय—संघ सरकार के मंत्रालयों/विभागों, कार्यालयों, स्वायतशासी/सांविधिक निकायों, निगमों, उपक्रमों, राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए वर्ष 2012 में चलाए जाने वाले हिंदी शब्द संसाधन/टंकण और हिंदी आशुलिपि के अल्पकालिक (गहन) प्रशिक्षण कार्यक्रम ।

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के अंतर्गत वर्ष 2012 में हिंदी शब्द संसाधन/टंकण एवं हिंदी आशुलिपि के अल्पकालिक (गहन) प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाने हैं। हिंदी शब्द संसाधन/टंकण एवं हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण के प्रमुख बिंदु निम्नलिखित हैं ।

हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण चूंकि वर्ष 2015 तक पूण्र किए जाने का लक्ष्य रखा गया है, अत: आपसे यह अनुरोध है कि कार्मिकों को प्रशिक्षण हेतु प्राथमिकता के आधार पर भेजना सुनिश्चित करें ।

प्रशिक्षण की संक्षिप्त जानकारी

हिंदी आशुलिपि

पाठ्यक्रम का नाम	प्रशिक्षण की अवधि	पात्रता	हिंदी में योग्यता
हिंदी आशुलिपि	अनुलग्नक 1 के अनुसार	केवल उन्हीं अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण में प्रवेश दिया जाएगा जिन्होंने अभी तक हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया है । **अनिवार्य :** सभी वर्ग के अंग्रेजी आशुलिपिकों, वैयक्तिक सहायकों, निजी सचिवों हेतु । **स्वैच्छिक :** अवर श्रेणी लिपिकों/टंककों हेतु *	हिंदी के साथ मैट्रिक या उसके समकक्ष अन्य कोई परीक्षा जैसे हिंदी शिक्षण योजना की प्राज्ञ आदि

* हिंदी टंकण जानने वाले अवर श्रेणी लिपिकों/टंककों को भी हिंदी आशुलिपि कक्षाओं में स्वैच्छिक आधार पर नामांकित किया जा सकता है और कक्षाओं में स्थान रिक्त होने पर प्रवेश दिया जा सकता है, बशर्ते संबंधित विभाग/कार्यालय द्वारा यह प्रमाणित कर दिया जाए कि उस कर्मचारी की हिंदी आशुलिपि में प्रवीणता का कार्यालय के कार्य में उपयोग किए जाने की संभावना है। इन कर्मचारियों को हिंदी शिक्षण योजना की हिंदी आशुलिपि परीक्षा उत्तीर्ण करने पर कोई प्रोत्साहन नहीं दिया जाएगा ।

हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण

पाठ्यक्रम का नाम	प्रशिक्षण की अवधि	पात्रता	हिंदी में योग्यता
हिंदी आशुलिपि	अनुलग्नक 1 के अनुसार	केवल उन्हीं अधिकारियों/कर्मचारियों को कंप्युटर पर हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण प्रशिक्षण में प्रवेश दिया जाएगा जिन्होंने अभी तक हिंदी टंकण/शब्द संसाधन का प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया है । **अनिवार्य :** सभी अंग्रेजी टंककों/अवर श्रेणी लिपिकों डाक विभाग में डाक से हायकों एवं कार्यालय सहायकों, रेल डाक सेवा में छंटाई सहायकों, कार्यालय सहायकों, दूरसंचार विभाग में दूरसंचार सहायकों, आयकर तथा कस्टम एवं एक्साइज विभाग में कर सहायकों, विभिन्न मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों में कंप्यूटर आपरेटरों,	हिंदी के साथ मिडिल मैट्रिक या उसके समकक्ष अन्य कोई परीक्षा जैसे हिंदी शिक्षण योजना की प्राज्ञ आदि

पाठ्यक्रम का नाम	प्रशिक्षण की अवधि	पात्रता	हिंदी में योग्यता
		डाटा एंट्री आपरेटरों आदि के लिए, इसके अलावा इसमें ग्रुप 'ग' के वे कर्मचारी भी शामिल होंगे जो इसी प्रकृति का कार्य करते हैं और जिनके भिन्न पदनाम और भिन्न वेतनमान हैं । **स्वैच्छिक :** 1. वर्तमान में सहायकों, उच्च (प्रवर) श्रेणी लिपिकों तथा हिंदी अनुवादकों के लिए हिंदी टंकण का प्रशिक्षण अनिवार्य नहीं है, अत: इन्हें हिंदी शिक्षण योजना की हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण की कक्षाओं में स्वैच्छिक आधार पर नामित किया जा सकता है और इन्हें कक्षाओं में रिक्त स्थान होने पर प्रवेश दिया जा सकता है । 2. सभी वर्ग के अधिकारियों, जिनके लिए हिंदी शब्द संसान/हिंदी टंकण का प्रशिक्षण अनिवार्य नहीं है, किंतु उपयोगी हैं, को स्वैच्छिक आधार पर नामित किया जा सकता है और स्थान उपलब्ध होने पर उन्हें कक्षाओं में प्रवेश दिया जा सकता है । किंतु वर्तमान में दो अधिकारी प्रशिक्षण के उपरांत हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण की परीक्षा पास करने पर किसी भी प्रकार के वित्तीय लाभ/वित्तीय प्रोत्साहन आदि के हकदार नहीं होंगे, जैसे कि वैयक्तिक वेतन, नकद पुरस्कार एवं एकमुश्त पुरस्कार आदि ।	

* केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान और हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत दिए जाने वाले प्रशिक्षण पाठ्यक्रम एक समान हैं, परंतु ये प्रशिक्षण पाठ्यक्रम अल्पकालिक (गहन) होने के कारण इनकी नियमित रूप से पूर्णकालिक कक्षाएं आयोजित की जाती हैं । इन प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में प्रतिदिन प्रात: 9.30 बजे से सायं 6.00 बजे तक प्रशिक्षण केंद्र पर प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं ।

उप संस्थान

हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि के अल्पकालिक (गहन) प्रशिक्षण कार्याम केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली के अतिरिक्त कोलकाता, बैंगलूर, हैदराबाद तथा मुंबई उप संस्थानों में भी चलाए जाते हैं । इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विस्तृत विवरण अनुलग्नक-1 में दिया गया है ।

चयन का आधार

- पाठ्यक्रम में प्रवेश 'प्रथम आओ, प्रथम पाओ' के आधार पर दिया जाएगा ।
- हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि परीक्षा पास करने पर, केंद्रीय सरकार के कर्मचारियों को निर्धारित शर्ते पूरी करने पर 12 महीने की अवधि के लिए एक वेतनवृद्धि के बराबर राशि का वैयक्तिक वेतन प्रदान किया जाता है। जिन आशुलिपिकों की मातृभाषा हिंदी नहीं है, उन्हें हिंदी आशुलिपि की परीक्षा पास करने पर दो वेतनवृद्धियों के बराबर वैयक्तिक वेतन दिया जाएगा ।
- राजपत्रित आशुलिपिकों को 90 प्रतिशत या अधिक अंक लेकर हिंदी आशुलिपि की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर ही वैयक्तिक वेतन दिया जाएगा ।
- हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि परीक्षा पास करने और निर्धारित शर्ते पूरी करने पर अधोलिखित तालिका के अनुसार नकद पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं, जिनका भुगतान संबंधित कार्यालयों द्वारा ही किया जाता है ।

हिंदी आशुलिपि

1.	95 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	2400/- रु.
2.	92 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 95 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	1600/- रु.
3.	88 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 92 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	800/- रु.

हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण

1.	97 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	2400/- रु.
2.	95 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 97 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	1600/- रु.
3.	90 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 95 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	800/- रु.

परीक्षा शुल्क

- ये प्रशिक्षण पाठ्यक्रम निशुल्क हैं किंतु केंद्र सरकार के नियमों/निकायों/उपक्रमों तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि को प्रति कर्मचारी रु. 100/- की दर से परीक्षा शुल्क देना होगा । परीक्षा शुल्क का भुगतान 'उप निदेशक (परीक्षा), हिंदी शिक्षण योजना', नई दिल्ली (Deputy Director (Exam.), Hindi Teaching Scheme, New Delhi) को देय होना चाहिए ।

छात्रावास

- नई दिल्ली स्थित संस्थान में सीमित संख्या में प्रशिक्षार्थियों के ठहरने के लिए छात्रावास की व्यवस्था है, लेकिन नई दिल्ली से बाहर स्थित उप संस्थानों में छात्रवास की कोई व्यवस्था नहीं है। इसलिए वहाँ प्रशिक्षार्थियों को अपने ठहरने आदि की व्यवस्था स्वयं करनी होगी ।

नामांकन विधि

- केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली तथा कोलकाता, बैंगलूरु, हैदराबाद तथा मुंबई स्थित उप संस्थानों के पते अनुलग्नक-II में दिए गए हैं ।
- अनुरोध है कि अपने कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के नाम यथाशीध्र इस कार्यालय को तथा अपने क्षेत्र में स्थित उप संस्थान के प्रभारी सहायक निदेशक (टं/आ) को सीधे भिजवाने का कष्ट करें। कृपया उन्हीं अधिकारियों/कर्मचारियों को नामित कों जिन्हें पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु निश्चित रूप से कार्यमुक्त किया जा सके ।
- पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के बाद किसी भी परिस्थिति में कर्मचारी को सत्र के मध्य में कार्यमुक्त नहीं किया जाएगा। कृपया ध्यान रखें कि संबंधित केंद्र के सहायक निदेशक से पुष्टि प्राप्त होने पर ही अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षण के लिए भेजा जाए ।
- इस संबंध पत्र व्यवहार करते समय अपने कार्यालय का पूरा पता, दूरभाष संख्या और e.mail का पता अवश्य लिखें, जिससे संपर्क करने में इस कार्यालय को सुविधा हो ।

विशेष

- सभी मंत्रालयों, विभागों, उपक्रमों, बैंकों, निगमों आदि के प्रशासनिक प्रमुखों से अनुरोध है कि इस परिपत्र को सभी संबद्ध कार्यालयों/इकाइयों/शाखाओं में शीध्र परिचालित करवाने का कष्ट करें ।
- यह सुनिश्चित करना संबंधित कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का दायित्व है, कि कार्मिकों को अधिक से अधिक संख्या में प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाए, नामित कर्मचारी कक्षाओं में विनश्चित रूप से प्रवेश लें, कक्षाओं में नियमित

रूप से उपस्थित रहें और अनिवार्य रूप से परीक्षा में भी सम्मिलित हों, ताकि प्रशिक्षण के लिए उपलब्ध सरकारी संसाधनों का पूर्ण सदुपयोग हो सके और निर्धारित समय में प्रशिक्षण लक्ष्य प्राप्त किए जा सकें ।

- प्रशिक्षण से संबंधित अन्य वांछित जानकारी ई-मेल adchti@gmail.com द्वारा भी प्राप्त की जा सकती है ।

अनुलग्नक-I

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली तथा कोलकाता, हैदराबाद, बेंगलूरु एवं मुंबई स्थित केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप-संस्थानों में दिनांक 9-1-2012 से 14-12-2012 तक आयोजित किए जाने वाले हिंदी शब्द संसाधन/टंकण और हिंदी आशुलिपि के अल्पकालिक (गहन) प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विवरण ।

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली में आयोजित किए जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम

I-हिंदी शब्द संसाधन/टंकण

क्र.सं.	प्रशिक्षण कार्यक्रम	प्रशिक्षण की अवधि	प्रशिक्षण की तिथियां	प्रशिक्षण केंद्र का पता
1	हिंदी श.सं./टंकण	40 कार्यदिवस	09-01-2012 से 06-03-2012	केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान
2	हिंदी श.सं./टंकण	40 कार्यदिवस	07-03-2012 से 04-05-2012	2-ए, पृथ्वीराज रोड,
3	हिंदी श.सं./टंकण	40 कार्यदिवस	01-06-2012 से 26-07-2012	(जे. एंड के. हाऊस के सामने),
4	हिंदी श.सं./टंकण	40 कार्यदिवस	21-08-2012 से 16-10-2012	नई दिल्ली-110011
5	हिंदी श.सं./टंकण	40 कार्यदिवस	17-10-2012 से 14-12-2012	

II-हिंदी आशुलिपि

क्र.सं.	प्रशिक्षण कार्यक्रम	प्रशिक्षण की अवधि	प्रशिक्षण की तिथियां	प्रशिक्षण केंद्र का पता
1	हिंदी अशुलिपि	80 कार्यदिवस	09-01-2012 से 04-05-2012	केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान
2	हिंदी आशुलिपि	80 कार्यदिवस	21-08-2012 से 14-12-2012	2-ए, पृथ्वीराज रोड, (जे. एंड के. हाऊस के सामने), नई दिल्ली-110011

कोलकाता तथा हैदराबाद स्थित उप संस्थानों में आयोजित किए जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम

I-हिंदी शब्द संसाधन/टंकण

क्र.सं.	प्रशिक्षण कार्यक्रम	प्रशिक्षण की अवधि	प्रशिक्षण की तिथियां
1	हिंदी श.सं./टंकण	40 कार्यदिवस	09-01-2012 से 06-03-2012
2	हिंदी श.सं./टंकण	40 कार्यदिवस	07-03-2012 से 04-05-2012
3	हिंदी श.सं./टंकण	40 कार्यदिवस	01-06-2012 से 26-07-2012

II–हिंदी आशुलिपि

क्र.सं.	प्रशिक्षण कार्यक्रम	प्रशिक्षण की अवधि	प्रशिक्षण की तिथियां
1	हिंदी आशुलिपि	80 कार्यदिवस	21-08-2012 से 14-12-2012

बेंगलुरु तथा मुंबई स्थित उप संस्थानों में आयोजित किए जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम

हिंदी शब्द संसाधन/टंकण

क्र.सं.	प्रशिक्षण कार्यक्रम	प्रशिक्षण की अवधि	प्रशिक्षण की तिथियां
1	हिंदी श.सं./टंकण	40 कार्यदिवस	09-01-2012 से 06-03-2012
2	हिंदी श.सं./टंकण	40 कार्यदिवस	07-03-2012 से 04-05-2012
3	हिंदी श.सं./टंकण	40 कार्यदिवस	01-06-2012 से 26-07-2012
4	हिंदी श.सं./टंकण	40 कार्यदिवस	21-08-2012 से 16-10-2012
5	हिंदी श.सं./टंकण	40 कार्यदिवस	17-10-2012 से 14-12-2012

अनुलग्नक-II

1. उप निदेशक (संस्थान)
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय
2-ए, पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली-110011
दूरभाष 011-23793517
फैक्स 011-23018740
E-mail adchti@gmail.com

उप संस्थानों के पते

1. सहायक निदेशक (टंकण/आशुलिपि)
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
कमरा नं. 30, तीसरा तल, कौंसिल हाऊस स्ट्रीट,
कोलकाता-700 001
दूरभाष 033-22304062

2. सहायक निदेशक (टंकण/आशुलिपि)
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान,
केंद्रीय सदन, छठी मंजिल, 'सी' विंग 601,
सैक्टर-10, सीवीडी, बेलापुर,
नवी मुंबई-400 614
दूरभाष 022-27572705/275727060
फैक्स 022-27565417

3. सहायक निदेशक (टंकण/आशुलिपि)
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
बी-विंग, पांचवां तल, केंद्रीय सदन,
17वां मेन रोड, दूसरा ब्लॉक, कोरमंगला,
बेंगलूरु-560 034
दूरभाष 080-25537087
फैक्स 080-25537089

4. सहायक निदेशक (टंकण/आशुलिपि)
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
द्वितीय तल, केंद्रीय सदन, कोठी,
सुल्तान बाजार,
हैदराबाद-500 095 (आं.प्र.)
दूरभाष 040-24751297
फैक्स 040-24747211

पाठकों के पत्र

चिर प्रतिक्षित 'राजभाषा भारती' का अंक : 131 जुलाई-सितम्बर, 2011, प्राप्त हुआ । धन्यवाद ।

पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख एवं सामग्री रोचक एवं ज्ञानवर्धक है । डॉ. सीता राम अधिकारी का लेख 'अनुवाद कला-एक परिचय' महत्वपूर्ण है क्योंकि धारा 3(3) एवं द्विभाषिकता के मानकों के अनुपालन में अनुवाद की सशक्त भूमिका है । 'जीव जन्तुओं का अजीबो गरीब संसार', 'एक पेड़ की आत्मकथा' एवं 'स्वास्थ्य बूटी-एलोवेरा' लेख हमें पुन: प्रकृति से जुड़ने का अहसास दिलाते हैं । इसके साथ-साथ देश के विभिन्न शहरों में संपन्न होने वाली नराकास की बैठकों एवं कार्यशालाओं के संबंध में भी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई । 'राजभाषा भारती' के माध्यम से हमें राजभाषा हिंदी संबंधी विभिन्न गतिविधियों की जानकारी निरंतर प्राप्त होती रहती है ।

पत्रिका के आगामी अंकों के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

–यश वर्धन,
राजभाषा अधिकारी
दि ओरिएंटल इंश्योरेंस कम्पनी लि., क्षेत्रीय कार्यालय-1, नई दिल्ली,
10वीं मंजिल, हंसालय बिल्डिंग, 15, बाराखंभा रोड, नई दिल्ली-110001

'राजभाषा भारती' अंक 129 में चिंतन के अन्तर्गत प्रकाशित लेख 'राजभाषा हिंदी : विकास यात्रा के सोपान' बहुत अच्छा लगा । लेखक का कथन 'कि अंग्रेजी का मोह छोड़कर, मूल रूप से हिंदी में कार्य करना होगा, उसके महत्व एवं उपयोगिता को बढ़ाना होगा ।'', से सहमत हूँ । स्वेच्छा से ही हिंदी को अपनाकर उसका वर्चस्व बनाए रखना अनिवार्य है ।

–मनोहर विष्णु धरुफले
173, साकेत नगर, इन्दौर, (म.प्र.) 452018

'राजभाषा भारती' अंक 129वें अंक को पढ़ा इसे आद्योपान्त पढ़ा । इसमें राजभाषा सम्बन्धी गतिविधियों के सम्पन्न होने की सूचना से ज्ञात होता है कि राजभाषा के लिए केंद्रीय कार्यालयों में गम्भीरता पूर्वक कार्य किया जा रहा है, वहीं आधुनिक प्रौद्योगिकी के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाए जा रहे हैं । 100 पृष्ठों की इस पत्रिका में 59 पृष्ठों को विभिन्न जानकारियों से सजाया गया है जबकि चिन्तन के धरातल पर श्री डी. के. पाण्डेय का आलेख-'विकास यात्रा के सोपान' हिंदी की उन विशेषताओं पर प्रकाश डालता है, जिनका विश्लेषण आज बहुत जरूरी है । विद्वान डॉ. शशि कुमार सिंह ने अपने आलेख में राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के लिए चुनौतियों पर प्रकाश डाला है। डॉ. पी. आर. वासुदेवन का साहित्य और समाज के बारे में, वहीं श्री अरुण होता का साहित्यिक अनुवाद के बारे में आलेख ज्ञान पूर्ण व महत्वपूर्ण लगे ।

-गिरेन्द्र सिंह भदौरिया 'प्राण'
'वृत्तायन' 957-एफ़, स्कीम नं. 51,
इन्दौर (म.प्र.) पिन-452006

'राजभाषा भारती' के अंक 130 पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं लेख ज्ञानवर्धक एवं पठनीय है । उत्कृष्ट रचनाओं एवं राजभाषा संबंधी गतिविधियां की सूचनाओं के सफल संकलन और संपादन के लिए पूरे संपादक मंडल को हमारी हार्दिक बधाई ।

-एम. आर. वासुदेव,
विमानपत्तन निदेशक मंगलूर हवाई अड्डा

पत्रिका का मुख पृष्ठ सुंदर एवं आकर्षक है । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं स्तरीय एवं पठनीय एवं रोचक है । 'राजभाषा हिंदी-अनुवाद एवं तकनीकी समावेश की सार्थकता' तथा 'कामकाजी हिंदी की सरलता एवं हिंदी शब्दावली' लेख उपयोगी, सारगर्भित एवं प्रभावी है । विविध विषयों पर अत्कृष्ट रचनाएं प्रस्तुत करने हेतु संपादक मंडल बधाई का पात्र है ।

आशा है राजभाषा भारती देश-विदेश में अपनी महक बिखेरती रहेगी ।

–एस. के. शर्मा,
हिंदी अधिकारी,
कृते महाप्रबंधक, आयुध निर्माण भंडारा-441906

त्रैमासिक पत्रिका 'राजभाषा भारती' का 130वें अंक पत्रिका में सभी लेख के द्वारा लेखकों की सृजन कला को बखूबी दर्शाया गया है । पत्रिका में 'चिंतन' स्तम्भ के अंतर्गत 'राजभाषा हिंदी-अनुवाद एवं तकनीकी समावेश की सार्थकता', 'अनुवाद की समस्याएं : हिंदी तथा दक्षिण भारतीय भाषाओं के संदर्भ में एवं साहित्यिकी स्तम्भ में 'हिंदी साहित्य में नारी का परिवर्तित स्वरूप' वाकई में विचारणीय विषय हैं । 'मलयालम में रामकाव्य' के द्वारा पाठकों को मलयालम के रामकथात्मक काव्यों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से परिचित होने का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ । इसके अलावा 'स्वास्थ्य', 'पर्यावरण', 'विज्ञान' एवं 'संस्कृति' स्तम्भों के लेख भी ज्ञानवर्धक हैं ।

–राजेश कुमार, ले. कर्नल
कार्यवाहक जीएसओं-1 (शिक्षा एवं सदस्य सचिव, नराकास)
कृते महानिदेशक असम राइफल्स शिलांग-793010

'राजभाषा भारती' का जुलाई-सितम्बर, 2010 का 130वां अंक मिला, संपादकीय से लेकर सभी लेख भारतीय जनमानस को प्रेरित करने वाले हैं । किसी भी व्यक्ति के लिए सबसे महत्वपूर्ण है- मां, मातृभूमि और मातृभाषा। यही जीवन का स्तम्भ हैं । पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक और प्रभावशाली हैं, विचारगर्भित हैं । सरकारी स्तर से इसके प्रयोग को बढ़ाने के लिए सदैव प्रयासरत रहना है। आपके कुशल संपादन एवं अमूल्य प्रकाशन के लिए बधाई और ढेरों सारी शुभकामना ।

–अवधेश कुमार, कनीय प्रबंधक (सर्वे.),
मेघाहातुबुरु लौह अयस्क खदान,
सेल/आर.एम.डी., पो.-मेघाहातुबुरु,
जिला-पश्चिमी सिंहभूम, झारखंड-833223

'राजभाषा भारती' का जुलाई-सितंबर, 2010 का अंक प्राप्त हुआ जिसके लिए हार्दिक धन्यवाद ।

राजभाषा भारती के द्वारा साहित्यिक के सभी अंगों की सांगोपांग जानकारी पत्रिका में देकर सोने में सुहागे का कार्य किया है । संपादकीय द्वारा हमें आरम्भ में ही सभी रचनाओं की संक्षिप्त में जानकारी मिल जाती है । पत्रिका की सभी रचनाएं उपादेय व ज्ञानवर्द्धक हैं । इनमें भी श्री पाण्डेय जी का लेख 'राजभाषा हिंदी- अनुवाद एवं तकनीकी समावेश की सार्थकता' पर उन्होंने विस्तार से प्रकाश डाला है तथा लेख के अन्त में उन्होंने दोहे देकर लेख को रोचक भी बनाया है । उसी प्रकार 'कामकाजी हिंदी की सरलता व हिंदी शब्दावली' शीर्षक लेख द्वारा लेखक डॉ. एम. एल. गुप्ता ने भी विषय पर काफी विस्तार से प्रकाश डाला है जिससे पाठकों की विषयगत जानकारी में श्रीवृद्धि हुई है। उक्त दोनों लेखों के लेखकगण राजभाषा विभाग के माध्यम से हिंदी को अपनी मंजिल पर पहुंचाने का प्रयास करें तो उनका यह प्रयास सार्थक सिद्ध होगा ।

–गजानन्द गुप्त,
मंत्री
19-3-946, शमशीर गंज-हैदराबाद-500053

आपके कुशल संपादन में प्रकाशित 'राजभाषा भारती' का 130वां अंक प्राप्त हुआ। बहुत-बहुत धन्यवाद। राजभाषा कार्यान्वयन के लिए आपके द्वारा उठाए गए कदम प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री विशेषकर डॉ. रजनी रॉथाना द्वारा रचित 'हिंदी साहित्य में नारी का परिवर्तित स्वरूप' एवं डॉ. वनजा द्वारा लिखित मलयालम के 'राम काव्य' शीर्षक लेख अत्यंत रोचक हैं।

—सूर्यभान गौतम,
उप-महाप्रबंधक (राजभाषा)
कृते क्षेत्रीय कार्यपालक निदेशक, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण,
क्षेत्रीय मुख्यालय दक्षिणी क्षेत्र : चेन्नई

विभाग की त्रैमासिक पत्रिका 'राजभाषा' अंक 130 (जुलाई-सितम्बर, 2010) की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। 'राजभाषा भारती' की सामग्री आकर्षक और पठनीय है। विविध विषयों के साथ ज्ञानवर्द्धक लेखन की प्रस्तुतीकरण में आपने सफल प्रयास किया है वह प्रशंसनीय है।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

—टी. एल. हेमलता,
सहायक सचिव ग्रेड-1 (राजभाषा)
कोच्चिन पोर्ट ट्रस्ट, विल्लिंग्डन एलन्ड, कोच्चिन-682009

त्रैमासिक पत्रिका 'राजभाषा भारती' के अंक 130 (जुलाई-सितमबर, 2010) की मानार्थ प्रति की एक प्रति प्राप्त हुई। राजभाषा हिंदी को राष्ट्रीय एकता एवं आत्मीयता की भाषा के स्तर पर ले जाने के लिए, यह पत्रिका जो कार्य कर रही है वह सराहनीय है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं हिंदी के प्रचार-प्रसार में पूर्णतया सहायक हैं। सम्पादक मण्डल का क़ार्य प्रशंसनीय है।

सादर।

—नागेश आर. अय्यर, समन्वय निदेशक
सी. एस. आई. आर. मद्रास कॉम्पलेक्स, (वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद्)
सी. एस. आई. आर. कैंपस, तरमणी, चैन्ने-600113

'राजभाषा भारती' के अंक 130 की प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद।

डॉ. एस. डी. तिवारी के लेख 'प्रयोजनमूलक हिंदी की उपादेयता' के बारे में जो जानकारी दी है वह बहुत जानवर्धक है। श्री एम. अनंत पद्मनाथ भट्ट ने अपने लेख में यह लिखा है कि विदेश में एक विश्व अजूबे की स्वागत शिला पर 'ओम नमो भगवते' मंत्र हिंदी में लिखा गया है। यह हम भारतीयों के लिए गर्व की बात व विषय है।

श्री मनोहर धरफले ने अपने लेख में हर धर्म के बारे में बहुत परिचय देते हुए भाषा साहित्य एवं संस्कृति के विषयों से संबंधित जानकारी दी है। अन्य सभी लेख, रचनाएं जैसे कि स्वास्थ्य समस्याएं और परंपरागत चिकित्सा, कैसे हुई धरती पर जीवों की उत्पत्ति इत्यादि रचनाएं राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की माला में सहायक बनेगी।

पत्रिका के विकास की कामना करते हुए आशा करता हूँ कि भविष्य में भी पत्रिका की प्रतियाँ हमें मिलती रहेंगी।

—एम. एन. जोशी,
उप-निदेशक (राजभाषा)
परमाणु ऊर्जा विभाग, परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय,
ए. एम. डी. काम्पलेक्स, बेगमपेट, हैदराबाद-500016

MGIPRRND—381 HA/12—6,000

दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों का क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह एवं विचार मंथन में पुरस्कार देते हुए श्री ए. एन. पी. सिन्हा, सचिव, भारत सरकार तथा अन्य अधिकारीगण ।

दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों का क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह एवं विचार मंथन में विभाग द्वारा लगाई गई पत्र-पत्रिका प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए श्री ए. एन. पी. सिन्हा, सचिव, भारत सरकार तथा श्री डी. के. पाण्डेय, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग ।

पं.सं. 3246/77
आई एस एम एन 0970-9398

अगर आज हिंदी भाषा मान ली गई तो इसलिए नहीं कि वह किसी प्रांत विशेष की भाषा है, बल्कि इसलिए कि वह अपनी सरलता, व्यापकता तथा क्षमता के कारण सारे देश की भाषा है।

—नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

भारत सरकार, राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय), लोकनायक भवन, नई दिल्ली-110003 के लिए शान्ति कुमार स्याल, सहायक संपादक द्वारा प्रकाशित तथा प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, रिंग रोड, मायापुरी, नई दिल्ली-110064 द्वारा मुद्रित।